मुक्ति मार्ग
डॉ. स्वतंत्र जैन

वीर

अखिल भारीय दिगम्बर जैन परिषद का मुखपत्र, नई दिल्ली

दिसम्बर 2006

(समीक्षा)

मुक्तियाँ

आप इस ब्रह्माण्ड जैसे विशाल और शक्तिशाली हो सकते हैं, लेकिन कैसे ? यह संसार दुःख का सागर है, फिर आपको सदाकाल रहने वाले सुख का अमृत कुछ मिले तो कैसे ? आप स्वयं सिद्ध बुद्ध हो, लेकिन कैसे ? आप स्वयं परमात्मा हो सकते हो, लेकिन कैसे ? सभी प्राणी, सभी मनुष्य समान हैं, क्योंकि सभी परमात्मा हैं, लेकिन कैसे ? इस संसार में सुख का साम्राज्य स्थापित हो सकता है, लेकिन कैसे ? ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के सद्प्रयास से सराबोर, शाश्वत सुख को दर्शाने वाली आध्यात्मिक कृति 'मुक्तियाँ' चिन्तन, मनन और अध्ययन की दृष्टि से एक प्रभावी कृति है जो मुक्ति को आत्मसात कर भगवान बनने की दृष्टि से विचारोत्तेजक एवं पठनीय कृति है।

लेखक ने जिनागम रत्नाकर के मंथन से अमृतरस से भरपूर एक सौ एक रत्नों को उदहारण देकर तत्व समझाने की अभिनव पद्धति से तत्वप्रेमियों को जिस कौशल से परोसा है, उसके लिए यह निश्चित ही एक विचारोत्तेजक, पठनीय और उपयोगी पुस्तक बन पड़ी है।

सन्मति सन्देश
आध्यात्मिक सदाचार एवं सत्य तथ्य प्रकाशक मासिक पत्रिका, दिल्ली
जुलाई 2002

(समीक्षा)

मुक्तियाँ

सुना है कि समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे, उनमें एक अमृत और विष भी था । किन्तु जिनागम रत्नाकर के मंथन करने से 101 रत्न निकाले गये हैं। वे सभी मात्र अमृतरस से भरपूर हैं।

आत्मार्थी को सत्पथ प्रदर्शक मुक्ति के साधक ये बोल अनुभव की मथानी से मंथन किये गये हैं । उदाहरण देकर तत्व समझाने की अभूतपूर्व पद्धति है इसमें ।

तत्वप्रेमी को अपूर्व शांति रस की प्राप्ति होगी ।

मुक्ति मार्ग

विवरणिका

1 खुद के दिव्य प्रकाश में अनंत काल तक सुखी रहें
2 भ्रम की काल्पनिक विकारी मनोदशा को त्यागें
3 "मैं एक विशुद्ध चैतन्य स्वरूपी परमेश्वर हूँ"
4 परमानन्द के ज्ञाता होकर त्रिलोकपति बने
5 आपका यह आत्मदेव तो परमानंद का भी नाथ है
6 अज्ञानी ही संसार से भयभीत होता रहता है
7 कर्मों के आने से बंधन नहीं होते हैं
8 पहाड़े रटना बंद करें
9 झूठी मान्यताओं को छोड़ें
10 अंतहीन जाजल्यमान प्रकाश को देखें
11 चैतन्य-सूरज का अंतहीन प्रकाश
12 धर्म
13 आप स्थिर, अचल और कूटस्थ हो
14 त्रिलोक के जाजल्यमान चैतन्य नक्षत्र बनें
15 चैतन्य-लीला में डूब जाएँ
16 आपका चैतन्यदेव आपको सदाकाल प्राप्य ही है
17 स्वयं से स्वयं प्रकाशवान, निर्मल एवं निर्दोष
18 आप स्वभाव से ही निर्दोष हैं
19 यह संसार आप में ही समाया हुआ है
20 स्वयं-सिद्ध परमात्म-स्वरुप

21 परम शांति और मुक्ति का स्थान आप खुद ही हो
22 इस साकार जगत की अपनी खुद की कोई सत्ता नही है
23 □□□□□□ □□□□□□□□ प्राप्त कर अक्षय सुख पायें
24 आप तो आज ही अनंत त्रिलोक के स्वामी हो
25 आपकी सद-दृष्टि आपको चैतन्य-सिद्धि देती है
26 ग्यारह अंग के ज्ञान से ज्यादा उपकारी कौन
27 आखिर क्यों
28 खुद के अन्तरंग के विचरण का आनंद लें
29 सच्चा सत्संग करें
30 मेरा एकमात्र उद्देश्य
31 ज्ञान की प्राप्ति के लिए बड़ा बलवान कारण कौन?
32 सद्गुरु की महिमा अनंत है
33 सुख या दुःख के उदय को अबंध परिणाम से भोगें
34 सदाचार या दुराचार से हो रहे नुक्सान से डरें
35 दुष्कर भव-रोग की दवाई लें
36 अपूर्व अनुपम अवसर का लाभ लें
37 कम से कम इस जन्म में चैतन्य के संस्कार तो प्राप्त कर लें
38 खुद को देखने की कोशिश करें
39 इक साधे, सो सब सधे, सब साधे, सब जाये
40 मुक्ति मार्ग का पथिक बनें
41 चैतन्य की द्रष्टि में पर्याय होती ही नही है
42 चैतन्य के संस्कार पायें
43 त्रैकालिक शुद्ध चैतन्य तत्व में खो जाइए
44 अज्ञान अवस्था में स्वर्ग, तिर्यंच और नरक आदि सभी गतियाँ समान ही हैं

45 निगोद के अनंतानंत दुखों से डरें
46 आपका धर्म या स्वभाव चैतन्य आत्मा ही रहता है
47 चैतन्य के संस्कार से अक्षय सुख की प्राप्ति होगी
48 अपने ऊर्ध्वमुखी स्वभाव को पहचानें
49 प्रभु दर्शन की अद्भुत महिमा
50 महा-प्रतापी पुत्र-पुत्रियों को जन्म दें
51 यह संसार अरण्यवत या जंगल के समान शांत है
52 शरीर रुपी लकड़ा सिर्फ जलने के काम ही आएगा
53 द्रव्यद्रष्टि जिनेश्वर, पर्यायद्रष्टि विनेश्वर
54 अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल
55 विहरमान बीस तीर्थंकरों की अद्भुत विशेषतायें
56 अणुव्रत
57 पञ्च परमेष्ठी स्वरुप का साकार रूप है तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी
57 निज कल्याण के लिए कम से कम विचार तो करें
58 भव-रोग का इलाज ज्ञानी डॉक्टर से करवायें
59 संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय को दूर करके आध्यात्म को समझें
60 खुद को भव्य-परमात्मा मानकर अपना आत्मोद्धार करें
61 आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करें
62 चैतन्यदेव के स्वरुप को जानें
63 हमारे चैतन्यदेव में सर्वांग सुख ही सुख है
64 सुख के असीम सागर में रमण करें
65 णमोकार महा-मन्त्र का जयकारा लगायें
66 अन्तरिक्ष की अनंतानंत निगोदिया जीव राशि में जाने से डरे
67 तेल तो पानी के ऊपर ही ऊपर तैरता रहता है

68 विकराल काल या मृत्यु रुपी सिंह झपट्टे मारकर दौड़ता आ रहा है

69 त्रैकालिक ध्रुव स्वभाव को मुख्य करें

70 हेय-उपादेय

71 अत्यन्त सस्ती और सरल निज चैतन्य-वस्तु को प्राप्त करें

मुक्ति मार्ग

1 खुद के दिव्य प्रकाश में अनंत काल तक सुखी रहें

1. इस संसार रुपी किसी भी अज्ञान का अस्तित्व नही होता है.
2. वह तो आपके निज चैतन्य ज्ञान का अभाव मात्र ही है.
3. जब तक ज्ञान नही है, तब तक ही यह अज्ञान फलता-फूलता रहेगा.
4. लेकिन जैसे ही चैतन्य सूर्य उदित होता है, वैसे ही अज्ञान के अँधेरे का नाश हो जाता है.

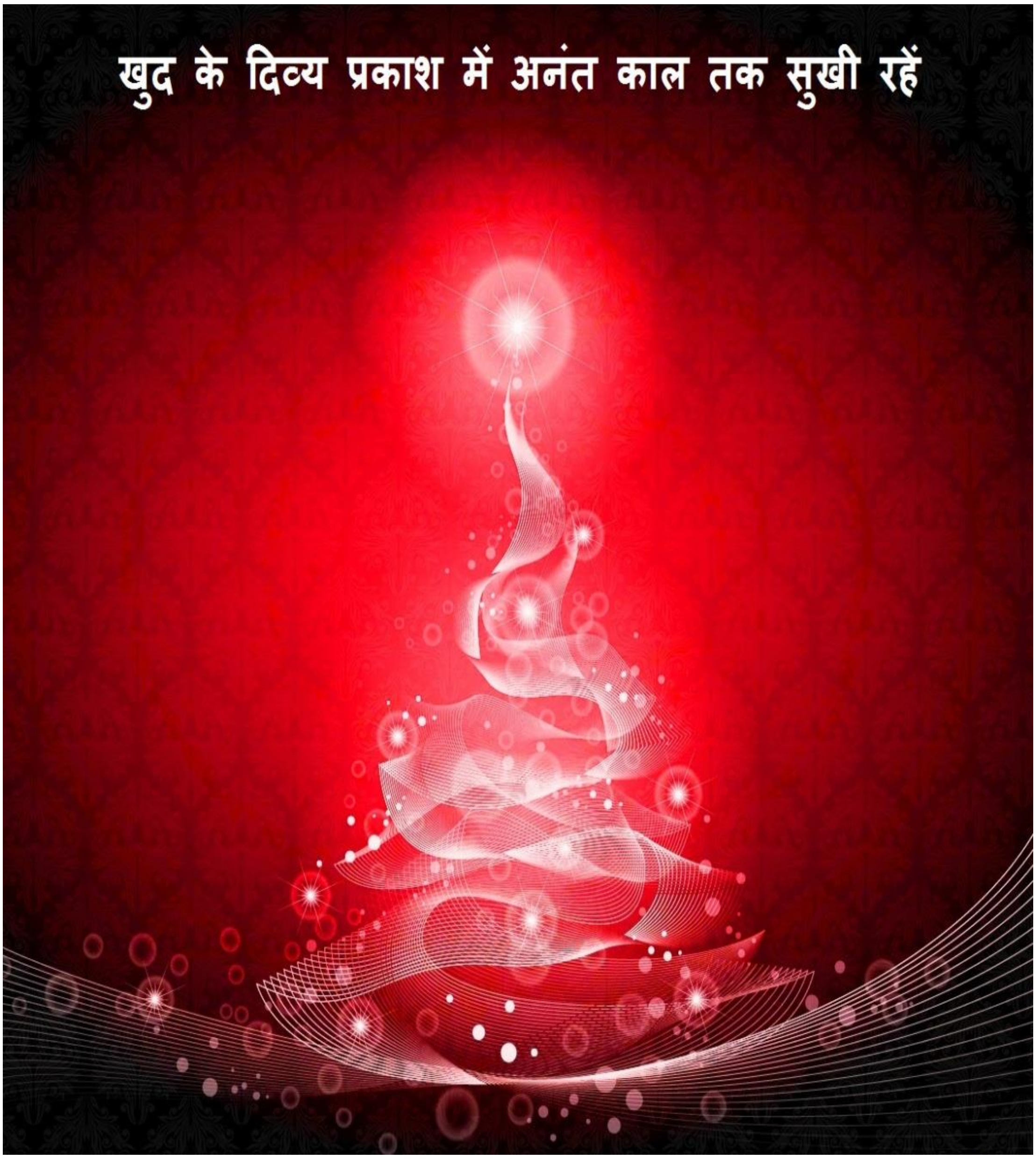

5. अतः खुद के सच्चे आत्मज्ञान के लिए आप भी यह निश्चयपूर्वक यह मान लें कि आप ही विशुद्ध चैतन्य स्वरूप भगवान आत्मा हो.
6. तब यह अज्ञानरुपी अंधकार चाहे कितना ही घना क्यों न हो, फिर भी वह एक क्षण में विलीन हो जायेगा.
7. क्या आप अब खुद के दिव्य प्रकाश में अनंत काल तक सुखी रहना चाहेंगे?

2 भ्रम की काल्पनिक विकारी मनोदशा को त्यागें

किसी भी स्वर्ण धातु से विभिन्न आभूषण बनते हैं
बाद में उन्हें गलाकर फिर से कई तरह के अन्य आभूषण बनाये जाते हैं,
लेकिन इन नये आभूषणों में भी उनका मूल तत्व स्वर्ण तो जैसा का तैसा ही रहता है.
जो बनते व बिगड़ते हैं, वे अनित्य हैं, पर्याय हैं और शाश्वत नहीं हैं.
शाश्वत तथा सदाकाल रहने वाला तो एक स्वर्ण के समान चैतन्य आत्मतत्व ही होता है.
आध्यात्म में इसी अनित्य या पर्याय को भ्रम कहा गया है.

यह आज जैसा आपको दिखाई दे रहा है, कल वैसा नहीं रहेगा.
इसलिए इस भ्रमणा का सहारा लेना ही भ्रान्ति है, मूर्खतापूर्ण है.

अतः अपनी इस भ्रम की काल्पनिक विकारी मनोदशा को त्याग कर अब निज चैतन्य अवस्था को धारण कर त्रिलोक में अपनी पताका फहरायें..

3 "मैं एक विशुद्ध चैतन्य स्वरूपी परमेश्वर हूँ"

हे चैतन्य प्रभाकर, मैं कर्त्ता हूँ; मैं कर्त्ता हूँ,
ऐसे अहंकार रूपी विशाल काले सर्प से आज तक आपने खुद को ही दंशित किया हुआ है.
अतः अब आप "मैं कर्त्ता नहीं हूँ";

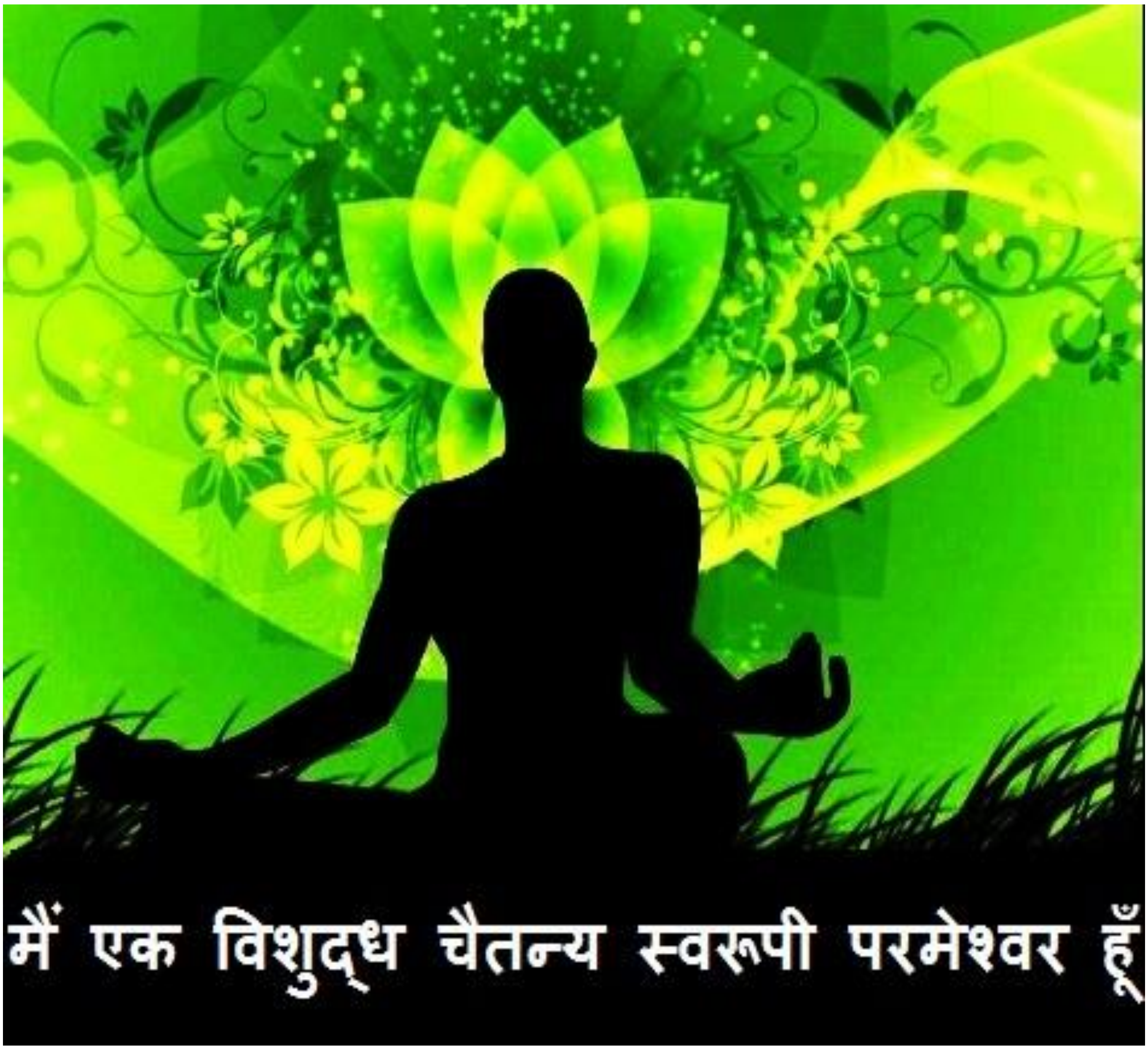

ऐसे चैतन्य चमत्कार रूपी अमृत को पी कर अब आप अपने आप में समां जाओ.
तब आप “मैं एक विशुद्ध चैतन्य स्वरूपी परमेश्वर हूँ”,
ऐसी निश्चय रुपी अग्नि से इस संसार के गहन अज्ञान को जलाकर शोक रहित होकर सुखी हो जाओगे.
हे आत्म देव, इस ज्ञान प्राप्ति के बाद ही आप अनंत सुखी हो सकते हो.
क्या आप अब इस अनंत सुख के सहज मार्ग पर चलना चाहोगे?

4 परमानन्द के ज्ञाता होकर त्रिलोकपति बने

किसी मंद बुद्धि वाले व्यक्ति को जिस तरह भ्रम से रस्सी में कल्पित सर्प भासता है,
वैसे ही यह संसार भी आपको भ्रम से काल-सर्प के समान डसने वाला दिखाई देता है,
किन्तु यह रस्सी जैसा कल्पित ही है,
तथा विकारी मनोद्रष्टि से ही आपको यह सर्प के समान मारने वाला दिखाई दे रहा है.
अतः यह संसार कभी भी सर्पवत न ही था और न ही है.
इसलिए आपको इससे डरने की आवश्यकता नही है,

किन्तु आप इसमें सर्प की कल्पना करते जा रहे हो, पसीना-पसीना हो रहे हो,

सर्पवत कल्पना से आपके ह्रदय की धड़कन बढ़ रही है,

अहो, यह भ्रान्ति ही है कि आपने रस्सी को सर्प समझ लिया है.

आपकी यह भ्रान्ति अज्ञान के कारण पैदा हुई है.

अज्ञान के अंधकार के कारण आप इसके वास्तविक स्वरूप को नही देख पा रहे हो.

इसलिए अनादिकाल से यह भ्रान्ति हो रही है.

लेकिन जब तक आप अपने ज्ञान-चक्षुओं से इसका वास्तविक स्वरूप नही देख लोगे,

तब तक यह भ्रान्ति नहीं मिटेगी.

जिस भव्य महापुरुष को यह विश्व रस्सी में सर्प के समान कल्पित नहीं भासता है,
वही परम प्रतापी व्यक्ति परमानन्द का ज्ञाता होकर त्रिलोकपति होता है.
क्या आप भी अब परमानन्द के ज्ञाता होकर त्रिलोकपति बनना चाहेंगे?

5 आपका यह आत्मदेव तो परमानंद का भी नाथ है

1. यह संसार सत् है,
2. या असत् है;
3. अच्छा है
4. या बुरा है,
5. रस्सी है
6. या सर्प है;
7. किन्तु अब आपको इससे कोई भी प्रयोजन नहीं होना चाहिए,

8. क्योकि अब आप जानते हो कि
9. आप संसार नहीं हो
10. आप संसारी भी नहीं हो.
11. अतः इससे भयभीत होने का अब आपको कोई कारण नहीं है.
12. अब आप जानते हो कि आप तो चैतन्यदेव हो.
13. आपका यह आत्मदेव तो परमानंद का भी नाथ है.
14. फिर आप में दुःख, भय आदि कैसे व्याप्त हो सकते हैं?
15. इसलिए अब आप भी निर्भय होकर अपने चैतन्य स्वरुप को लक्ष्य में आज ही ले लो.

16. क्या आप अब ऐसा करना चाहेंगे?

6 अज्ञानी ही संसार से भयभीत होता रहता है

1) हे चैतन्यदेव आप स्वयं ज्ञान हो,

2) आप स्वयं साक्षात् सुखामृत हो.

3) आप स्वयं सर्वज्ञ हो,

4) आप स्वयं परमेश्वर हो.

5) अहो, खुद के चैतन्य सम्राट को गृहण करते ही आपके समस्त संशय तथा भ्रम दूर हो जाते हैं.

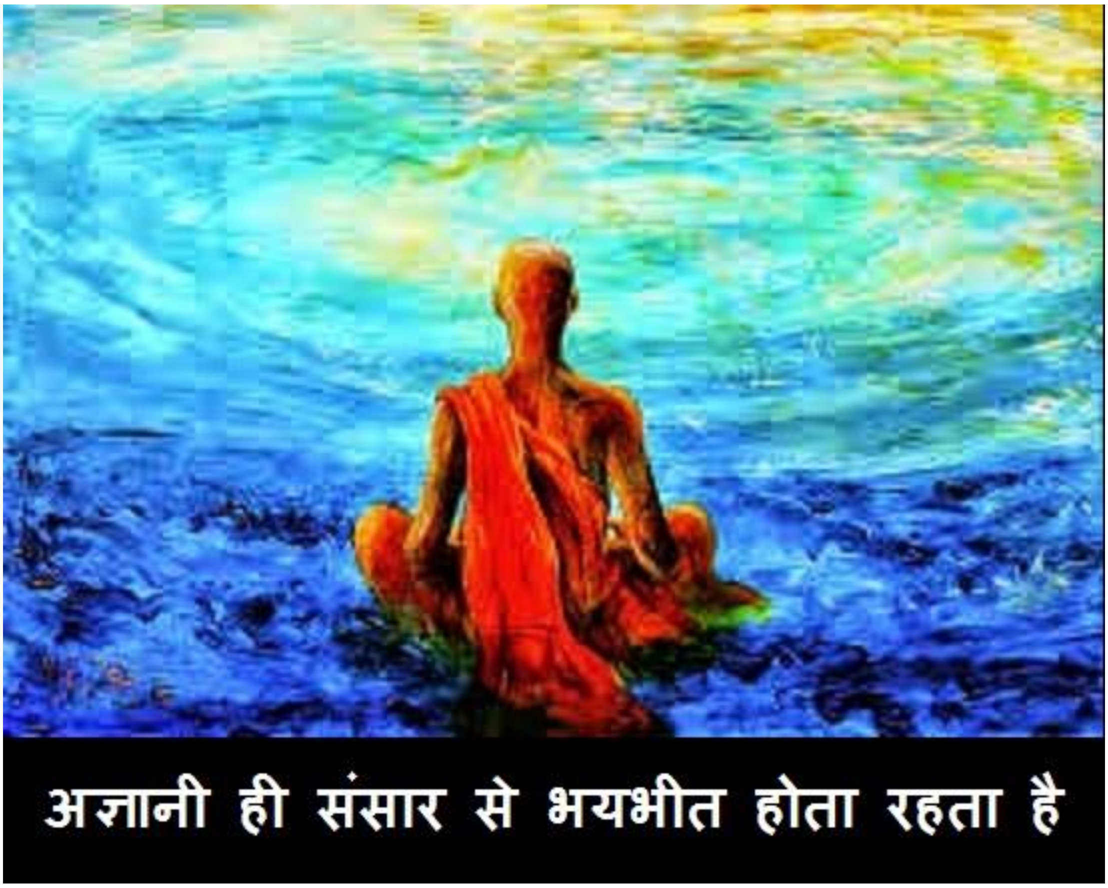

6) फिर अभी जो संसार के प्रति आपकी द्रष्टि है, वह बदल जायेगी.

7) चैतन्य-सम्राट का ज्ञान होने से ही प्रत्येक मनुष्य सदाकाल के लिए निर्भय हो जाता है.

8) लेकिन अज्ञानी तो संसार से भयभीत ही होता रहता है.

9) इसलिए इस देशना को स्वीकार कर अब आप भी अपनी इस अज्ञान दशा को त्यागकर त्रिलोक में हमेशा सुखपूर्वक विचरण करें.

7 कर्मो के आने से बंधन नहीं होते हैं

1. यह किंवदन्ती सत्य ही है कि जैसी मति होती है, वैसी ही गति होती है.
2. इसलिए किसी भी तरह के कर्मो के आने से बंधन नहीं होते हैं,
3. लेकिन उसके प्रति जो आपकी आसक्ति हो रही होती है,
4. उनके प्रति जो आपका राग हो रहा होता है,
5. वही बंधन का कारण होता है.

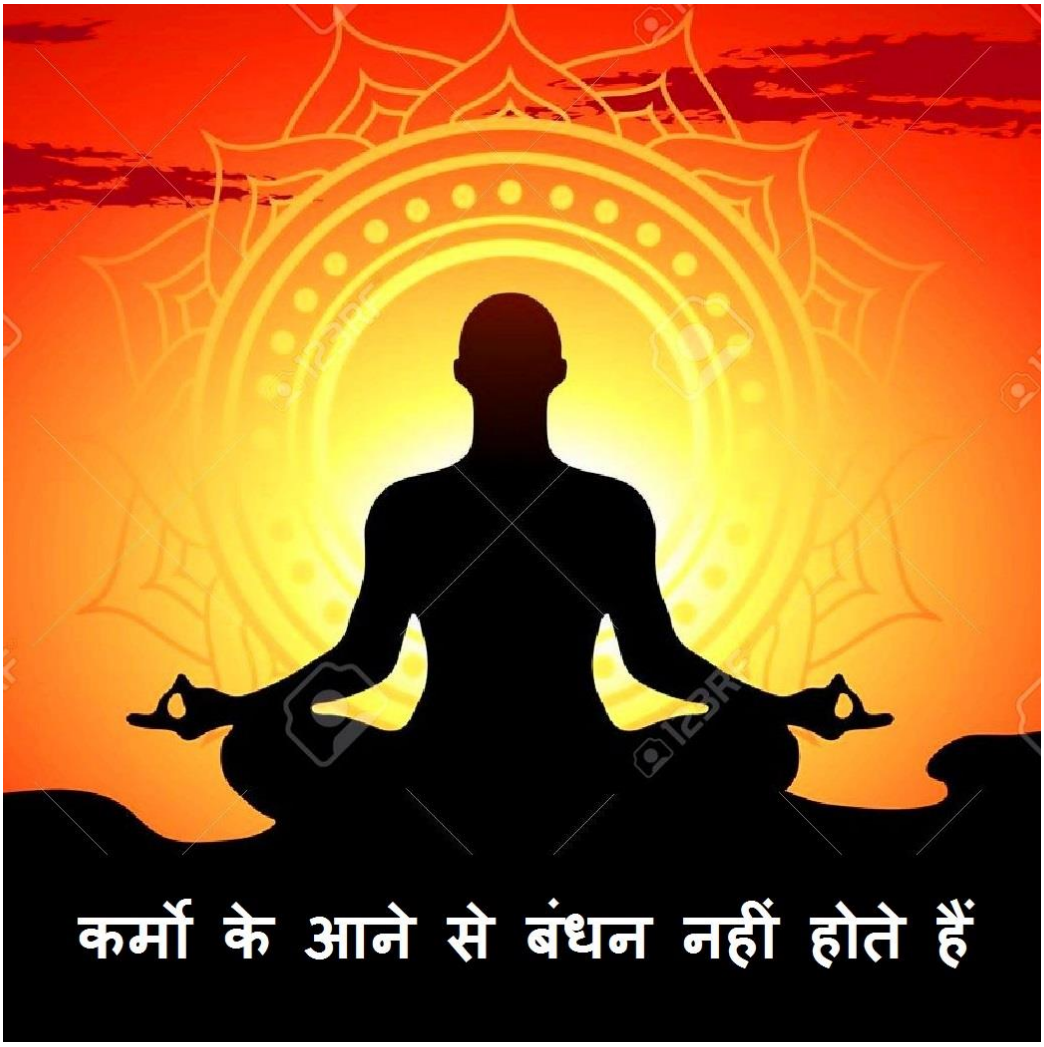

6. अतः किसी भी व्यक्ति को कभी भी किसी भी तरह के पाप और पुण्य का बंध कर्मों के उदय से नहीं होते हैं.

7. किन्तु उन कर्मों के प्रति हो रही आपकी आसक्ति या राग-द्वेष और मोह से ही बंध होते हैं.

8. क्या अब आप इस आसक्ति को छोड़ना चाहेंगे?

8 पहाड़े रटना बंद करें

{बहुत-बहुत गंभीर}

1. मैं चैतन्य परमात्मा हूँ,

2. मैं भगवान आत्मा हूँ,
3. मैं मुक्त ही हूँ
4. मैं सहजानंदी हूँ,
5. मैं ज्ञानानंदी हूँ,
6. मैं शुद्ध स्वरूपी हूँ,
7. मैं अविनाशी हूँ,

ऐसा जो मानता है,
वह जीवात्मा अभी भी बंधा हुआ ही है.
ऊपर लिखी सभी मान्यताओं को मानने वाला जीवात्मा भी उसी तरह का ही है, जैसे कि जो जीवात्मा खुद को हर समय बध्द या बंधा हुआ मानता है,
अतः इन सभी जीवात्माओं का अनादिकाल से आजतक सुलटना नहीं हुआ है और आगे भी होने की संभावना नहीं है.
कारण यह है कि ऊपर लिखे सभी जीवात्मा बध्द ही हैं और रहेंगे.
क्योकि वे सभी सिर्फ पहाड़े ही रट रहे हैं.

कोई भी पहाड़े रटने वाला व्यक्ति एक से दो हफ्ते में ही पहाड़े याद कर लेता है.

फिर उसको किसी भी पहाड़े को रटने की जरुरत नहीं पड़ती है.

लेकिन आप तो अभी भी कई सालों से पहाड़े रट रहे हो.

अतः आध्यात्मिक शास्त्रों में बताये अनुसार अब खुद को सिर्फ भव-समुद्र में डूब रहा महसूस करो,

फिर उस डूबते व्यक्ति की भयानक पीड़ा को हर पल महसूस करो.

तथा ऊपर लिखे पहाड़ों को रटना छोड़कर सिर्फ बचाओ-बचाओ चिल्लाना शुरू कर दो.

तभी अखण्ड जीवनदायनी नौका पर विराजमान सद्गुरु आपकी करुण पुकार सुनकर आपको बचा लेंगे,
तथा फिर आपको भी सम्राट बना कर इस त्रिलोक का अविनाशी साम्राज्य देकर आपको अनन्त-सुखी बना देंगे.

9 झूठी मान्यताओं को छोड़ें

इस संसार में सब लोग खुद को न जानकर अपनी झूठी मान्यताओं से दुःखी हो रहे हैं,
उनके साथ आप भी दुःखी हो रहे हो,
अतः इन ऋण ली हुई, उधार ली हुई मान्यताओं को छोड़कर आज स्वयं जागकर देख लो,
तो आपका यह सारा भ्रम मिट जायेगा कि
मैं कौन हूँ,
मेरी आत्मा कैसी हैं,
मेरी आत्मा कहाँ हैं
तथा मैं उसे कैसे प्राप्त करूँ?

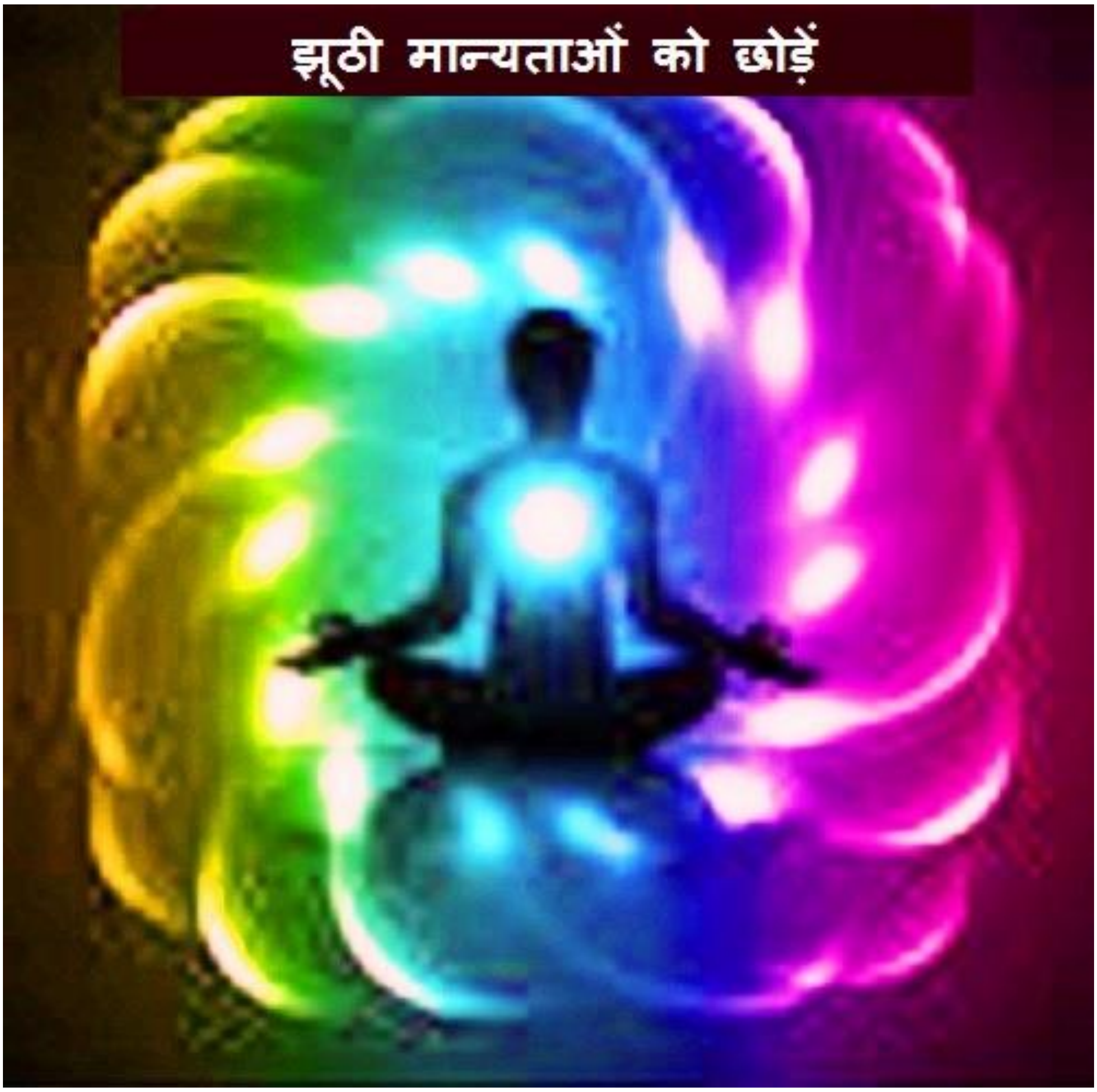

हे चैतन्य प्रभो, आपको केवल जागना मात्र है,
मोह से भरी नींद को खोलना मात्र है,
अपने ज्ञान–दीपक को जलाना मात्र है.
इसके अलावा और कुछ भी आपको करना ही नहीं है.
अहो, क्या अद्भुत बात है,
यह बात तो प्रत्येक जीव को सीधे चैतन्य परमात्मा का स्पर्श कराती है.
इसके अलावा और कोई मार्ग नहीं होता है,
और कोई विधि होती ही नहीं है,

न कोई कर्म,

न कोई ज्ञान,

न कोई भक्ति;

बस अब अपनी झूठी मान्यताओं को छोडकर

सीधे अपने साक्षी-भाव, ज्ञाता-द्रष्टा भाव में जम जाओ, समा जाओ.

यही चैतन्य परमात्मा को पाने का एक मात्र मार्ग है.

10 अंतहीन जाजल्यमान प्रकाश को देखें

1. हे आत्मदेव, चैतन्य के साक्षी-भाव में सीधे जाने से आपके समस्त भ्रम मिट जायेंगे.
2. फिर आपको यह देह, मन, बुद्धि, अहंकार, संसार आदि
3. सभी भ्रमवत, काल्पनिक ज्ञात होने लगते हैं,

4. जैसे कि वे सब कभी थे ही नहीं.

5. अहो, फिर आपके चारो ओर रह जाता है,

6. शुद्ध, शुद्ध और शुद्ध चैतन्य द्रव्य का अंतहीन जाजल्यमान प्रकाश.

7. क्या आप इस अंतहीन जाजल्यमान प्रकाश को देखने को तैयार हैं?

11 चैतन्य-सूरज का अंतहीन प्रकाश

1. जिस प्रकार किसी व्यक्ति को भम्र सी किसी मकान में अँधेरे में भूत दिखाई देता है,

2. किन्तु दीपक जलाने पर वह दिखाई नहीं देता है और गायब हो जाता है;

3. क्योंकि वहाँ भूत था ही नहीं.

4. भूत का जो भ्रम था,

5. वह दीपक जलाने से दूर हो जाता है.

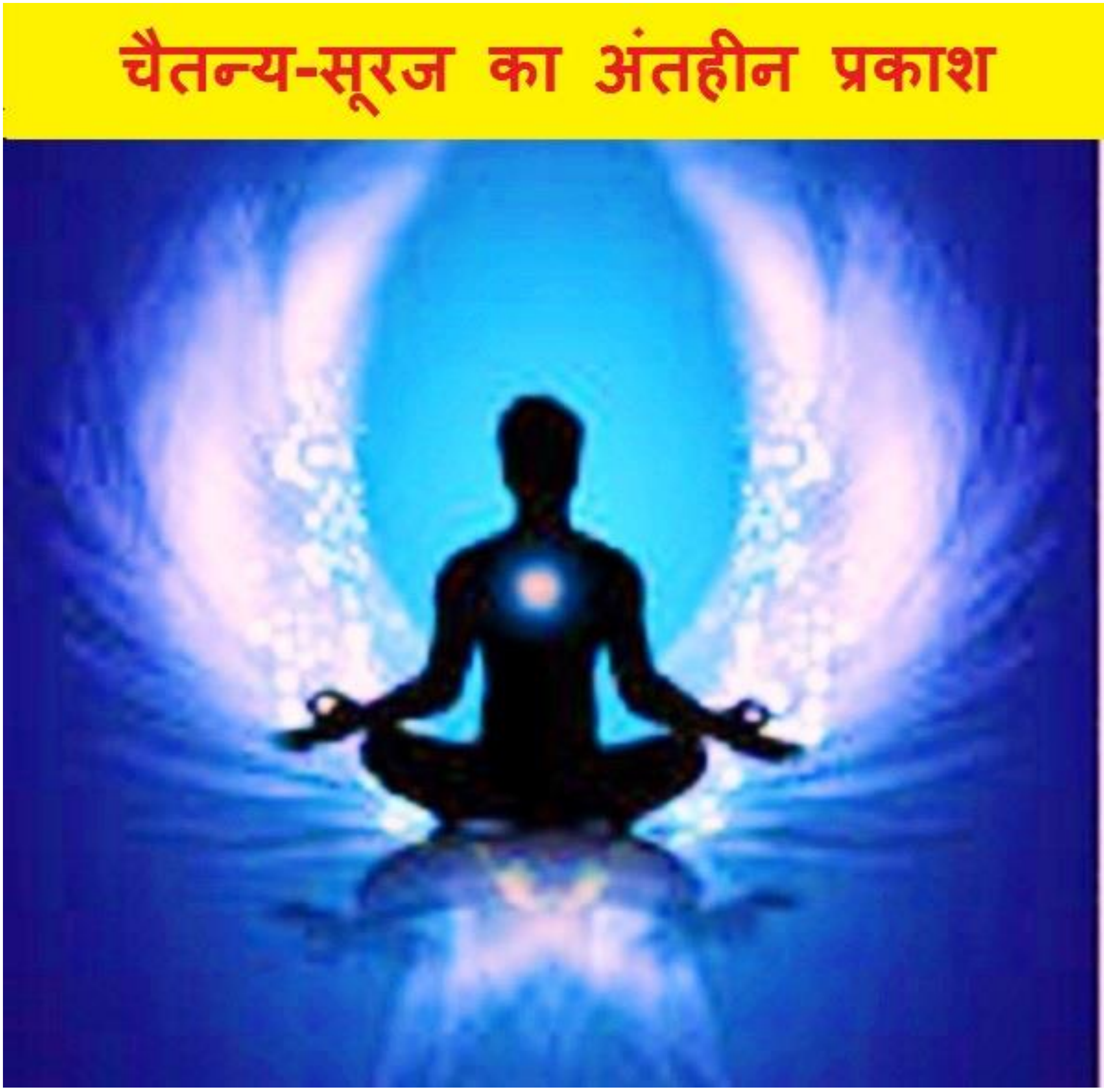

6. अगर भूत होता तो वह दीपक जलाने पर भी गायब नहीं होता.

7. इसी तरह आपको अपने आपके अस्तित्व का, अहंकार का भ्रम होता है,
8. लेकिन सच्चे चैतन्य के ज्ञान-दीपक के प्रकाश में
9. आपका खुद के प्रति जो ख्याल या भ्रम रहता था,
10. वह सब मिट जाता है और आपकी सभी मिथ्या धारणाएँ टूट जाती हैं.
11. आपको अपने आप को पाने के लिए किसी विधि का उपयोग नहीं करना है,
12. बल्कि आपको सीधे आपकी स्वयं की उस परम चैतन्य शक्ति का बोध करना है,
13. जिससे आपका अहंकार अपने आप गिर जाता है और
14. समस्त भ्रम मिट जाते हैं.
15. फिर चैतन्य-सूरज का सदा के लिए उदय हो जाता है,
16. जिसके अंतहीन प्रकाश में अब आप अनंतकाल तक सुखपूर्वक रहेंगे.

12 धर्म

1. आपका खुद का आत्म-धर्म कोई आपके जन्म की परम्परा नहीं है,
2. जिसे आपको दायित्व समझ कर सिर्फ निभाना है.
3. किसी भी तरह की परम्पराएँ या रीति-रिवाज भी धर्म नहीं कहलाते हैं.
4. धर्म तो शाश्वत होता है, सनातन होता है, सदाकाल रहने वाला होता है.

5. किसी भी व्यक्ति ने धर्म नहीं बनाया होता है.

6. धर्म नया या पुराना भी नहीं होता है.

7. वास्तव में तो आपका सनातन चैतन्य-स्वरुप आत्म-प्रभो का अस्तित्व ही आपका धर्म होता है.

8. धर्म वह होता है, जो आपके वर्तमान अस्थिर और अल्पकालीन सांसारिक ज्ञान को संपूर्ण क्रांति के द्वारा उलटफेर करके,

9. आपको पूर्णरूपेण बदल कर, आपको आपके चैतन्य की अनंत शक्ति से, आपकी खुद की परमात्म-शक्ति से आपको जोड़ देता है.

हे चैतन्य प्रभो, आप जानते ही हैं कि □□□□□ तो □□ □□□□□ □□ □□□ हुआ □□; □□□□□□ □□□□□ होता □□ □□□□□ □□□□□□

वस्तु स्वभावो धम्मो, यानी कि वस्तु का स्वभाव ही उसका धर्म होता है.

□□□ □□ □□ □□, □□□ □□□□□ □□□□□□□ चैतन्य परमात्मा □□ □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ होता □□ और हम इसी को आत्म-तत्वपना कहते हैं।

अष्टावक्र गीता के प्रकरण 1, सूत्र 3, 6 और 7 में भी समझाया गया है -

1. तू मनुष्य शरीर मात्र नहीं है,
2. बल्कि चैतन्य आत्मा है,
3. चैतन्य सम्राट है
4. शरीर, मन और बुध्दि आदि तेरे इस संसार के भृत्य हैं,
5. जो तेरे आदेशानुसार सांसारिक कार्य करते हैं.
6. धर्म और अधर्म, सुख और दुःख मन के हैं; इसलिए वे तेरे लिए नहीं हैं.

7. तू मात्र चैतन्य आत्मा ही है
8. जो न कर्ता है,
9. न भोक्ता है.
10. तू तो सर्वथा मुक्त ही है.
11. यह मुक्ति तेरा स्वभाव ही है.
12. यह आत्मा ही परमात्मा है
13. एवं यही द्रष्टा-ज्ञाता है.
14. इससे भिन्न कोई द्रष्टा नहीं है.
15. यह आत्मा मुक्त ही है,
16. किसी भी बंधन में बंधा ही नहीं है.
17. अज्ञानी ही आत्मा से भिन्न किसी एक ईश्वर को द्रष्टा, कर्म-फल प्रदाता एवं कर्ता मानते हैं;
18. ज्ञानीजन ऐसा नहीं मानते हैं.

अहो, क्या अद्भुत और अलौकिक बात है.

13 आप स्थिर, अचल और कूटस्थ हो

1. अहो, यह आत्मा स्थिर है, अचल है.
2. वह चलता नहीं है,
3. बल्कि यह संसार चलायमान है.
4. आत्मा केंद्र है, धुरी है और यह संसार उसकी परिधि है.
5. गणित के छात्र जानते हैं कि परिधि ही चलती है,
6. केंद्र या धुरी नहीं चलती है.
7. धुरी अपने स्थान पर सदैव स्थिर रहती है.
8. परिधि पर रहने वाले कण या द्रव्य की गति सर्वाधिक होगी.
9. ज्यों-ज्यों केंद्र के समीप जाते हैं, गति कम होती जाती है.

10. केंद्र में गति शून्य हो जाती है.

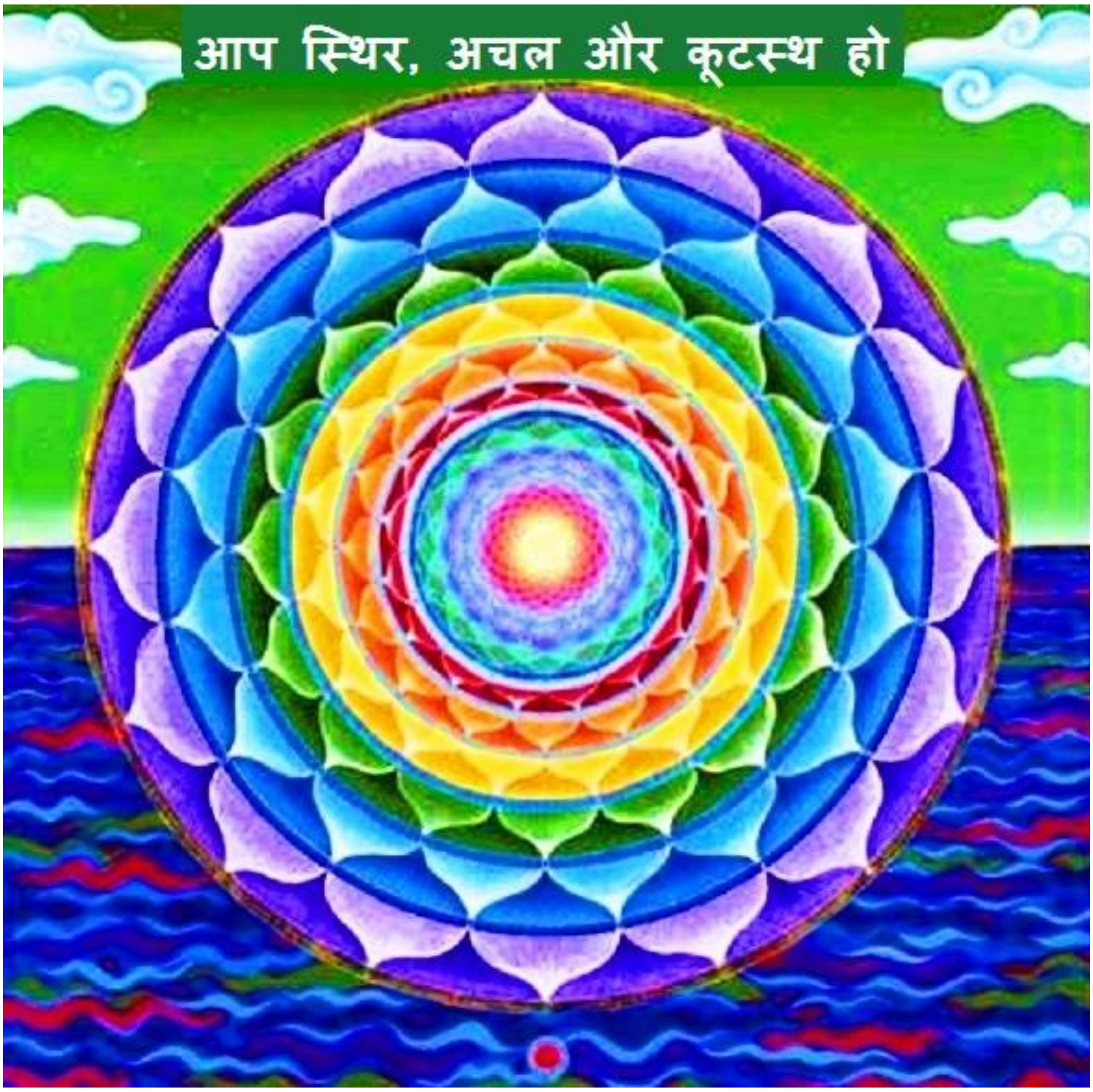

11. अपने आप को मात्र शरीर मानने वाले अधार्मिक व्यक्ति की संसार में गति या प्रवृति सर्वाधिक होगी,

12. वह ज्यों-ज्यों अपने आत्मा के समीप आता जाता जाता है, उसकी सांसारिक गति या प्रवृति कम होती जाती है.

13. जितना राग-द्वेष, ईष्या, लोभ, मोह, अहंकार अधिक होगा, उतनी ही संसार में गति या प्रवृति तीर्व हो जाती है.

14. चैतन्य के केंद्र की ओर यात्रा करने वाला मनुष्य इन सब विकारों को छोड़ता जाता है, जिससे उसकी संसार में गति या प्रवृति कम होती जाती है.

15. अतः अगर आप चैतन्य प्रभो बनना चाहते हैं, तो आपके लिए यह समझना आवश्यक हो जाता है कि

16. आत्मा स्थिर ही रहता है और स्थिर या अचल या कूटस्थ रहना ही चैतन्य प्रभो का त्रिकाली शाश्वत गुण रहता है.

14 त्रिलोक के जाजल्यमान चैतन्य नक्षत्र बनें

1. इस संसार में हर गतिशील पदार्थ का एक केंद्र होता है,
2. जिससे उसको गति मिलती है.
3. पहिया धुरी से बंधकर ही चलता है,
4. सौर मण्डल का केंद्र सूर्य होता है,
5. सूर्य का केंद्र निहारिका होती है.
6. निहारिका का केंद्र मंदाकिनी या गेलेक्सी होती है.
7. इस तरह इस स्रष्टि में बिना केन्द्र के कोई वस्तु नहीं चलती है.

8. अब अगर आप भी अपने इस संसार को चलाना चाहते हो, तो आप भी इसी तरह से इसके मोह के केंद्र बने रहो,

9. लेकिन अगर आपका इस संसार से मोह भंग हो गया हो,

10. तो फिर आप भी इस संसार के प्रति अपने हो रहे अपने विकार को त्याग कर खुद के चैतन्य शिखर पर आरुड़ हो जाओ.

11. तब शीघ्र ही आपका यह संसार मोह-रस न मिलने के कारण स्वयमेव ही स्वतः नष्ट हो जाएगा.

12. तब आप भी इस त्रिलोक के जाजल्यमान नक्षत्र बन जायेंगे.

15 चैतन्य-लीला में डूब जाएँ

1. हे आत्मदेव, आपकी सबसे बड़ी भ्रान्ति यही है कि आप अपने आप को केवल शरीर मात्र मानते हो.

2. अपने निज चिदानंद परमात्मा को नही मानते हो.

3. इस अपने चैतन्य सम्राट से एकत्वभाव की विस्मृति से ही आप खुद के देहाभिमान के पाश में बंध गये हो.

4. आपको अनादिकाल से लेकर आजतक किसी ने बांधा नही है.

5. लेकिन फिर भी आप स्वयं के भ्रम से ही बंधे हो.

6. आपके आजतक हुए अनंत जन्मों में आप इस शरीर के अभिमान के कारण ही बंधन में जकड़े हुए हो.
7. क्योंकि ये बंधन वास्तविक नहीं हैं.
8. यदि ये बंधन सच या वास्तविक होते,
9. तो इन्हें तोड़ने के लिए किसी क्रिया अथवा साधन की आवश्कता जरुर होती,
10. इस तरह से शरीर और आत्मा के भिन्न होने की भ्रान्ति भी आपको अनेक जन्मों में रही है.
11. यह देह मेरी है या यह देह आत्मा से भिन्न है,
12. इस तरह की धारणा भी सिर्फ भ्रम मात्र ही है, कल्पनामात्र ही है.
13. अतः अब इस भ्रम को मै शरीर नहीं, बल्कि चैतन्य मात्र ही हूँ,
14. इस बंधन से मुक्त होने का एक मात्र उपाय सच्चा आत्म-बोध या सच्चा आत्म-ज्ञान है,
15. इस भेद-ज्ञान की तलवार से काटकर अब आप भी मुक्त हो जाओ, सुखी हो जाओ.
16. बस अब आप इस अनुपम देशना को प्राप्त कर अपने निज-आत्मा से एकत्व और पर से विभक्तपने को स्वीकार कर निज चैतन्य-लीला में डूब जाएँ.

16 आपका चैतन्यदेव आपको सदाकाल प्राप्य ही है

1. आप सदाकाल असंग हो,
2. आप हमेशा क्रिया-रहित हो,
3. आप निरंजन (निर्दोष) हो
4. आप स्वयं शाश्वत ध्रुव चैतन्यदेव हो

5. लेकिन आपका बंधन यही है कि आप अपनी स्वयं की प्राप्ति के लिए कोशिश कर रहे हो.
6. यह कोशिश ही आपका बंधन है.
7. आप शरीर, मन आदि नहीं हो.
8. आप सिर्फ और सिर्फ चैतन्य आत्मा ही हो.
9. चैतन्य प्रभो को आपको प्राप्त करना नहीं है.
10. वह तो सदाकाल आपको उपलब्ध ही है,
11. वह तो सदाकाल प्राप्य ही है.

12. उसे आपको कहीं से भी खोजना नही है.

13. वह तो हमेशा आपके अन्तरंग में विद्यमान ही है.

14. फिर आप अपनी निज-आत्मा को पाने की कोशिश या प्रयत्न किसलिये कर रहे हो?

15. किसी भी तरह के प्रयत्न से तो सिर्फ और सिर्फ सांसारिक वस्तुएँ ही प्राप्त होती है.

16. लेकिन आपका यह आत्मदेव तो आपको सर्वत्र सदाकाल सुलभ और विद्यमान ही है,

17. लेकिन फिर भी आपको उसकी अप्राप्ति का केवल भ्रम है.

18. यह जो आपका भम्र है, वही आपका बंधन है.

19. अतः इस भम्र को छोड़ कर अब तो चैतन्यदेव बन त्रिलोक के शिखर पर विराजमान होकर अनंत-सुख के गगन में विचरण करें.

17 स्वयं से स्वयं प्रकाशवान, निर्मल एवं निर्दोष

1. हे प्रभो, इस संसार में आप जो पूजा-पाठ, जप-तप आदि का अनुष्ठान कर रहे हो,

2. कुछ पाने की चाह से कई तरह के प्रयत्न कर रहे हो.

3. लेकिन ये सभी कार्य या प्रयत्न ही आपका बंधन है.

4. अतः इन सब कार्यों को भले ही करें, लेकिन इनके प्रति आपको हो रहे ममत्व को अब आप छोड़ दें.

5. क्योंकि इस प्रयत्न के पीछे इन सब कार्यों में आपकी मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा जुडी हुई है.

6. लेकिन जब तक इच्छा रहती है, तब तक मोक्ष नहीं हो सकता है.

7. अतः यह इच्छा ही तो आपका बंधन होती है.

8. इच्छा चाहे संसार की हो, या मोक्ष की,

9. उसमे कोई अंतर नहीं होता है.

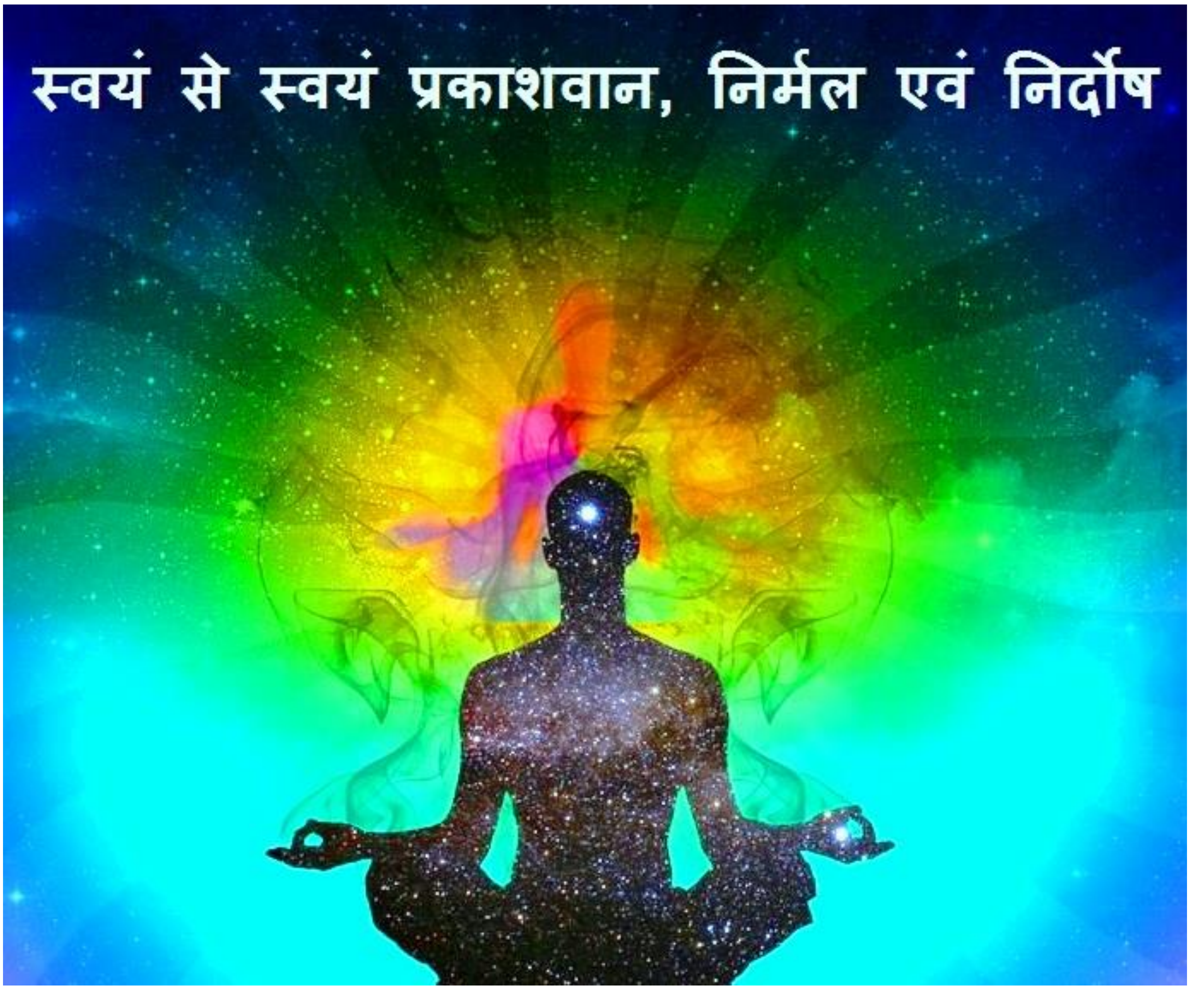

10. हे चैतन्यदेव, आप तो असंग क्रियारहित,

11. स्वयं से स्वयं प्रकाशवान, निर्मल एवं निर्दोष ही हो.

12. इस सच्चाई को आप सिर्फ एक क्षण के लिए भी अगर जान ले, तो आपका कल्याण निश्चित ही हो जाएगा.

18 आप स्वभाव से ही निर्दोष हैं

1. आप स्वभाव से ही चैतन्य हैं.

2. चैतन्यदेव तो निर्दोष ही रहता है,

3. अतः आप किसी भी तरह से विकारी नहीं हो सकते हो.

4. आपको दिख रहे सभी दोष, सभी पाप तो भूल से, अज्ञान से, शरीर से, मन ने किये हैं.

5. लेकिन आप तो मन एवं शरीर से भिन्न साक्षी या ज्ञाता-द्रष्टा आत्मदेव ही हो.

6. फिर आपके स्वभाव में दोष कैसे लग सकता है.

7. अतः आप स्वभाव से ही निर्दोष हो.

8. आत्मा कर्म करती ही नहीं है.

9. वह न पापात्मा है न पुण्यात्मा,

10. न साधु है, न गृहस्थ,

11. वह तो सिर्फ चैतन्य-आत्मा ही है.

12. जिन कर्मों को शरीर व मन ने किया है, वे जा चुके हैं यानी कि वह पर्याय नष्ट हो चुकी है.

13. द्रष्टा को कभी पाप नही लगता है, अतः आप मुक्त ही है.

14. हे प्रभो, बस इस बात को आज और अभी मानकर अपने अन्तरंग में खुद के निर्दोष स्वरुप को धारण कर लें.

19 यह संसार आप में ही समाया हुआ है

1. हे प्रभो, आप स्वयं ही चैतन्यदेव हैं.
2. आप स्वयं ही ब्रम्हा हैं.
3. यह संसार आप में ही व्याप्त है,
4. यह संसार आप से ही व्याप्त है.
5. यह संसार आप में ही पिरोया हुआ है.
6. यह संसार आप में ही समाया हुआ है.

7. यथार्थतः आप ही चैतन्य-स्वरूप त्रिलोकपति हैं.
8. अतः यह संसार आपकी ही अभिव्यक्ति मात्र है.
9. इसलिए अब कमजोर मन या क्षुद्र चित्त को प्राप्त मत होओ.
10. तभी आप जगदीश्वर चैतन्य-सम्राट बन सकोगे.

20 स्वयं-सिद्ध परमात्म-स्वरुप

1. शोक और मोह मन के धर्म होते हैं.
2. भूख और प्यास शरीर के धर्म रहते हैं,
3. मुझ चैतन्य सम्राट का कोई धर्म नहीं होता हैं
4. क्योकि मैं तो हमेशा विकार रहित ही हूँ.
5. मैं तो आत्म प्रभो होने से निरपेक्ष ही हूँ.

6. अतः मेरी आत्मा की कोई अपेक्षा नहीं होती है.
7. अपेक्षा मात्र शरीर और मन की ही रहती है.
8. हे चैतन्य प्रभाकर, आप भी केवल ज्ञाता-द्रष्टा हो,
9. लेकिन फिर भी आप अपने आपको विकारी समझते हो.
10. इसी कारण आप अपने को परमुखानुपेक्षी समझते हो.
11. लेकिन आप तो स्वयं-सिद्ध हो.
12. आप किसी पर निर्भर नही हो.
13. अब आप भी अपने स्वयं-सिद्ध परमात्म-स्वरुप को जानकर त्रिलोकपति बन जाओ.

21 परम शांति और मुक्ति का स्थान आप खुद ही हो

हे चैतन्यदेव, किसी भी तरह से और किसी भी अपेक्षा से अशांति आपका स्वभाव नहीं है.

किसी भी रूप में होवे, लेकिन अशांति तो कभी भी आपका स्वभाव न था, न है और न ही आगे कभी भी हो सकता है.

बस आपसे यह भूल हो रही है कि आपने आज तक कभी भी स्वयं को महत्व न देकर इस संसार को ही महत्व दिया है.

इसलिए आपको हर समय क्षोभ, बैचैनी, अशांति तथा दुःख दिख रहा है.
वर्ना परम शांति में सदाकाल लीन रहने वाले चैतन्य प्रभो में क्षोभ, बैचैनी, अशांति एवं दुःख कहाँ से हो सकता है?
क्योकि चैतन्य स्वरूप होने से परम शांति और मुक्ति का स्थान आप खुद ही ही हो.
इसलिए संसार के समस्त पदार्थों की निष्ठा को छोड़कर अब आगे से आप निज चैतन्य प्रभो में निष्ठा वाले बनो.

22 इस साकार जगत की अपनी खुद की कोई सत्ता नही है

1. इस संसार में आपको दिख रहे सभी साकार पदार्थों को मिथ्या जानकर अपने निज निराकार चैतन्य प्रभो को ही अब आप अपना स्वरूप मान लो.
2. क्योकि इस साकार जगत की अपनी खुद की कोई सत्ता नही है.
3. अभी दिख रहा यह संसार तो बस आपके उस चैतन्य, निराकार, कूटस्थ तत्व का ही काल्पनिक परिणमनशील रूप है.
4. परिवर्तन ही इस संसार का स्वभाव है,
5. अतः यह संसार किसी भी तरह से विश्वसनीय नहीं है.

6. लेकिन आपका निज परमात्मा, जो कि चैतन्य है, निराकारी है और निज में ही रहने वाला अपरिणामी तत्व है; अतः वह ही विश्वसनीय है.

7. अतः आपका खुद का चैतन्य स्वभाव ही आप भी निज में ही रहने वाले हो.

8. इस निज शाश्वत चैतन्य-तत्व के ज्ञान से ही आपकी इस संसार में पुनः उत्पति नहीं होगी.

9. क्या आप अब इस क्षणभंगुर संसार में पुनः अपनी क्षणिक उत्पत्ति चाहेंगे?

23 □□□□□ □□□□□□□ प्राप्त कर अक्षय सुख पायें

शि□□□ - □□ □□□□□□, □□□ □□□□ □□□□□□ शक्ति से □□□□□ शुद्ध चैतन्य □□□□□ □□ □□□□ □□ कोशिश □□ □□□ □□□, □□□ □□ वह प्राप्ति □□□□ □□ □□ □□□ □□□

अब यह बहुमूल्य मनुष्य जन्म भी व्यर्थ चला जा रहा है.

□□□□ □□□□ □□□ हो रही □□? □□□□□ मेरे ऊपर अत्यंत कृपा कर मुझे यह बात समझाइये।

□□□□□□ - □□ □□□□, आपका प्रश्न □□□□ उत्तम □□ □□□□□□ □□□□ आपको खुद इस प्रश्न □□ □□□□□□□ का □□□ □□?

□□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□ जब आपको □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□, तब आप □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ शक्ति □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप दिन-रात मेहनत करते हो तथा अपने घर और परिवार को भी भूल कर धन प्राप्ति के लिए सभी तरह के जतन और प्रयत्न करते रहते हो.

आप अपनी □□□□□ □□ प्राप्ति □□ □□□□ □□ इसी तरह से □□□□□ और प्रयत्नों को करने में □□□ जाते □□ और भक्ति □□□□, □□□□-□□□ □□□□, प्र□□□ □□□□□, □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ लग जाते □□□

इस तरह आप □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ तक व्यस्त □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ कर आत्मा को प्राप्त करने की कोशिश कर □□□ □□□

लेकिन हे प्रभो, आपका यह कृत्य □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ की प्राप्ति नहीं हो रही है।

□□□ तरह आप □□ कई सालों से □□ □□ □□□□□□ कर रहे हो, किन्तु फिर भी आपको □□□□□ □□□□□□ □□ प्राप्ति □□□□□ □□ □□□ □□, और अब आप पूंछ □□□ □□ □□ आपकी □□□ □□□□□ □□?

आप जानते ही हैं कि आपका चैतन्य प्रभो सदाकाल सुखदायक ही है.

क्या आपको अपने आत्मविस्मरण का खेद है?

आपको यह भी सोचना चाहिए कि आपका यह अथाह संसार अब समाप्त कैसे होगा?

आपके चित्त में ऐसी भावना आना भी आपके कल्याण की दिशा में पहला कदम होता है.

□□ ज्ञान प्रभाकर, □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ या □□□□ □□ आवश्यकता □□□□ □□, □□□ तर □ □□ □□□□□ □□ प्राप्ति □□ □□□□ □□ आपको □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ रखना □□□□□□□

□□□ □□□□□ □□□□□□□ या □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ प्राप्ति □□□□□ □□□

अगर आप अपना शाश्वत कल्याण करना चाहते हैं,

तो आपको हमेशा यह भावना भानी चाहिए कि

अनादिकाल से हो रहे आपके इस परिभ्रमण को अब समाप्त कैसे किया जाए?

इसके लिए अब आपको चाहिए कि आप अपने चैतन्य की पात्रता की प्राप्ति का अधिक से अधिक प्रयास करें.

इस तरह के सच्चे प्रयास से आपकी इच्छित चैतन्य वस्तु की प्राप्ति आपको अवश्य ही हो जायगी.

ऐसी सच्ची पात्रता के साथ अगर आप □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ लेते हो, तो आपको निश्चित □□ □□□□□ प्राप्त होगी ही.

हे प्रभो, आपका कर्तव्य □□ एक मात्र □□ □□ □□ □□ आपको अब □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□:□□□□□□□□ □□□ □□, □□□□□□□□□ □□, □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ निज-□□□□□ □□□ र □ □□□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□□□□□, □□□ आपको आपकी □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ और अवश्य ही □□□□□

अतः चैतन्य की □□□□□ □□□□□□□ प्राप्त कर अक्षय सुख पायें

ॐ शांति.

24 आप तो आज ही अनंत त्रिलोक के स्वामी हो

चैतन्य के सच्चे पिपासु जीव में इतना आत्म विश्वास आ जाता है कि वह अपने सभी सुकृत और दुष्कृत कर्मों को सलाह देता है;

वह अब उनको समझाता है कि

हे मेरे सभी सुकृत और दुष्कृत कर्म, अब तुम यह भी जान लो कि मुझे तुममे कोई भी रूचि नहीं है.

तुम अब मुझ से सावधान हो जाओ और मुझ से दूरी बना लो.
क्योकि अब इस तीन लोक में कोई भी मुझे लोक कल्याण और आत्म प्राप्ति की राह पर चलने से नहीं रोक सकता है.
लेकिन तुम यह बात भी अच्छी तरह से समझ लो कि अगर तुमने मेरे लोक कल्याण और आत्म प्राप्ति की राह के बीच में रुकावट पैदा करने की कोशिश की,
तो मैं तुरंत ही तुम सबको नष्ट कर त्रिलोकपति बन जाऊँगा.
वैसे मेरी रूचि त्रिलोकपति बनने में किंचित भी नहीं है.
क्योकि अगर ऐसे अनंत त्रिलोक भी हों, तो भी मैं तो आज ही उन सभी का स्वामी हूँ.

अतः अब आप भी खुद को अनंत त्रिलोक भी हों, तो उनका भी आज ही स्वामी मान लो.
ॐ शांति.

25 आपकी सद-दृष्टि आपको चैतन्य-सिद्धि देती है

हे चैतन्य प्रभो, अब आपको चाहिए कि आप अपनी दृष्टि को इतना स्वच्छ बनायें,
जिसमें आपके सूक्ष्म से सूक्ष्म दोष भी दिख सके.
तभी आप उनको अपने स्वभाव के विरुद्ध मानकर उन सभी को नष्ट करने का उपाय कर सकते हो.

हे चैतन्य देव, आपने पूर्व में हुए अनंत जन्मों में यह सच्ची सन्मति नहीं रखी और कर्म बन्ध करते रहे,

इसलिए आज आप अपने ही किये हुए कर्मों का फल भोग रहे हैं.

लेकिन जैसे ही आपके नाना प्रकार के मोह क्षीण हो जाते हैं,

तब तुरंत ही आपकी आत्मा की दृष्टि भी अपने चैतन्य के सुख में चली जाती है.

फिर आप उस अद्भुत अलौकिक सुख को प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगते हो.

आपकी यही सद-दृष्टि आपको शीघ्र ही चैतन्य-सिद्धि देती है.

26 ग्यारह अंग के ज्ञान से ज्यादा उपकारी कौन

क्या आप जानते हैं कि सत्पुरूष के प्रत्येक वाक्य में, प्रत्येक शब्द में अनन्त आगम या शास्त्र समाये हुए रहते हैं.

लेकिन ग्यारह अंग के ज्ञान में तो असंख्यात शास्त्र ही होते हैं.

इस बात से यह भी सिद्ध होता है कि ग्यारह अंग के ज्ञान से ज्यादा उपकारी तो प्रत्यक्ष सद्गुरु के एक-एक शब्द ही होते हैं.

क्योकि अनंत भव-भ्रमण के विकट समुद्र में डूब रहे जीव को बचाने में सद्गुरु ही सहायक रहते हैं.

इसलिए जिन ग्यारह अंग के असंख्य शास्त्रों को आपने अनंत बार जाना है और मस्तिष्क में भरा है,

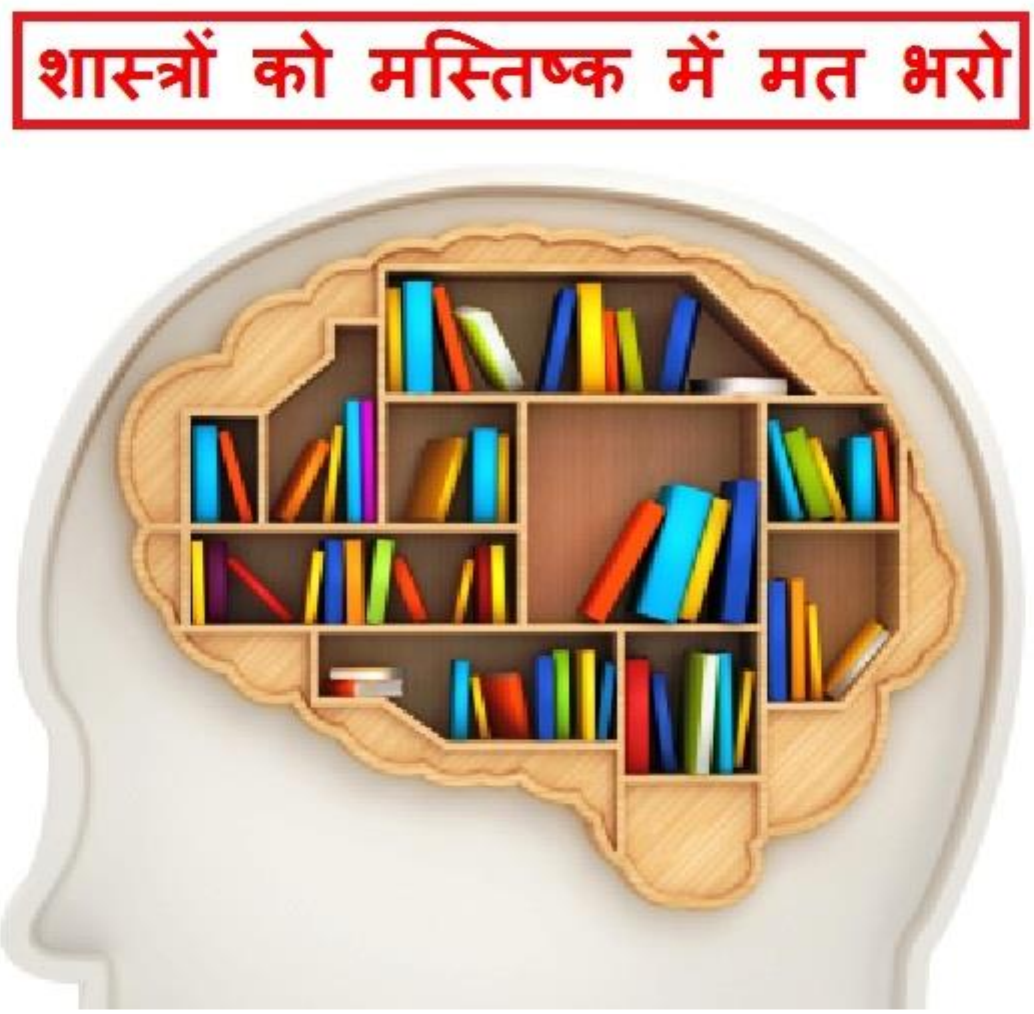

फिर भी आपका कल्याण नहीं हुआ है,
तो अब उन शास्त्रों पर से अपनी द्रष्टि को हटकर सच्चे सद्गुरु पर अपना ध्यान केन्द्रित करने से आपका कल्याण निश्चित ही होगा.
क्या आप ऐसा करना चाहेंगे?

27 आखिर क्यों

हे चैतन्य प्रभो, आपने अनादिकाल से आजतक बारम्बार भक्ति-पूजा, जप-तप, नियम-संयम किये,
फिर भी आपको खुद के चैतन्यदेव की प्राप्ति नहीं हुई.
अतः आपको अब इस जन्म में यह भी सोचना चाहिए कि

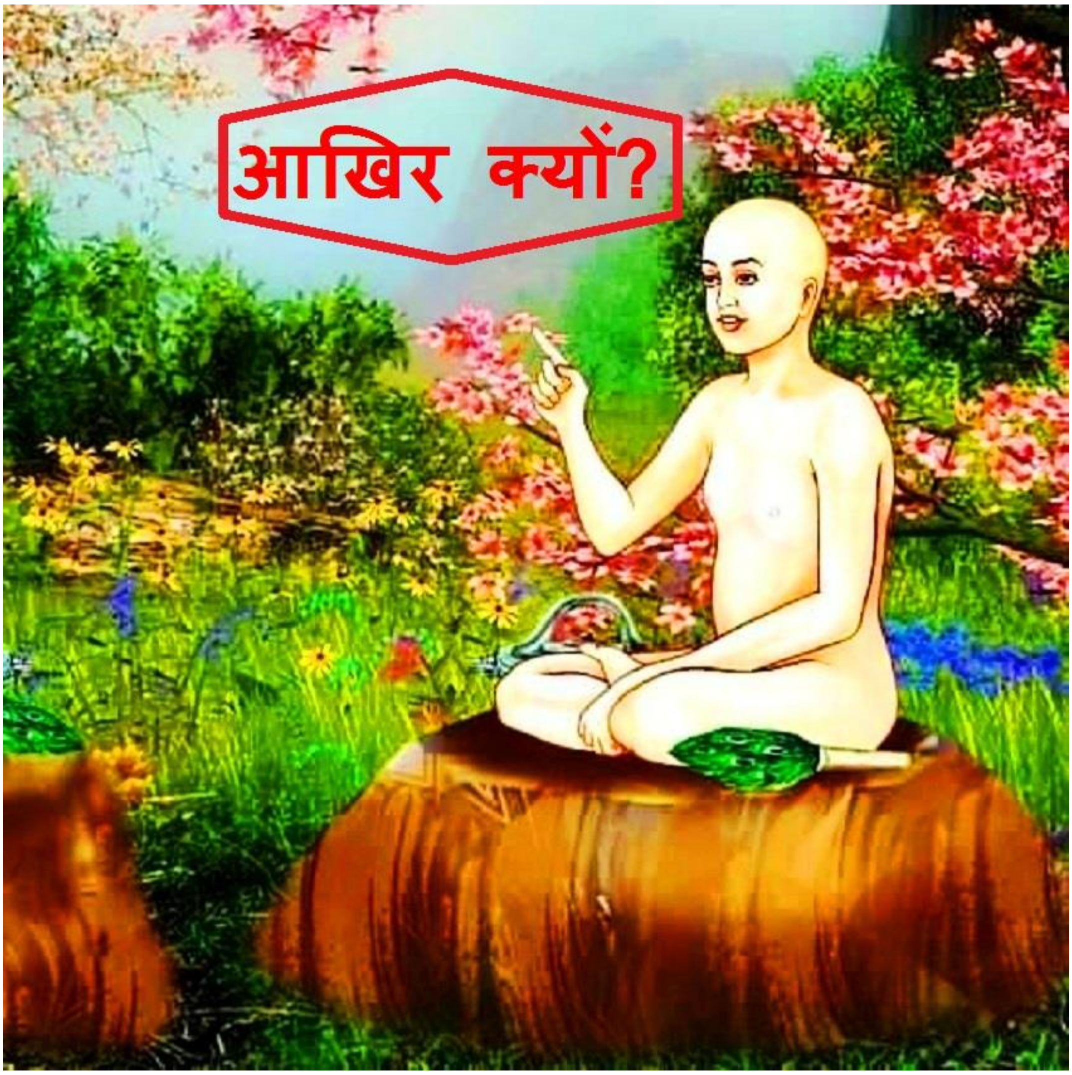

आजतक इतना सब कुछ करने पर भी आपको आपके खुद के चैतन्यदेव की प्राप्ति नहीं हुई तो आखिर क्यों?

अनन्त काल से आज तक आपको खुद के सम्बन्ध में जो भ्रान्ति रही है

हर बार आप खुद को जानने, समझने और पाने का अवसर गवांते रहे हो,

आखिर क्यों?

28 खुद के अन्तरंग के विचरण का आनंद लें

आपके इस चैतन्यदेव का अन्तरंग तो अदभूत और अवाच्य विचरण का स्थान होता है.

अतः आपके निज अन्तरंग में मति, मन या बुद्धि की गति नहीं हो सकती है

फिर वहां पर किसी के वचन की गति कहाँ से हो सकती है?

फिर भी किसी चित्त या मन या बुद्धि के बिना भी इस अन्तरंग के विचरण का आनंद तो अद्भुत, अलौकिक और अवर्णनीय ही होता है.

सोचो जरा वह आनंद कैसा होता होगा, जो मन और बुद्धि के बिना होता है?
क्या आप भी अब इस खुद के अन्तरंग के विचरण का आनंद लेना चाहेंगे?

29 सच्चा सत्संग करें

सच्चा सत्संग वह बड़े से बड़ा साधन है जो

1. इस संसार से छूटने के लिये ही किया जाता है,
2. अपने आप को पाने के लिए किया जाता है,
3. परम तत्व को पाने के लिए किया जाता है.
4. चैतन्य प्रभु को पाने के लिए किया जाता है,
5. भक्त से भगवान बनने और बनाने के लिए किया जाता है,

6. पामर से परमात्मा बनने और बनाने के लिए किया जाता है,
7. खुद से खुदा बनने और बनाने के लिए किया जाता है,

8. एक्स्ट्रा से ईश्वर बनने और बनाने के लिए किया जाता है,
9. सच्चा सत्संग तो निःशंक अनुभव के लिए किया जाता है.
10. सच्चा सत्संग तो लोक कल्याण के लिए किया जाता है.
11. सच्चे सत्संग में कोई बंधन नहीं होता है.
12. अतः सच्चा सत्संग तो सबको परमेश्वर बनाने का मार्ग है.
13. क्या अब आप इस सच्चे सत्संग को जानकर करना चाहेंगे?
14. ॐ शांति.

30 मेरा एकमात्र उद्देश्य

इस संसार की सभी प्रकार की क्रियाओं का एकमात्र उद्देश्य सबका कल्याण होना चाहिए.
सभी प्रकार के योग का का एकमात्र उद्देश्य सबका हित होना चाहिए.
आपके द्वारा किये जा रहे सभी जप का का एकमात्र उद्देश्य सबको सुख ही सुख दिलाना होना चाहिए.

आपके द्वारा किये जा रहे तप का भी एकमात्र उद्देश्य सबको मोक्ष के मार्ग को दिखाना होना चाहिए.

अतः अब इस बचे हुए जीवन काल में आपको भी ऐसा लक्ष रखना चाहिए कि

मेरे सभी कार्य तो अब सभी जीवों को संसार छुड़ाने के लिये ही हैं.

वे अब किसी को बंधन में बाँधने के लिए नहीं हैं.

मेरे जिस कार्य से भी किसी को बंधन होता हो,

वे सभी कार्य मुझे त्यागने योग्य ही हैं.

ॐ शांति.

31 ज्ञान की प्राप्ति के लिए बड़ा बलवान कारण कौन?

प्रत्येक जीव के लिए इस संसार के समस्त कार्यों को करते हुए भी संसार से निवृत होने का लक्ष सामने रखने का स्मरण रखना.
मै कर्ता, मैं मनुष्य, मैं सुखी, मैं दुखी आदि प्रकार से हो रहा आपका यह देहाभिमान जब गल जाता है,

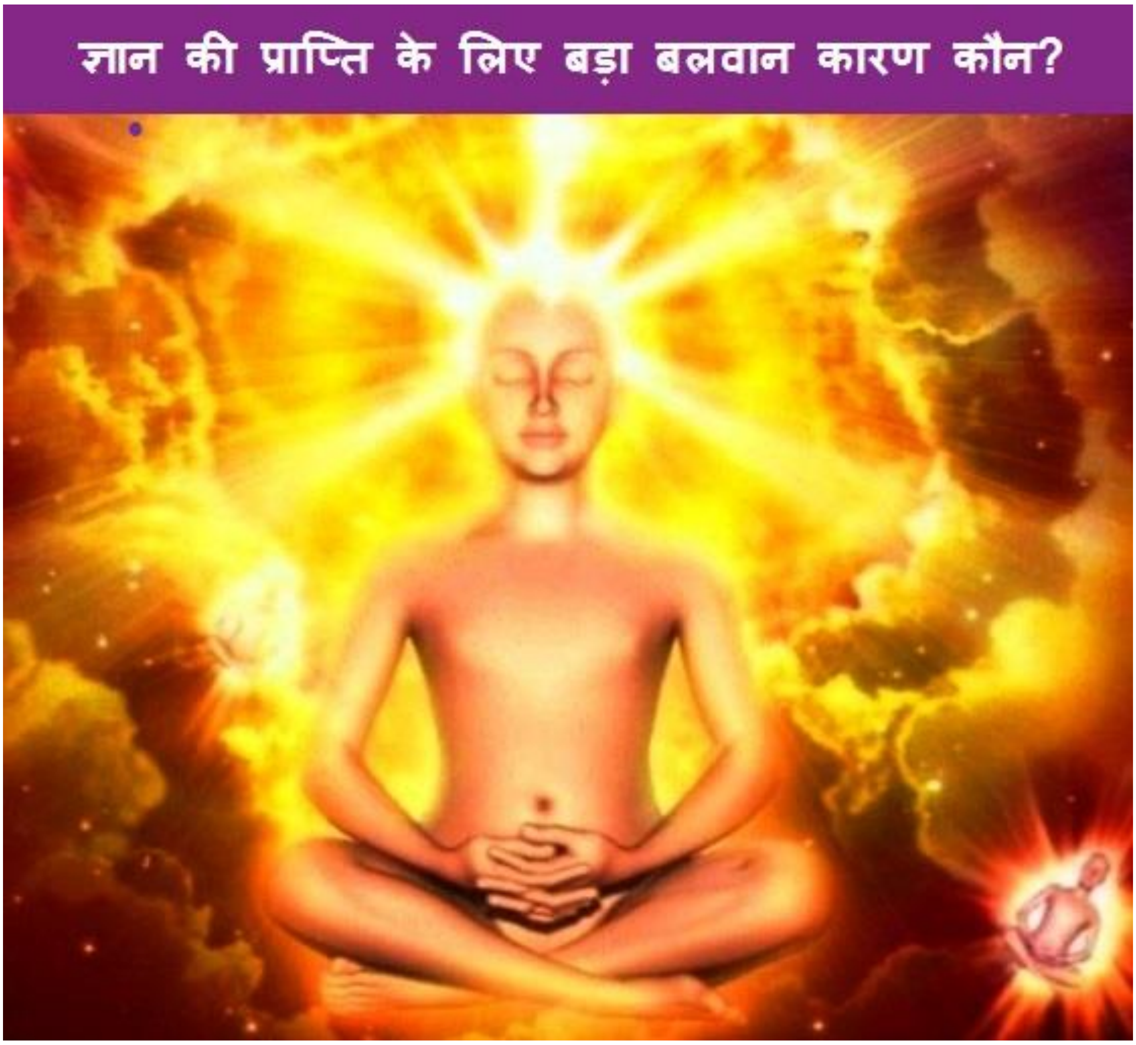

तभी आपको सर्वोत्तम पद रूप चैतन्य परमात्मा की सहज ही प्राप्ति हो जाती है.
फिर आपका मन इस संसार में कही भी भ्रमण करे, वहाँ भी आपकी समाधि ही कहलाती है.
लेकिन भय युक्त अज्ञान भूमिका में कोई भी जीव पद-पद पर बिना विचारे करोड़ों मील भी भटकता रहे,

लेकिन फिर भी उसे निज तत्व की लगन या योग्यता नहीं मिलती है. यह लगन या योग्यता ही खुद के ज्ञान की प्राप्ति के लिए बड़ा बलवान कारण होती है.
अतः आपको चाहिए कि अब आप निश्चिन्त होकर सुदृढ़ मन से आत्मार्थ का प्रयत्न करें.

32 सद्गुरु की महिमा अनंत है

सद्गुरु प्रत्येक सच्चे आत्म पिपासु को चैतन्य अमृत पिलाने का प्रयत्न करते हैं.
सद्गुरु किसी भी संसारी मोही व्यक्ति को आत्म पिपासु होने की जिज्ञासा उत्पन्न कराते हैं.

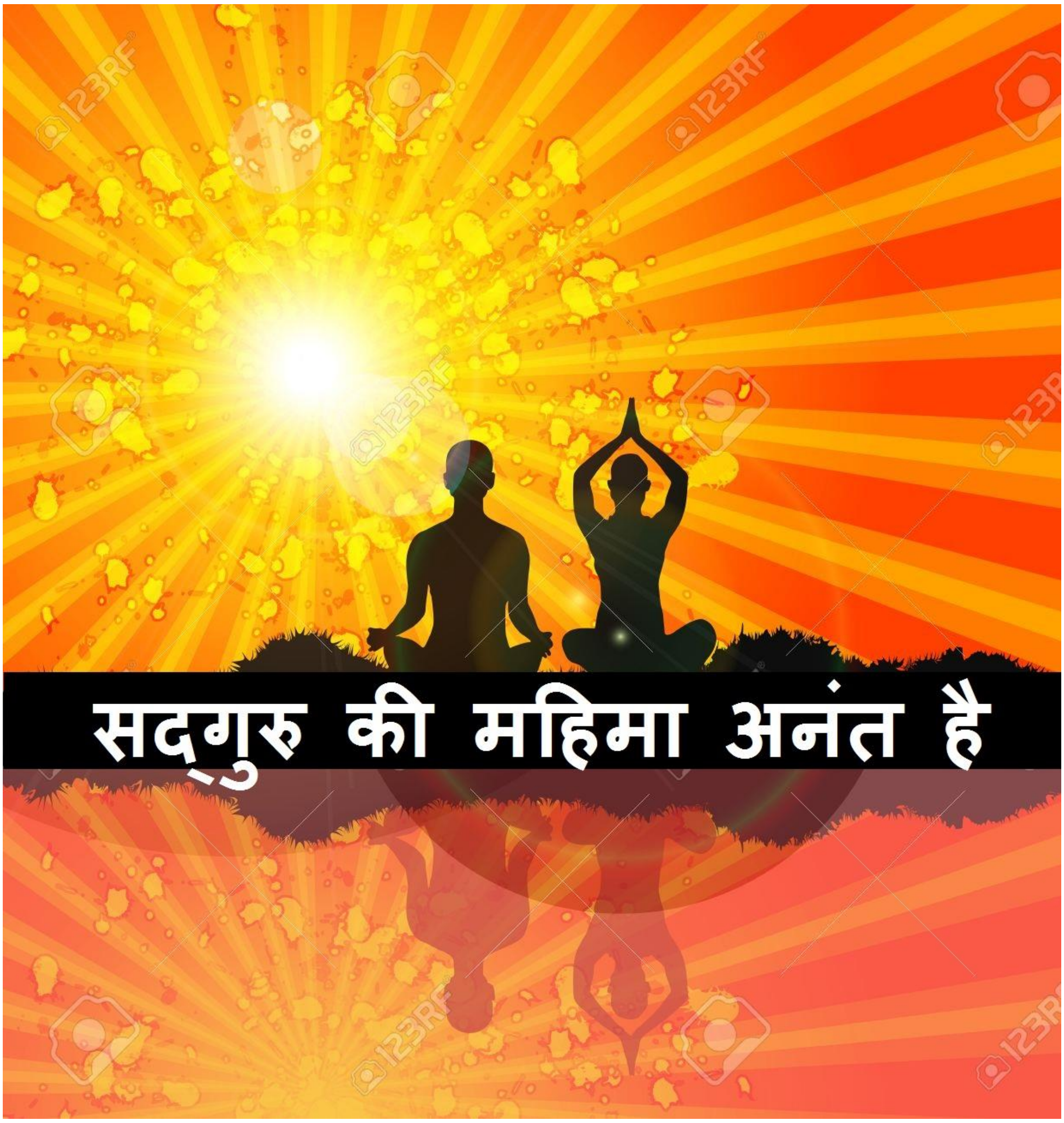

साथ ही जिसे बहुत प्रयत्न करने पर भी आत्म जिज्ञासा उत्पन्न नही हो सके, ऐसे सभी जीवों पर करुणा करते हुए सद्गुरु फिर भी उदासीन ही रहते हैं.

उनके अनंत अद्भुत ज्ञान का अभिप्राय तो सिर्फ एक लोक कल्याण ही होता है.

इसमें न कुछ कम होता है और न ज्यादा.

वे यह भी समझाते हैं कि लोक कल्याण ही चैतन्य की सर्व काल में सच्ची भक्ति है.

अतः अब आपको भी एक ही चैतन्य पदार्थ परिचय करने योग्य है.
फिर आपकी भी संसार के अनंत प्रकार के पदार्थों के परिचय से निवृति होती है.
अतः सद्गुरु की महिमा अनंत है.
वे तो आपको समझा ही रहे हैं कि आपका सहज सुलभ कार्य किस प्रकार से और कैसे हो सकता है.
क्या आप अब सच्चे सद्गुरु का आश्रय लेना चाहेंगे?

33 सुख या दुःख के उदय को अबंध परिणाम से भोगें

इस संसार में सच्चा जिज्ञासु या मुमुक्ष व्यक्ति सिर्फ अच्छा दिखने के लिये कुछ भी आचरण नहीं करता है,
परन्तु मुक्ति मार्ग में प्रवर्तन के लिए उसके प्रत्यक्ष सद्गुरु जो भी देशना देते हैं, वही कार्य करता है.

इस तरह से जब सद्गुरु के बताये अनुसार किसी भी सुख या दुःख के उदय को अबंध परिणाम से भोगा जाता है,
तब वह निश्चय से मोक्षदायक सुख को देने वाला बन जाता है.
क्या आप अब किसी भी सुख या दुःख के उदय को अबंध परिणाम से भोगेंगे?

34 सदाचार या दुराचार से हो रहे नुक्सान से डरें

मिथ्यात्व का साथ होने से जीव को सदाचार या दुराचार के प्रत्येक कार्य में
भले ही उसे सदाचार के नाम पर किंचित पुण्य के छीटें मिल जाये,

लेकिन फिर भी उसे समुद्र बराबर स्वयं से अपरिचय या मिथ्यात्व का दोष लग जाता है, अतः इस तरह के सदाचार या दुराचार के किसी भी कार्य से आपको कोई भी लाभ नहीं हो सकता है.

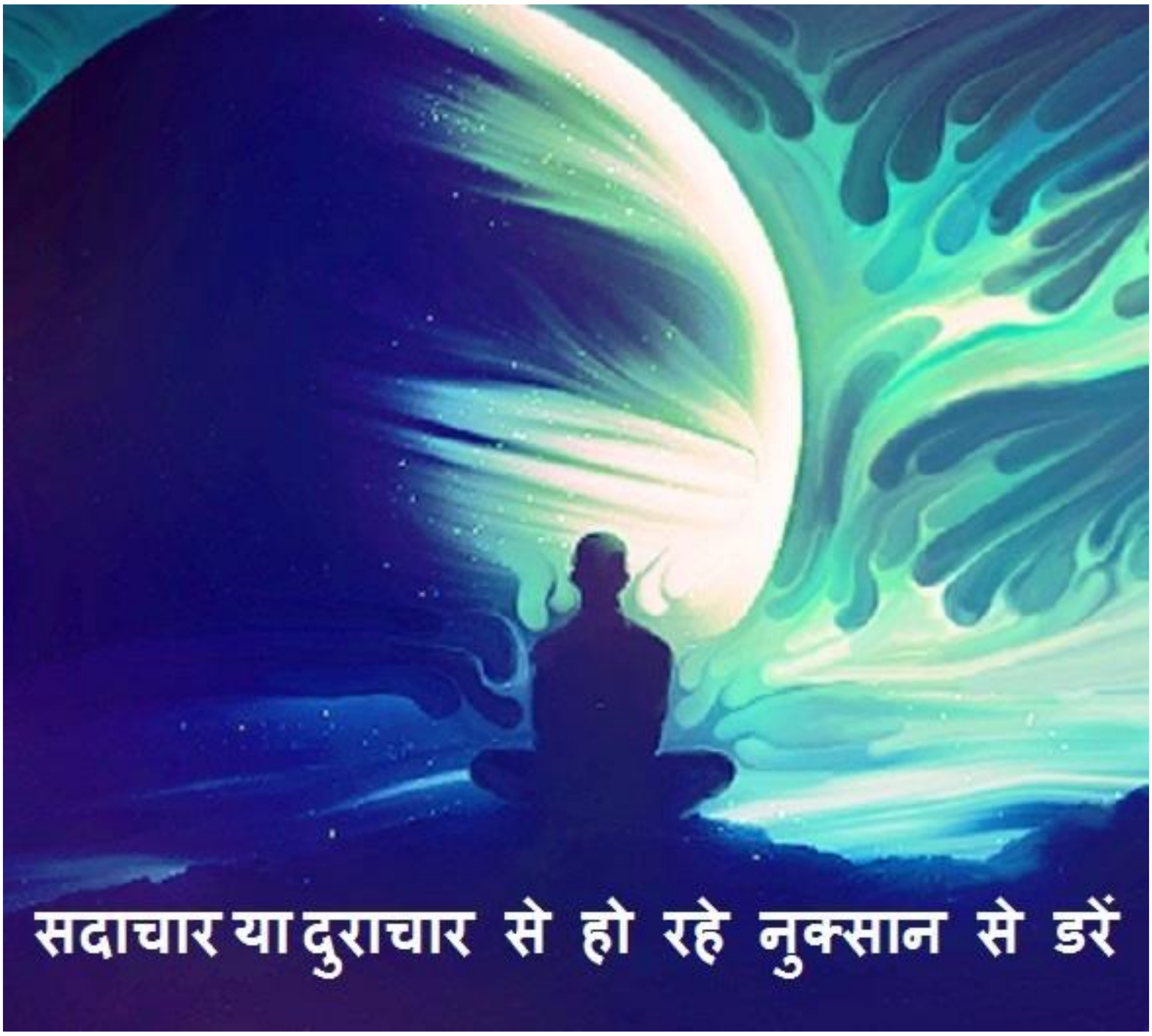

अतः अब आप भी यह मान ले कि प्रत्येक जीव काल रुपी मगरमच्छ के मुँह में ही रह रहा है.

क्या खुद को मगरमच्छ के मुँह में पाकर आप कभी भी सदाचार या दुराचार का कोई भी कार्य करने का सोच भी सकते हैं?

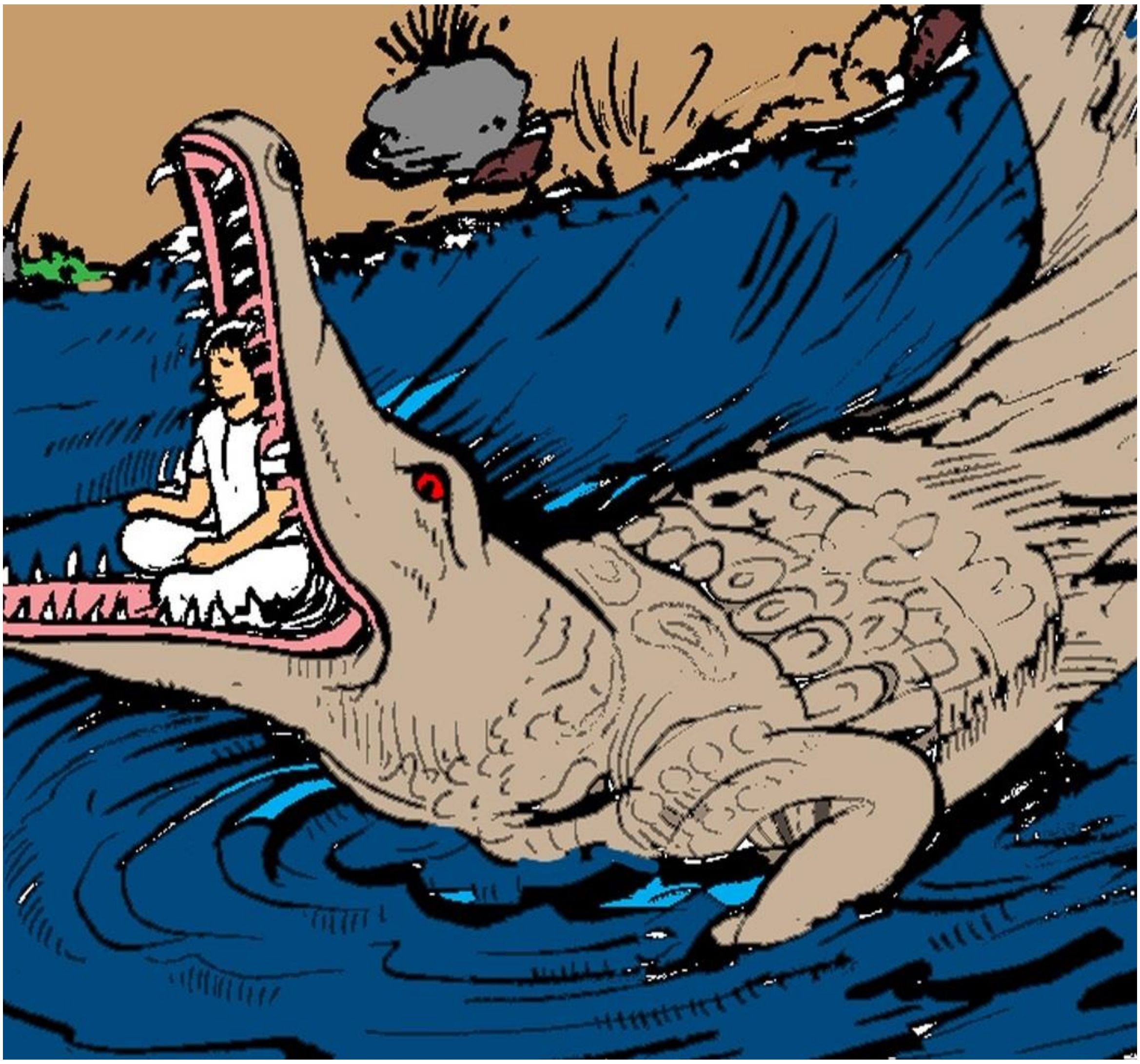

अतः सदाचार या दुराचार से हो रहे नुक्सान से डरें
कृपया एक पल के लिए इस बात पर भी विचार अवश्य करें.

35 दुष्कर भव-रोग की दवाई लें

भव-रोग से बचाने के लिए रोगी को सही और उचित दवाई तो प्रत्यक्ष सद्गुरु ही दे सकते हैं.
लेकिन जो भी व्यक्ति खुद ही किताब या शास्त्र को पढ़ कर खुद ही इस अनादिकाल से चले आ रहे दुष्कर और गंभीर भव-रोग की दवाई ले लेते हैं,

वे खुद तो इस भव समुद्र में डूबते ही हैं,

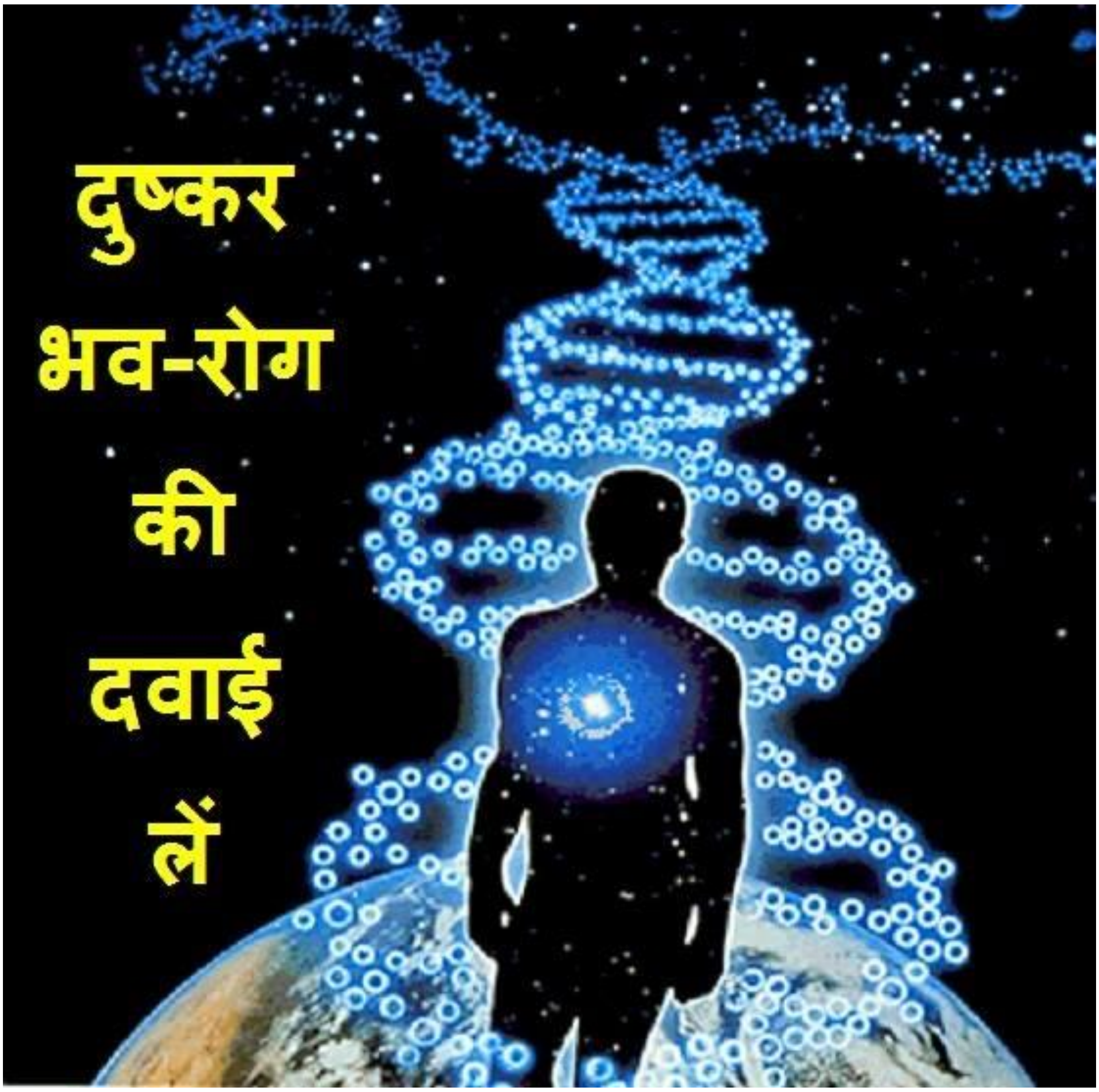

साथ ही अगर वे दूसरों को भी इस दुष्कर भव-रोग की दवाई बताने की कोशिश करने लगते हैं,
तो वे अपने अनुयायियों को भी डुबोते हैं.
फिर उनका अनंत काल के लिए सुलटना मुश्किल हो जाता है.
क्या आप अब इस दुष्कर भव-रोग की दवाई लेना चाहेंगे?
ॐ शांति.

36 अपूर्व अनुपम अवसर का लाभ लें

अहो, सच्चे जिज्ञासु जीव को तो यह संसार सिर्फ चैतन्यमय आत्मरूप ही लगता है.
उसे इस संसार का हर द्रश्य और छबि तो अपने निज चैतन्य की ही लगती है.
आपको भी जब ऐसा ही लगे, तभी आपकी द्रष्टि भी सच्ची कहला सकती है.
फिर आपको कभी भी किसी भी दूसरे व्यक्ति के दोष नजर नहीं आयेंगे.
क्योकि वे तो सब आपके चैतन्य प्रभो के ज्ञान-दर्शन की अवस्था या पर्याय ही होती है.

अतः अब आपको सिर्फ अपने अनंत गुणों की भव्यता और उत्कृष्टता ही हर पल नजर आनी चाहिए.

तभी आप इस संसार में वीतरागी भाव या साक्षी भाव या ज्ञाता-द्रष्टा भाव से रहने के काबिल हो सकते हैं.

अन्य किसी भी प्रकार से आपके लिए इस संसार में रहना योग्य नहीं है.

क्योंकि आप तो सिर्फ और सिर्फ अपने ही निज चैतन्य स्वरूप में ही सहज रह सकते हैं.हैं..

अहो, यह अद्भुत बात आपको किसी सच्चे ज्ञानी के चरण सेवन के बिना अनन्त काल में भी प्राप्त नहीं हो, ऐसी विकट होती है.

फिर भी आपके अनुपम पुण्य के उदय से सहज ही निर्मल तत्व की यह बात आपके समक्ष आ रही है.
क्या अब आप इस अपूर्व अनुपम अवसर को व्यर्थ न गंवा कर इसका लाभ लेना चाहेंगे?

37 कम से कम इस जन्म में चैतन्य के संस्कार तो प्राप्त कर लें

1. □□ महापुरुष अभी भी अपनी □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ रह रहा हो,
2. □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ ही रह रहा हो,
3. लेकिन अगर उसे इस □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ है,
4. तो ऐसे प्रत्येक संसारी जीव को अपनी निज-चैतन्य आत्मा के □□□□□□□ प्राप्त हो सकते हैं.
5. हे प्रभो, अगर आप इस संसार से घबड़ाकर
6. अपने संसार के सभी मोह, राग-द्वेष को समेट कर
7. अपने निज चैतन्य-परमात्मा को प्राप्त करने की कोशिश करते हो,
8. तो इस तरह करने से आपने अपने आत्मा के संस्कार प्राप्त कर लिए हैं.
9. ऐसा जीव अब खुद को हर समय मगरमच्छ के मुंह में ही देखता है,

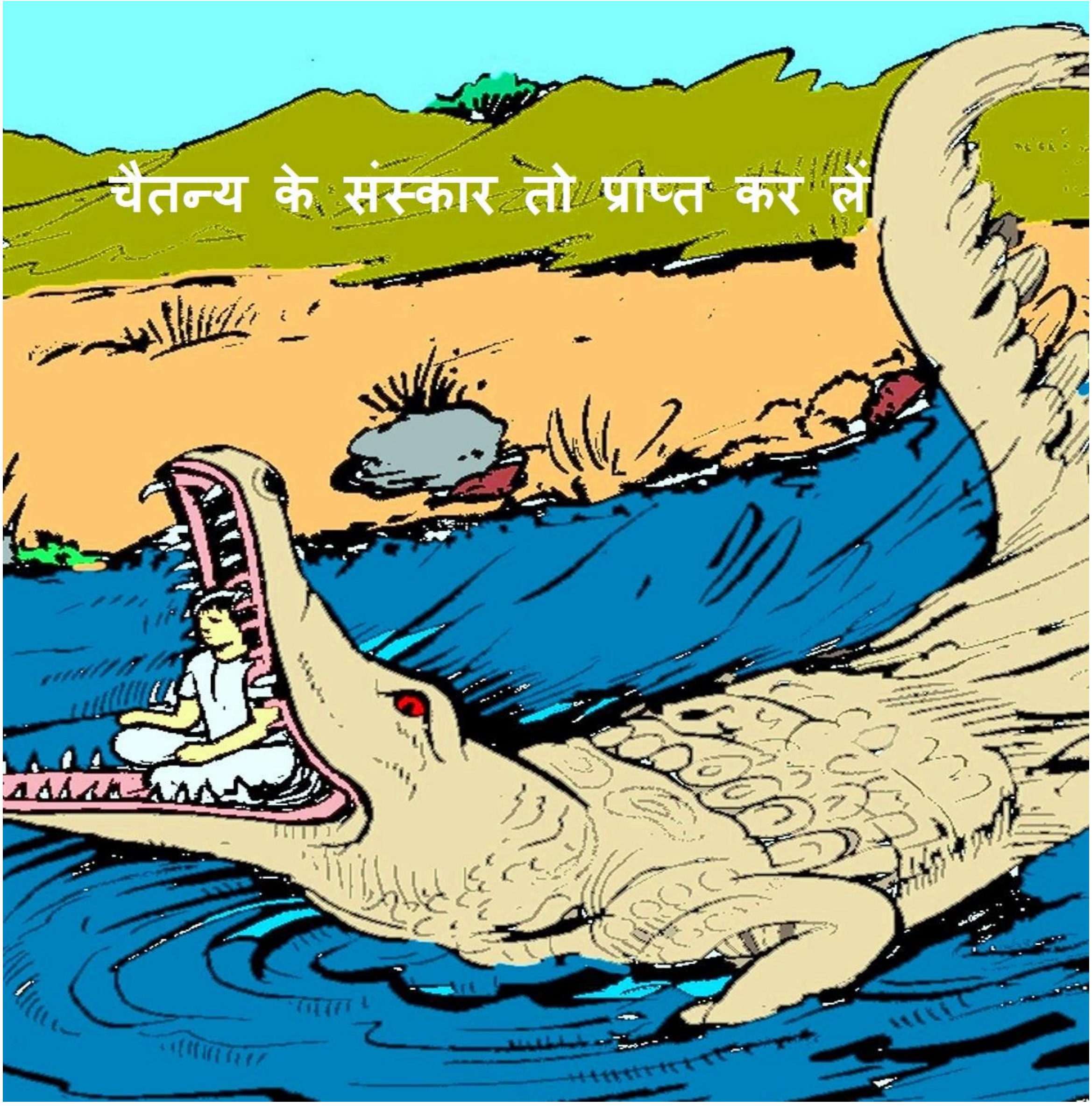

10. वह हर समय इस संसार से डरता ही रहता है.

11. अब वह संसार के किसी भी कार्य में हर्ष या विषाद नहीं करता है.

12. अब उसको बस अपनी आत्मा की प्राप्ति की लग्न लग जाती है.

13. अब इन संस्कारों को और ज्यादा दृढ़ करने की कोशिश में ही वह जुट जाता है.

14. हर समय वह मानता है कि □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□,

15. □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□

16. □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□

17. □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ हूँ।

18. □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ त्रिकाल शुद्ध ही हूँ।

19. □□ हूँ □□ हूँ।

20. □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□

21. □□□□□□ □□□□□□□□□ □ □□□ □□□, □□ □□□ □□□,

22. □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□-द्रष्टा हूँ।

23. □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ विकल्पों □□ □□□□□□□□ □□□□□ हूँ।

24. अहो, अब आप भी अपने अन्दर उठ रहे □□□ विकल्पों के □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□-द्रष्टा बन कर

25. □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ अंतर्ध्यान □□□ □□□ □□ जाई□□□

26. इस तरह करने से आपको खुद □□ इष्ट स्वरुप की,

27. आपके परमात्म-स्वरुप □□,

28. निज चैतन्य स्वरुप की अनंत शीतल शांति □□ □□ □□□□□□ प्राप्ति □□□□□□

29. इस भव में न हुई, तो अगले भव में अवश्य ही प्राप्त होगी.

30. अतः अब कम से कम चैतन्य के संस्कार तो प्राप्त कर लें.

31. ॐ शांति.

38 खुद को देखने की कोशिश करें

1. आपका प्रत्येक कार्य, आपका प्रत्येक परिणमन तो
2. अनंत केवली भगवंत देख ही रहे हैं,
3. वे जो भी देख रहे हैं, वह निश्चित ही कार्य रूप परिणामित होगा.

4. लेकिन आप उसे अभी देख नहीं पा रहे हो,

5. अतः उसकी चिंता करने से क्या आपका कोई कार्य या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है?

6. अगर नहीं हो सकता है, तो फिर आपको क्या कार्य करना शेष रह जाता है?

7. इसलिए अब आपका कर्तव्य तो मात्र अपने

8. त्रैकालिक शुद्ध द्रव्य को ही देखने का शेष बच जाता है.

9. अतः अब सभी तरह के विकल्पों को छोडकर आप खुद को देखने की कोशिश करें.

39 इक साधे, सो सब सधे, सब साधे, सब जाये

हे मेरे चैतन्य रत्नाकर, मेरे परमेश्वर, आपने यह कहावत तो सुनी ही होगी कि -

- इक साधे, सो सब सधे, सब साधे, सब जाये.

अगर आप अपने चैतन्य चमत्कार, विज्ञानघन, निज-परमात्मा को साधते हैं,

तब इसके साथ ही आपकी निम्न लिखित सांसारिक, पारमार्थिक और अलौकिक पर्यायें भी अपने आप ही सध जाती हैं -

1. सुख-सम्रद्धि
2. धन-दौलत
3. उत्तम कुल
4. अच्छा परिवार
5. श्रावक धर्म
6. अणु व्रत

7. महाव्रत
8. मुनिपद
9. उच्चकोटि के देव भव
10. चक्रवर्ती पद
11. छः खंड का राज्य
12. तीर्थंकर पद
13. केवलज्ञानी
14. मोक्ष पद

अब आप ही बताइए कि आप एक निज-परमात्मा को साधना चाहेंगे कि उपरोक्त पर्यायों में से किसी एक या हरेक को अलग-अलग साधना चाहेंगे?

अनादिकाल से आप ऐसी ही भूल कर रहे हैं, इसलिये आज तक कभी भी आपका कल्याण नहीं हुआ;

अब इस भव में तो पुनः ऐसी गलती मत दोहराइये.

40 मुक्ति मार्ग का पथिक बनें

मोक्ष में रह रहे या मुक्ति-मार्ग में गमन कर रहे सभी आत्मलीनता वाले महात्माओं और इस विकारी संसार में ही आसक्त सभी मोही व्यक्तियों को तो पहले से ही शुद्धता है;

अतः मुझे तो इनमें किसी भी तरह का कोई भी भेद नहीं दिख रहा है.

मुझे तो सभी परमात्मा ही दिख रहे हैं.

कोई भी परमात्मा से कम दिख ही नहीं रहा है.
अतः, हे प्रभो, मैं आप में और सिद्ध परमात्माओं में किस तरह से, किस नय या अपेक्षा से अन्तर मानूं?
अगर आप कहते हो कि व्यवहार नय से तो इन दोनों में भेद है, लेकिन व्यवहार नय को तो शास्त्रों के अनुसार वैसे भी मिथ्या कहा गया है, उपचार से कहा गया है.
अतः हम इस व्यवहार नय को कैसे सही मानें?
तथा मैं यह संसारी हूँ और वे सिद्ध भगवंत हैं;
अब ऐसा भेद मैं किस प्रकार करूँ और किस नय से करूँ?
अहो, जो भी भव्य परमात्मा इस सच्चाई को मानता है, वह फिर निश्चित ही सद्गुरु के बताये मार्ग पर चलकर मुक्ति मार्ग का पथिक बन जाता है.

41 चैतन्य की द्रष्टि में पर्याय होती ही नही है

इस संसार का कोई भी परपदार्थ और परद्रव्य तो आत्मा का स्वरूप है ही नही,
लेकिन आपको जो यह राग-द्वेष और मोह दिख रहा है, \
क्या यह आपका स्वरुप हो सकता है?

अहो, जब निर्विकल्प मोक्षमार्ग की दशा भी आपका वास्तविक स्वरूप नही है
वह तो व्यवहार या उपचार से आत्मा का स्वरूप बताया है।

अहो, सच्चाई यह है कि चैतन्य की द्रष्टि या चिन्तन के विषय में पर्याय होती ही नही है, अहो, किसी भी सम्यकद्रष्टि महात्मा के चिन्तन का विषय सम्यकद्रष्टिपना नही होता है. उसकी द्रष्टि का विषय तो द्रष्टि रहित, पर्याय रहित चैतन्य द्रव्य ही होता है.
अतः आज से इस बात को आत्मसात कर ले कि चैतन्य की द्रष्टि या चिन्तन के विषय में पर्याय होती ही नही है.

42 चैतन्य के संस्कार पायें

32. □□ जीव अभी भी अपनी □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ रह रहा है,
33. □□□□□□ □□□□□□ □□□ ही रह रहा है;
34. लेकिन अगर उसे इस □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ है,
35. तो ऐसे प्रत्येक संसारी जीव को अपनी निज-चैतन्य आत्मा के □□□□□□□ प्राप्त हो सकते हैं.
36. हे प्रभो, अगर आप इस संसार के अपने सभी मोह, राग-द्वेष को समेट कर अपने निज चैतन्य-परमात्मा को प्राप्त करने की कोशिश करते हो,

37. तो अब आपने अपनी आत्मा के संस्कार प्राप्त कर लिए हैं.

38. अब इन संस्कारों को और ज्यादा दृढ़ करने के लिए □□ □□ यह मानना □□□□□□.

39. □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□

40. □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□

41. □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ हूँ।

42. □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ त्रिकाल शुद्ध ही हूँ।

43. □□ हूँ □□ हूँ।

44. □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□

45. □□□□□ □□□□□□□□□ □ □□□ □□□, □□ □□□ □□□, □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□-द्रष्टा हूँ।

46. □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ विकल्पों □□ □□□□□□□□ □□□□□ हूँ।

47. अहो, अब आप आपके अन्दर उठ रहे □□□ विकल्पों के □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□-द्रष्टा □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ अंतर्ध्यान □□□ □□□ □□ जाई□□□

48. इस तरह □□ □□ इष्ट स्वरुप की, आपके परमात्म-स्वरुप □□ □□ □□ □□□□□□ प्राप्ति □□□□□□

43 त्रैकालिक शुद्ध चैतन्य तत्व में खो जाइए

1. आपका प्रत्येक कार्य, आपका प्रत्येक परिणमन तो
2. अनंत केवली भगवंत देख ही रहे हैं,
3. वे जो भी देख रहे हैं, वह निश्चित ही कार्य रूप परिणामित होगा.
4. लेकिन आप अभी अपने खुद के कर्तत्व को नहीं देख पा रहे हो,
5. अतः क्या उसकी चिंता करने से आपका कोई भी कार्य या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है?
6. अतः अब इस संसार के सभी कार्यों, प्रयोजनों और विकल्पों से निवृत्ति लें.
7. इसके बाद फिर आपका कर्तव्य और कार्य तो मात्र अपने त्रैकालिक शुद्ध द्रव्य को देखने का ही शेष बचता है.

8. अतः अब विचार करके बताएं कि क्या आप अपने त्रैकालिक शुद्ध चैतन्य तत्व को सच में देखना भी चाहते हैं या नहीं?
9. अगर हाँ, तो फिर अब अपने निज त्रैकालिक शुद्ध स्वरुप में ही खो जाइए.

44 अज्ञान अवस्था में स्वर्ग, तिर्यंच और नरक आदि सभी गतियाँ समान ही हैं

1. देवों में अकाल-मरण तो कभी भी नहीं होता है।

2. वे अत्यंत आर्तध्यान से शरीर को छोड़ते हैं,

3. इसलिए उनकी गतिशील त्रस पर्याय का भी अभाव हो जाता है.

4. अरबो-खरबों देवों में से कोई एक को छोड़ कर सभी देव मर कर वृक्ष या वनस्पतिकाय में या रत्नादि पृथ्वीकायिक जीवों में जन्म लेते हैं.

5. बहुत थोड़े देव ऐसे होते हैं जो मृग, श्वान, अश्व, हाथी, वृषभ आदि पशुओं में और मोर, कबूतर आदि पक्षियों में उत्पन्न हो जाते हैं।

6. ऐसे हजारों-लाखों देवों में से कोई एक देव ही मनुष्यों में जन्म लेता है.

7. इस तरह मरण से छह माह पूर्व से वे अत्यंत भयभीत और आकुलित होकर जैसा मोहकर्म या पापकर्म बांधते हैं,

8. वैसे ही बुरी या अधिक बुरी योनी में जाकर जन्म लेते हैं।

9. शरीर के अत्यंत मोह के कारण हो रहे आर्तध्यान से मरने से देवों को फिर से संज्ञी पंचेन्द्रियपना का मिलना उनके लिये अनंत काल में भी दुर्लभ हो जाता है,

10. जबकि किसी भी नारकीय जीव को मरण के पश्चात नियम से संज्ञी पंचेन्द्रियपना ही प्राप्त होता है.

11. इस तरह किसी भी जीव का नरक में जाने के बाद भी और वहां से आने के बाद भी संज्ञी पंचेन्द्रियपना कायम रहने के कारण उसके कल्याण का मार्ग, मोक्ष का मार्ग खुला हुआ ही रहता है।

12. अतः कई जीव नर्क से आने के बाद भगवान महावीर की तरह शेर की योनी में जाकर भी अपना कल्याण कर सकते हैं और फिर अनंत काल के लिए मुक्ति शिखर पर रहते हैं.

13. अतः अज्ञान दशा में देव भव में जाना तो नरक भव में जाने से भी ज्यादा खतरनाक होता है.
14. क्या आप अब भी अज्ञान अवस्था में रहते हुए स्वर्ग में जाने की इच्छा रखना चाहेंगे?

45 निगोद के अनंतानंत दुखों से डरें

शिष्य - हे प्रभो, हम बहुत कोशिश कर रहे हैं, पूजापाठ कर रहे हैं, व्रत-उपवास आदि कर रहे हैं, शास्त्र आदि पढ़ रहे हैं; किन्तु फिर भी हमें अपने भगवान आत्मा की प्राप्ति नहीं हो रही है और अब हमारा यह मनुष्य निष्फल ही चला जा रहा है. अतः अब हमें क्या करना चाहिए?
सद्गुरू – इस तरह की सभी कोशिश और मेहनत तो आपने पूर्व जन्मों में अनंत बार की हैं,
अतः अब आप फिर से ऐसी कितनी भी कोशिश या मेहनत कर लें, किन्तु पत्थरों को फोड़-फोड़ कर मेहनत करने से कोई भी आजतक करोड़पति नहीं बन सका है.

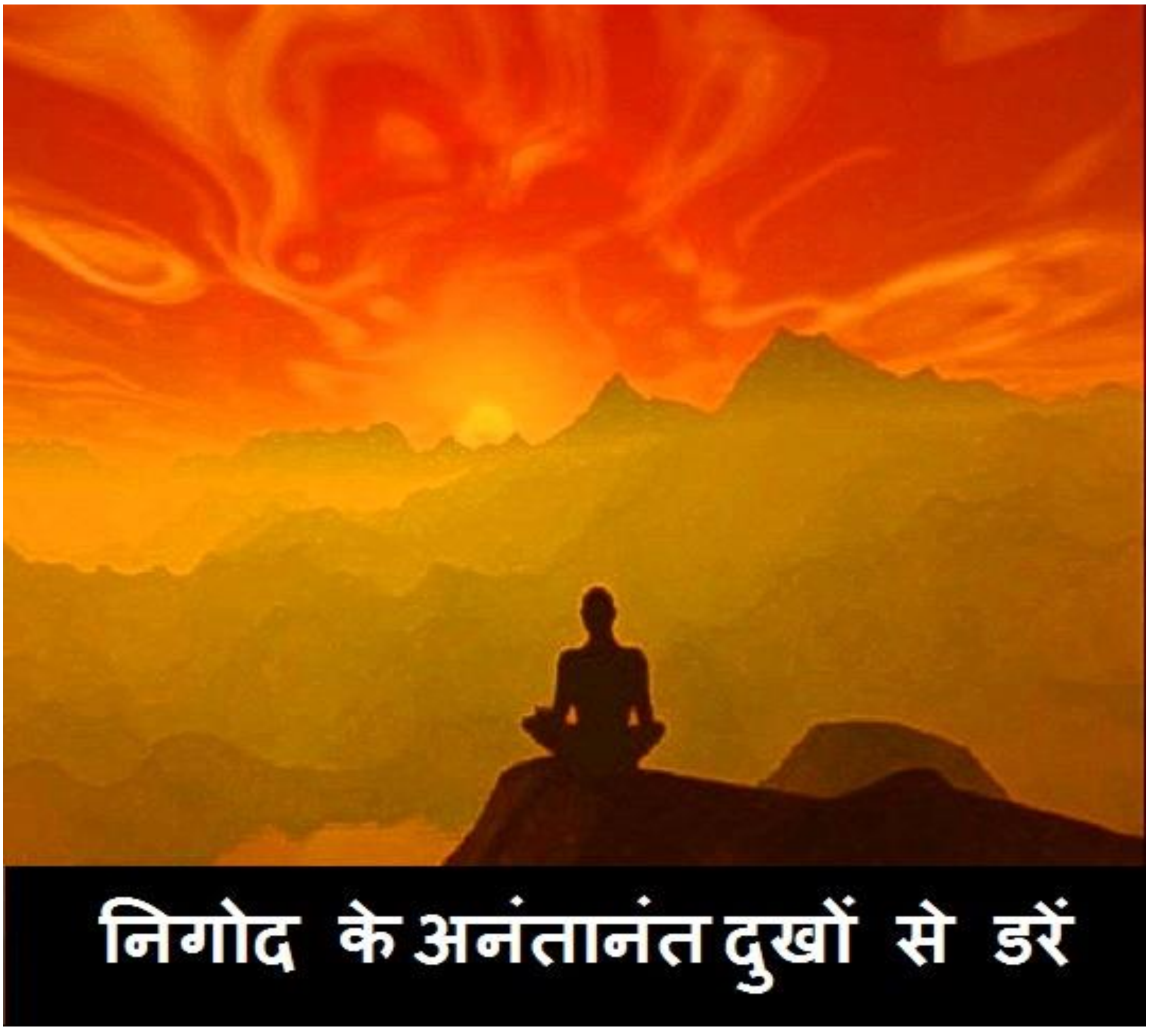

आध्यात्मिक रूप से आप इस बात को समझना चाहे, तो सच्चाई यह है कि प्रत्येक जीव के अनादिकाल से लेकर आज तक के समय को % के आधार पर समझे तो 99.9999999999999999.......................9999999999999999999999 प्रतिशत समय तक तो वह नरक से भी बहुत तुच्छ, बहुत ज्यादा पीड़ादायक निगोद की योनी में ही रहा है.

अगर आप इस अनादिकाल से लेकर आजतक के समय की सौ साल से तुलना करें, तो हम सभी मात्र एक सेकण्ड से भी कम समय के लिए ही निगोद से बाहर आये हैं.

अतः हर व्यक्ति को इस सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए

इस बात को समझ कर जिस भव्य जीव को अभी ही ऐसा लगेगा कि वह अभी निगोद से निकला ही नहीं है,
तो फिर वह हर समय निगोद के अनंतानंत दुखों को भोगने से हो रही पीड़ा से अत्यंत व्याकुल हो कर्मो की अग्नि में छटपटा रहा होता है.
ऐसा सच्चा आत्म-पिपासु जीव शीघ्र ही सद्गुरु की देशना को गृहण करके निश्चित ही अपना कल्याण कर लेगा.
हे प्रभो, अन्य सभी जीव इस संसार की चतुर्गति के चौरासी लाख योनियों में ही घूमते रहेंगे.

46 आपका धर्म या स्वभाव
चैतन्य आत्मा ही रहता है

1. प्रत्येक व्यक्ति चैतन्य परमात्मा ही है,
2. अतः प्रत्येक व्यक्ति का धर्म या स्वभाव आत्मा ही रहता है,
3. भले ही वह व्यक्ति आज आपको किसी भी धर्म या मत का अनुयायी दिखता हो.
4. लेकिन फिर भी कोई भी व्यक्ति अपनी आत्मा से दूर हो ही नहीं सकता है.
5. आज हो सकता है कि
6. पूरे चौथे काल के बीच-बीच में कई बार आत्म धर्म का अभाव हो जाता था,
7. लेकिन जब भी तीर्थंकर भगवान का इस धरा पर सद्भाव होता था,

8. तब उनके प्रताप से पूरे भरत क्षेत्र आर्य खंड के करोड़ों-अरबों लोग इस आत्म धर्म को मानने लगते थे.

9. उनके समवशरण में आने वाले करोडों पशु-पक्षी भी यह आत्म धर्म या जैन धर्म अंगीकार कर लेते थे.

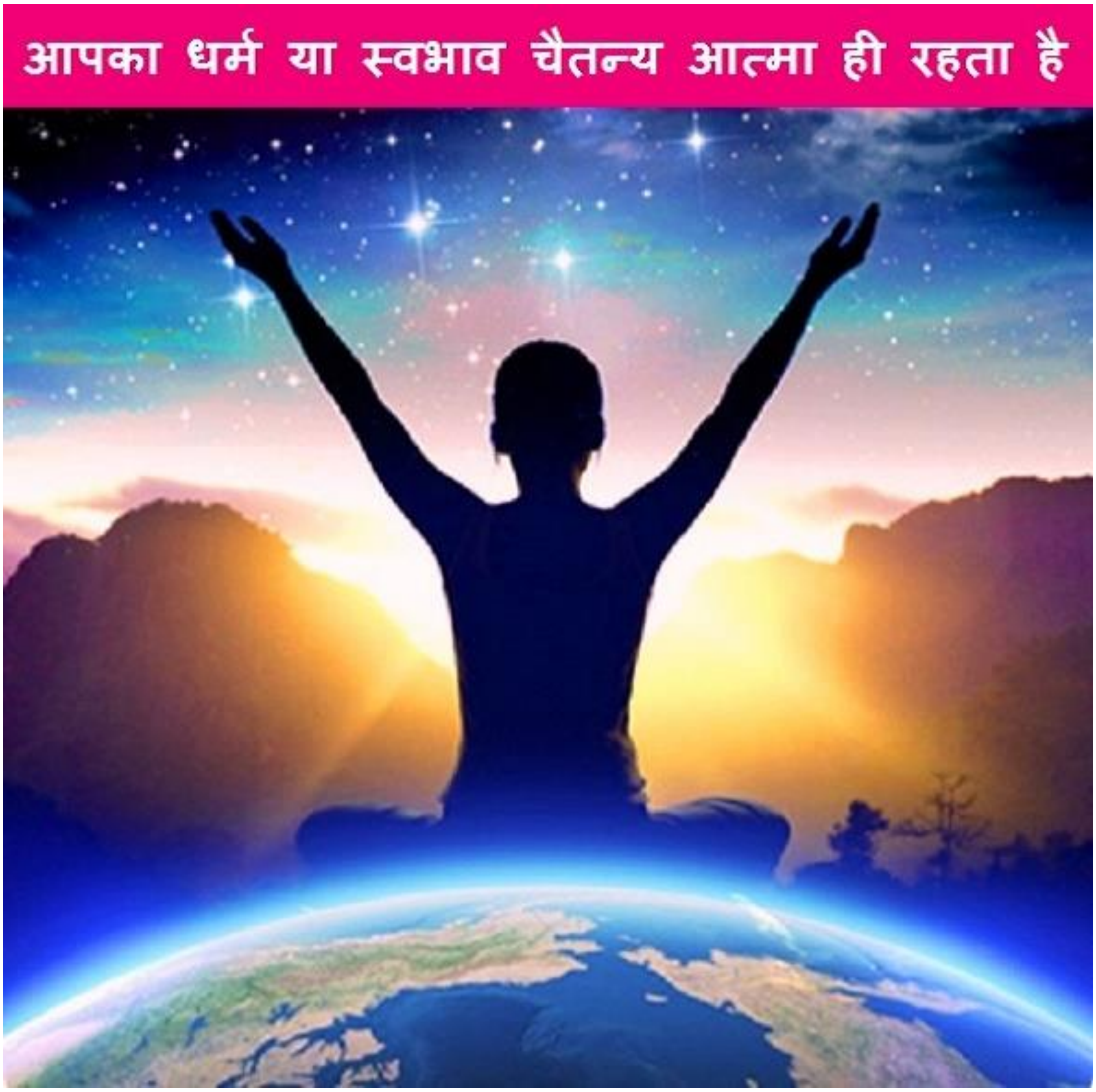

10. मेंढक जब कमल का फूल लेकर भगवान महावीर के समवशरण में जा रहा था, तब वह राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे आकर मर जाता है, तब उस समय वह भी इस आत्म धर्म का ही अनुयायी था.

11. इस तरह इस संसार में मुझे तो कोई भी व्यक्ति आत्मा के बिना दिखता ही नहीं है.

12. यहाँ तक कि पशु-पक्षी सरीखे तिर्यंच भी मुझे आत्मा ही दिखते हैं.

अष्टावक्र गीता प्रकरण 1, सूत्र 12,14 में भी समझाया है कि -

1. यह आत्मा ही साक्षी (ज्ञाता-द्रष्टा) है,
2. व्यापक है,
3. पूर्ण है,
4. एक है,
5. मुक्त है,
6. चैतन्य स्वरुप है,
7. क्रिया रहित है,
8. असंग है,
9. निस्पृह (इच्छारहित) है,
10. शांत है.
11. लेकिन यह प्राणी भ्रम से अपने आपको संसारी जैसा मान कर दुखी होता है.
12. तू बहुत काल से देहाभिमान के पाश (रस्सी) से बंधा हुआ है.
13. अब उसी पाश (रस्सी) को मैं बोध (ज्ञानी) हूँ,
14. ऐसी इस ज्ञान की तलवार से काटकर तू सुखी हो जा.

अतः हे प्रभो, क्या आप भी अब इस आत्म धर्म की बात को मानते हो?

47 चैतन्य के संस्कार से अक्षय सुख की प्राप्ति होगी

क्या आज तक कोई भी व्यक्ति इस संसार की कोई भी संपदा या धन-दौलत तथा परिवार को
अपने साथ अगले जन्म में ले जा सका है?
लेकिन अब आप यह भी जान लो कि आप खुद को, खुद के चैतन्य सम्राट को अगले जन्म में तो ले ही जा सकते हो.

अतः अब खुद को जानने का पुरुषार्थ तो कर लो.
अगर आपने खुद को पाने की एक बार भी सच्ची कोशिश की,
तो आपको निश्चित ही अपने चैतन्य सम्राट की प्राप्ति होगी ही होगी.

आपकी सच्ची रूचि होने पर भी अगर इस जन्म में आपका अपने चैतन्य परमात्मा को पाने का □□□□□ □□□□ □□□,
तो आपकी सच्ची रूचि ही वे □□□□□□□ □□□, □□ □□ □□ □□□ आपके □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□.
□□□ कम □□ कम अब इस मनुष्य भव में तो आपको ये चैतन्य के संस्कार को पाने का कार्य □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□.
फिर ये चैतन्य के संस्कार ही अगले जन्म में आपको अक्षय सुख की प्राप्ति करवा देंगे.

48 अपने उर्ध्वमुखी स्वभाव को पहचानें

किसी भी लकड़ी को हम पानी के अंदर कितना भी बाँध कर रखें,
लेकिन उस बंधन के टूटते ही वह लकड़ी पानी की सतह पर आ जाती है.
क्योंकि लकड़ी का स्वभाव तो पानी के ऊपर तैरना ही होता है,
इसी तरह से आप भले ही कितने भी बन्धनों में बंधे क्यों न हों,
लेकिन फिर भी आप सरीखे प्रत्येक चैतन्य परमात्मा का स्वभाव इस त्रिलोक के ऊपर तैरना ही होता है.

क्योकि प्रत्येक जीव का स्वभाव उर्ध्वमुखी ही होता है.
आपका स्वभाव भी त्रिलोक के ऊपर ही रमण करना होता है.
अतः हे चैतन्य सम्राट, अब इस संसार के मोह को तोड़कर
आप भी अपने उर्ध्वमुखी स्वभाव को पहचान कर तीन लोक से ऊपर
अनंत सुख के सागर में अनंत काल तक रमण करते रहें.

49 प्रभु दर्शन की अद्भुत महिमा

अहो, महावीर स्वामी के समवशरण में जब राजा श्रेणिक अपने दल-बल के साथ जा रहे थे,

तब उस जुलूस को देख कर एक मेंढक को अपने पूर्व जन्म की याद याद आ जाती है कि वह एक सेठ था और वह भी भगवान के दर्शन को जाता रहता था.

अतः इस मेंढक ने अपनी बावड़ी से एक कमल के फूल को लिया और फिर प्रभु दर्शन के भाव संजोये वह मेंढक भी समवशरण की ओर जाने लगा.

तभी वह राजा श्रेणिक के हाथी के पाँव के नीचे आकर कुचल कर मर जाता है.

लेकिन भगवान के दर्शन के शुभ भावों के परिणाम-स्वरूप वह मेंढक तत्काल देव बन जाता है.

तथा वह देव फिर राजा श्रेणिक से भी पहले समोशरण में पहुँच कर भगवान की दिव्य देशना सुनने लगता है.

हे चैतन्य देव, जब देवदर्शन के शुभ भावों का फल इतना अलौकिक होता है,
तब साक्षात् भगवान के दर्शन के फल से उस देव का शाश्वत कल्याण हो जाता है.
अहो, प्रभु दर्शन की क्या अद्भुत महिमा रहती है.

50 महा-प्रतापी पुत्र-पुत्रियों को जन्म दें

हर व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसके सुंदर, सुशील, पराक्रमी, आज्ञाकारी पुत्र-पुत्री उत्पन्न हों. किसी को अगर चार-पांच साल में बच्चा न हो, तो वह डॉक्टर से अपना इलाज करवाता है और जब तक बच्चा न हो, तब तक उसे चैन नहीं आता है.
इसी तरह क्या कोई बता सकता है कि हमारी सभी महा-प्रतापी पुत्र-पुत्रियों की पर्यायों को जन्म कौन देता है?
क्या आप भी चाहते हैं कि आपके भी निम्न महा-प्रतापी पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न हों?

1. सम्यकदर्शन रूपी पुत्र-पुत्रियाँ
2. अणु-व्रत या श्रावक धर्म रूपी पुत्र-पुत्रियाँ
3. महाव्रत, सकल चरित्र और मुनिपद रूपी पुत्र
4. उच्चकोटि के देव भव रूपी पुत्र-पुत्रियाँ

5. त्रेसठ शालाखा के महापुरुष रूपी पुत्र
6. तीर्थंकर भगवान के माता-पिता रूपी पुत्र-पुत्रियाँ
7. चक्रवर्ती पद और छः खंड का राज्य रूपी पुत्र
8. तीर्थंकर पद रूपी पुत्र
9. केवलज्ञान रूपी पुत्र
10. सिद्ध भगवान रूपी पुत्र

हे प्रभो, मोक्ष महल में विराजमान अनंत सिद्ध भगवंत तो आज भी आपके इन पुत्रों को आपके अंदर ही देख रहे हैं.

फिर आप क्यों नहीं चाह रहे हो कि आपके इन महा-प्रतापी पुत्र-पुत्रियाँ का जन्म हो?

क्या आपको बेऔलाद और बाँझ कहलाना पसंद है?

अरे प्रभो, अब तो किसी अच्छे सद्गुरू रूपी योग्य डॉक्टर को ढूँढ कर अपना इलाज करवा लें और इन महा-प्रतापी पुत्र-पुत्रियाँ को जन्म दें.

51 यह संसार अरण्यवत या जंगल के समान शांत है

1. हे चैतन्य प्रभो, आप जानते ही हैं कि इस त्रिलोक में अनंत-अनंत जीव द्रव्य है.
2. उनसे भी अनंतानंत गुणे ज्यादा पुदगल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्य सरीखे अजीव द्रव्य हैं,
3. लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये सभी जीव और अजीव द्रव्य मिलकर भी आपके समक्ष असहाय सरीखे ही हैं.
4. क्योकि वे सभी तो आपके ज्ञान-समुद्र के भँवर में डूब गये हैं.
5. वे सब के सब तो आपके ज्ञान-रत्नाकर में अनंत काल के लिये कैद हो गये हैं.
6. अहो, इस संसार में आपके ज्ञानपुंज के अलावा अब आपको और दूसरा और कौन सा द्रव्य दिख सकता है?
7. बड़े आश्चर्य की बात है कि मुझे संसार के इस जन समूह (भीड़) में भी कोई दूसरा (द्वेत) दिखाई ही नहीं दे रहा है.
8. अहो, यह संसार तो अब मुझे अरण्यवत या जंगल के समान शांत लग रहा है.

9. यह जानकर अब मैं किससे प्रेम करूँ
10. किससे राग करूँ,
11. किससे द्वेष करूँ,
12. क्योकि मुझे तो कोई भी नहीं दिख रहा है.
13. अतः अब मैं साक्षी भाव (ज्ञाता-द्रष्टापना) को धारण कर
14. चैतन्य परमात्मा बनकर इस त्रिलोक में विचरण करता हूँ.

52 शरीर रुपी लकड़ा

सिर्फ जलने के काम ही आएगा

1. जब किसी पेड़ की शाखा या तना काट कर अलग कर दिया जाता है,

2. तब वह तना या टुकड़ा पेड़ नहीं कहलाता है.

3. उसे हम लकड़ा कहते हैं,

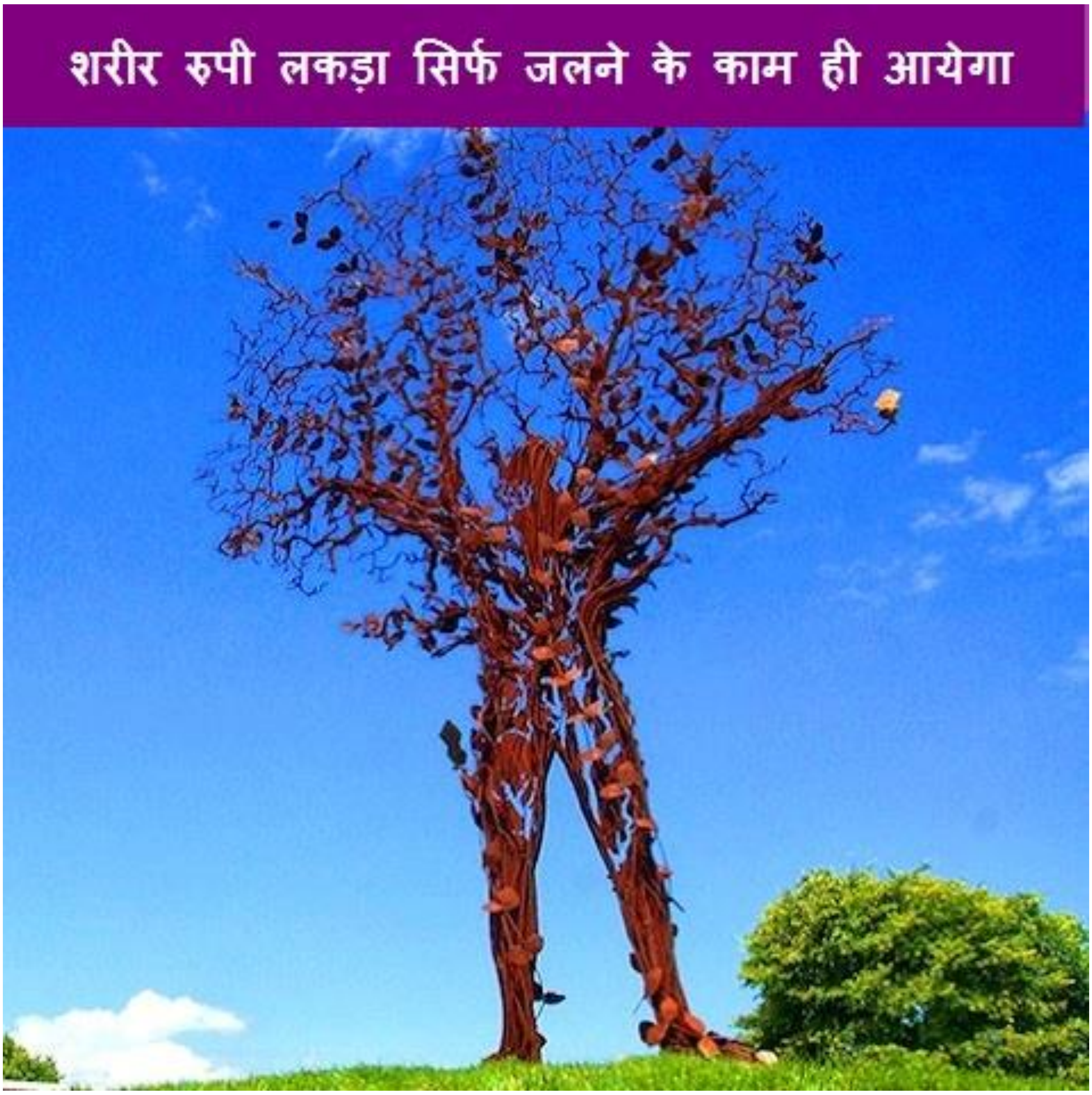

4. लेकिन कोई भी लकड़ा तो सिर्फ जलाने के काम में ही लिया जाता है.

5. हे प्रभो अगर आपने अपने इस शरीर रुपी पेड़ को

6. अपने निज चैतन्य प्रभो के अमृत जल से पोषण नहीं दिया,

7. तो फिर यह शरीर रुपी लकड़ा भी सिर्फ जलने के काम ही आएगा.

53 द्रव्यद्रष्टि जिनेश्वर, पर्यायद्रष्टि विनेश्वर

जब कोई महापुरुष चैतन्य द्रष्टि या द्रव्यद्रष्टि को धारण करता है, तब वह परमात्मा बन जाता है.

बाकी के जो भी जीव वर्तमान अवस्था या पर्याय को अपना स्वरुप मानकर

उसी अवस्था या पर्याय में रहते हुए नष्ट हो जाते हैं या विनाश को प्राप्त हो जाते हैं.
अतः उन सभी का विनाश होने से उनको विनेश्वर या विनाश के ईश्वर की संज्ञा दी जाती है.

54 अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल

आप जानते ही हैं कि तीन लोक के मध्य क्षेत्र में अढ़ाई द्वीप में 5 भरत, 5 ऐरावत, 5 महाविदेह; इस तरह के 15 कर्मभूमि के स्थानों या क्षेत्रों में ही तीर्थंकर प्रभु जन्म लेते हैं।
भरत-ऐरावत के 10 क्षेत्रों की धुरी पर काल-चक्र सदा घूमता रहता है। जब काल-चक्र उत्तम समय से निम्न या हीन काल की तरफ जाता है तो अवसर्पिणी काल कहलाता है,
तथा जब यह नीचे के हीन काल से ऊपर उत्तम समय की तरफ जाता है तो उत्सर्पिणी काल कहलाता है।
प्रत्येक अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी में 24-24 तीर्थंकर हरेक भरत ऐरावत क्षेत्र में होते हैं।
ऐसे दसों भरत-ऐरावत क्षेत्रों में 24-24 तीर्थंकर ऐसे कुल 240 तीर्थंकर समकालीन होते हैं। महाविदेह क्षेत्र में समय का चक्र चलता अवश्य है। वहां रात के बाद दिन और फिर रात होती है,
परन्तु अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी का काल-चक्र स्थिर रहता है.
अतः वहां पर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी जैसा कुछ भी नहीं होता है।

महाविदेह क्षेत्र का समय सदाकाल एक सा ही रहता है और वहां सदैव चतुर्थ आरे के प्रारम्भ काल के समान समय रहता है।

अवसर्पिणी के छः काल का समय इस तरह का होता है -

1) पहला काल चार कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

2) दूसरा काल तीन कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

3) तीसरा काल दो कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

4) चौथा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

5) पंचम काल 21 हजार वर्ष का होता है.

6) छठा काल 21 हजार वर्ष का होता है.

उत्सर्पिणी के छः काल का समय इस तरह का होता है –

1) पहला काल 21 हजार वर्ष का होता है.

2) दूसरा काल 21 हजार वर्ष का होता है.

3) तीसरा काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

4) चौथा काल दो कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

5) पंचम काल तीन कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

6) छठा काल चार कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है.

अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी के कुल काल का योग 20 कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है. इसे एक कल्पकाल कहते हैं.

जब अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी के असंख्य कल्पकाल बीत जाते हैं, तब एक हुंडावसर्पिणी काल आता है.

अभी हम सभी हुंडावसर्पिणी काल में रह रहे हैं.

यह एक विशेष काल होता है और इस काल में कई तरह की अनहोनी भी होती है.

यहाँ समय की इकाई सागर का भी कथन आया है.

सागर समय की बहुत बड़ी इकाई होती है जिसकी कल्पना भी आज के वैज्ञानिक नहीं कर सकते हैं.

जैन शास्त्रों में भी हर जगह इस इकाई का वर्णन आता है. इसका विवरण इस तरह है –

• अगर हम दो हजार कोस गहरे तथा इतने ही व्यास की चौड़ाई वाले गोलाकार गड्डे में कैंची से जिसके दो टुकडे न हो सकें ऐसे एक से सात दिन की उम्र के उत्तम भोगभूमि के मेंढे या भेड़ के बालों से भर दें और फिर उसमें से सौ-सौ वर्ष के अंतर से एक-एक बाल

निकालें, तो जितने काल में उन सब बालों को निकाल दिया जायेगा, उसे एक व्यवहारपल्य कहते है; व्यवहारपल्य से असंख्यातगुने समय को उद्धारपल्य और उद्धारपल्य से असंख्यातगुने काल को अद्धापल्य कहते हैं।
इस तरह के दस कोड़ाकोड़ी (10 करोड़ गुणा 10 करोड़) अद्धापल्यों का एक सागर होता है।

55 विहरमान बीस तीर्थंकरों की अद्भुत विशेषतायें

1) इस तीन लोक में पांच भरत क्षेत्र और पांच ऐरावत क्षेत्रों की तरह महाविदेह क्षेत्र में एक के बाद एक ऐसे चौबीस तीर्थंकरों की व्यवस्था नहीं होती है।
2) महाविदेह क्षेत्र की पुण्यवानी अनंतानंत और अद्भुत है.
3) वहां सदाकाल बीस केवलज्ञानी तीर्थंकर विचरते रहते हैं,
4) इस तरह महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकरों का कभी भी अभाव नहीं होता है।
5) महाविदेह क्षेत्र का समय सदाकाल एक सा ही रहता है और वहां सदैव चतुर्थ काल के प्रारम्भ काल के समान समय रहता है।
6) उन सभी विहरमान केवली तीर्थंकरों के नाम भी हमेशा एक सरीखे ही रहते हैं; इसलिए उन्हें जिनका कभी भी विरह न हो, ऐसे विरहमान बीस तीर्थंकर भी कहते हैं।
7) महाविदेह क्षेत्र में बीस से कभी भी कम तीर्थंकर नहीं होते हैं। अतः उन्हें जयवंता जगदीश भी कहते हैं क्योकि वे सभी साक्षात् परमात्म स्वरुप में विद्यमान रहते हैं।

8) महाविदेह क्षेत्र के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण इस तरह चार विभाग करने से पाँचों महाविदेहों में 5×4=20 विभाग हुए। एक विभाग में एक; ऐसे बीस केवली तीर्थंकर सदा विचरते रहते हैं.

9) ये विहरमान बीस तीर्थंकर सदाकाल से धर्म-दीप को प्रदीप्त कर रहे हैं और करते रहेंगे।

10) यह अटल नियम है कि बीस विहरमान तीर्थंकर एक साथ जन्म लेते हैं, एक साथ दीक्षित होते हैं, एक साथ ही केवलज्ञान को प्राप्त करते हैं.

11) जब वर्तमान के बीस विहरमान तीर्थंकर केवल्य को प्राप्त करते हैं, तब भावी बीस विहरमान तीर्थंकर दीक्षित होते हैं।

12) वर्तमान के जब बीस विहरमान तीर्थंकर निर्वाण प्राप्त करते हैं तब भावी बीस विहरमान तीर्थंकर केवलज्ञान को प्राप्त कर तीर्थंकर पद पर आसीन हो जाते हैं और उसी समय नये बीस विहरमान तीर्थंकरों का भी जन्म हो जाता है।

13) इस तरह इस महा पुण्य भूमि में एक साथ तीर्थंकर तो बीस से बहुत ज्यादा रहते हैं. लेकिन समवशरण से सुशोभित केवलज्ञानी तीर्थंकर बीस ही रहते हैं.

14) महाविदेह क्षेत्र के इन वर्तमान के बीसों विहरमान तीर्थंकरों का जन्म एक साथ हमारे सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ जी के निर्वाण के बाद महाविदेह क्षेत्र में हुआ था।

15) बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी के निर्वाण के पश्चात महाविदेह क्षेत्र के इन सभी तीर्थंकरों ने एक साथ दीक्षा ली थी.

16) बीसों विहरमान एक हज़ार वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में रहते हैं और इन सभी को एक ही साथ केवलज्ञान, केवल दर्शन की प्राप्ति होती है।

17) हमारे भरत क्षेत्र के भविष्यकाल की चौबीसी के सातवें तीर्थंकर श्री उदयप्रभस्वामी के निर्वाण के पश्चात बीसों विहरमान तीर्थंकर एक ही समय में मोक्ष पधारेंगे।

18) महाविदेह क्षेत्र में तत्काल उसी समय दूसरे बीस विहरमान तीर्थंकर जन्म लेंगे.

19) प्रत्येक विहरमान तीर्थंकर के 84 गणधर होते हैं।

20) प्रत्येक विहरमान तीर्थंकर के सानिध्य में दस लाख केवली परमात्मा बन जाते हैं

21) प्रत्येक विहरमान तीर्थंकर के साथ दस करोड़ मुनिराज और इतनी ही साध्वियाँ होती हैं।

22) बीसों विहरमान तीर्थंकरों के संघ में कुल मिलाकर दो करोड़ केवलज्ञानी, दो सौ करोड़ मुनिराज और दो सौ करोड़ साध्वियाँ होती हैं।

23) महाविदेह क्षेत्र में सदाकाल रहने वाले विहरमान बीस तीर्थंकरों के एक सरीखे नाम इस तरह से होते हैं -

1. श्री सीमंधर स्वामी
2. श्री युगमंदर स्वामी
3. श्री बाहु स्वामी
4. श्री सुबाहु स्वामी
5. श्री संजातक स्वामी
6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी
7. श्री ऋषभानन स्वामी
8. श्री अनन्तवीर्य स्वामी
9. श्री सूरप्रभ स्वामी
10. श्री विशालकीर्ति स्वामी
11. श्री व्रजधर स्वामी
12. श्री चन्द्रानन स्वामी
13. श्री भद्रबाहु स्वामी
14. श्री भुजंगम स्वामी
15. श्री ईश्वर स्वामी
16. श्री नेमिप्रभ स्वामी
17. श्री वीरषेण स्वामी
18. श्री महाभद्र स्वामी
19. श्री देवयश स्वामी
20. श्री अजितवीर्य स्वामी

इस लेख में बताया गया विवरण इंटरनेट पर उपलब्ध कई लेखों पर आधारित है.

इसमें मुख्य और सार गर्भित बात यह है कि विदेह क्षेत्र के इस अद्भुत, अलौकिक, सर्वोत्कृष्ट विरह्मान तीर्थंकरों की सर्वोच्च महिमा, यश, बल और कीर्ति जो जानकर आप भी विरह्मान तीर्थंकर बनने की लगन के साथ सम्पूर्ण तीन लोक के कल्याण की भावना भायें.

आपका निश्चित ही शाश्वत कल्याण होगा.

56 अणुव्रत

(1) अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रहपरिमाण ये पाँच अणुव्रत होते हैं। हिंसादिक को इस संसार में भी पाप माना जाता है; उनका इन व्रतों में एकदेश या स्थूल रूप से त्याग किया जाता है; इसी कारण ये अणुव्रत कहलाते हैं.

(2) अहिंसाणुव्रत का धारण करनेवाला जीव "यह जीव घात करने योग्य है, मैं इसे मारूँ, इस प्रकार संकल्प सहित किसी भी त्रस जीव की संकल्पी हिंसा नहीं करता है, लेकिन उसे गृहस्थ का कार्य सावधानी पूर्वक करते हुए आरम्भी हिंसा, उद्योगिनी हिंसा तथा विरोधिनी हिंसा का त्याग पूरी तरह नहीं हो पाता है।

(3) प्रमाद और कषाय में युक्त होने से जहाँ प्राणघात किया जाता है वहीं पर हिंसा का दोष लगता है. जहाँ वैसा कारण नहीं हो, वहाँ प्राणघात होने पर भी हिंसा का दोष नहीं लगता है।

(4) प्रमाद रहित होकर हमारे मुनिराज सावधानी पूर्वक देख कर चलते हैं, फिर भी अगर कोई चींटी आकर कुचल जाए, तो भी उन्हें दोष नहीं लगता है. इसी तरह जैसे कोई वैद्य या डाक्टर करूणाबुद्धि पूर्वक रोगी का उपचार करते हों, फिर भी किसी रोगी के प्राणों का घात होने पर भी उन्हें दोष नहीं लगता है.

(5) अतः जिस भव्यात्मा को निश्चय सम्यकदर्शन-ज्ञानपूर्वक प्रथम दो कषायों का अभाव हुआ हो, उस पंचम गुणस्थानवर्ती महापुरुष को ही सच्चे अणुव्रत होते हैं, लेकिन जिस व्यक्ति को निश्चय सम्यकदर्शन नहीं हुआ हो, उसके सभी व्रतों को सर्वज्ञदेव त्रिलोकीनाथ भगवान ने अज्ञानव्रत या बालव्रत कहा है।

57 पञ्च परमेष्ठी स्वरुप का साकार रूप है तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी

शाश्वत निर्मल और परम पवित्र तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी 20 या 24 नहीं, अपितु वह तो अनादिकाल से लेकर आजतक हुए अनन्त तीर्थंकरो की तपोभूमि है.

आगे होने वाले अनन्त तीर्थंकरों में से अधिकाँश तीर्थंकर भी तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी से मोक्ष पधारेंगे.

इन अनंत तीर्थंकरों से अनंत गुना ज्यादा सिद्ध भगवंत भी यही से ही मुक्ति पधारे हैं और आगे भी मोक्ष में गमन करेंगे.

अतः हमारा यह प्रिय तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी सभी जीवों की मुक्ति के लिए शाश्वत तीर्थ क्षेत्र है.

हमारे पञ्च परमेष्ठी स्वरुप का साकार रूप कोई है, तो हमारा यह तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी ही है.

यह तीर्थ क्षेत्र हमारे अपने अनादि-निधन स्वरुप को ही बतलाता है,

यह तीर्थ क्षेत्र हमे बताता है कि हमारे अंदर ही त्रिकाल के अनन्त तीर्थंकर भगवंत विराजते हैं.

अतः आपके लिए भी इस परम पवित्र सम्मेद शिखरजी की सच्ची वंदना तभी संभव है कि जब आप भी अपने अन्तरंग के चैतन्य प्रभो को लक्ष में लेकर अनंत तीर्थंकरों और उससे भी अनन्त गुना ज्यादा सिद्ध भगवंतों मोक्ष-कुल में शामिल हो जायें.

तभी आपका यह मनुष्य जन्म भी सार्थक होगा और फिर अनंत तीर्थंकर उसे धन्यावतार बतायेंगे.

57 निज कल्याण के लिए कम से कम विचार तो करें

अपने निज-कल्याण के लिये कृपया इन बातों पर गंभीरता से विचार कीजिये कि -

1. आप दो इन्द्रिय से पांच इन्द्रिय की त्रस पर्याय में कितने समय के लिए आये हैं?
2. जब आप त्रस पर्याय में मनुष्य अधिक से अधिक 48 बार ही बन पायेंगे, फिर आपका इसके बाद क्या होगा?
3. पूर्व में जब अनंत बार आप एकेंद्रिय और निगोद पर्याय में चले गए थे?
4. तब आपका उन निकृष्ट भवों में जाने का क्या कारण था?
5. क्यों हमारा पुण्य उस समय क्षीण हो गया था?
6. अब भविष्य में होने वाले जन्मो में आपके साथ फिर से ऐसी अनहोनी न हो, इसके लिए आप अभी क्या प्रयत्न कर रहे हैं?

हे चैतन्यदेव, ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिनका उत्तर आपको अपने कल्याण के लिए इस मनुष्य जन्म में निकालना ही चाहिए.
क्या आप ऐसा करना चाहेंगे?
आप प्रश्न कीजिये, मैं नय, न्याय, तर्क और वैज्ञानिक प्रमाणों से आपको हर प्रश्न का उत्तर दूंगा.
मैं यह नहीं कहूँगा कि इस शास्त्र में लिखा है, इसलिए इस बात को मानो ही मानो.
आत्म धर्म सिर्फ नय, न्याय, तर्क और विज्ञानं पर ही आधारित है.
इसीलिए इसे सच्चा वैज्ञानिक धर्म भी कहते हैं.

58 भव-रोग का इलाज ज्ञानी डॉक्टर से करवायें

1. क्या आप जानते हैं कि आप सबसे ज्यादा भयानक पीड़ा देने वाले भव-रोग से पीड़ित हैं.
2. क्या आपको पता है कि यह रोग आपको अनंत वर्षों से जन्म-मरण की पीड़ा दे रहा है?
3. क्या अब आप इस भव-रोग की बीमारी से दूर होना चाहते हैं?

अगर आप वास्तव में ऐसा चाहते हैं, तो आप एक सच्चे ज्ञानी डॉक्टर को तलाशें.
फिर थोड़ा सब्र और संतोष से उस डॉक्टर से इस भव-रोग का ट्रीटमेंट लें,

ताकि आपकी अनादिकालीन जन्म-जन्मान्तर की, जन्म-मृत्यु की पीड़ा और वेदना की बीमारी का निश्चित ही सर्वोत्तम उपचार संभव हो सके.

आप चाहें तो डॉ. सा. के बताये वीतरागी लेखों की दवाई और केप्सूलों का और उनकी मुक्तियाँ के इंजेक्शन का लाभ लेकर अपने निज-परमात्म स्वरुप का चिन्तन, मनन करें और उसे ही आत्मसात करें.

इससे आपकी नेगेटिव एनर्जी कम होना शुरू होगी और आपकी पॉजिटिव आत्मिक एनर्जी बहुत तेजी से बढ़ेगी.

तब आप शीघ्र ही इस भव-रोग से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर अपने आगे आने वाले अनंत काल के लिए सुखी हो सकते हैं.
इस भव-रोग के इलाज के लिए अपने डॉक्टर पर भरोसा रखें और अब आपको अन्य किसी भी डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं है.
हर दवाई को विश्वास से लेने से आपको निश्चित ही लाभ मिलेगा.
बस एक ही सावधानी रखें कि अन्य किसी भी डॉक्टर की दवाई या विचारों को गृहण नहीं करें.
तब आपका निश्चित ही हमेशा के लिए कल्याण हो जाएगा.

59 संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय को दूर करके आध्यात्म को समझें

जिस प्रकार समुद्र में गिर कर डूबा हुआ अमूल्य रत्न पुन: हाथ नहीं आता है,
उसी प्रकार यह मनुष्य शरीर, उत्तम श्रावककुल और जिनवचनों का श्रवण आदि का अद्भुत सुयोग भी बीत जाने के बाद पुन:-पुन: प्राप्त नहीं होते हैं।
इसलिए यह अपूर्व अवसर न गँवाकर आत्मस्वरूप की पहिचान करके और सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति करके यह मनुष्य-जन्म सफल करना चाहिये।
अपने चैतन्य परमेश्वर को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक जीव को आगम-शास्त्रों में लिखे और सच्चे देव द्वारा बताये तत्वों का पठन-पाठन और मनन को किसी भी प्रकार के संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय सरीखे तीन दोषों को दूर करके ही आत्मस्वरूप को जानना चाहिये.

1. संशय – कोई वस्तु इस प्रकार की हो सकती है, या उस प्रकार की; इस तरह के परस्पर दो भिन्न प्रकार के ज्ञान या भ्रम को संशय कहते हैं.

2. विपर्यय – सच्चे या वास्तविक वस्तु-स्वरुप के विपरीत यह मानना कि यह वस्तु इसी प्रकार की है या हो सकती है; ऐसे एकान्तिक या एक रूप ज्ञान को विपर्यय कहते हैं. यह तीन तरह का होता है –

a. कारण-विपर्यय

b. स्वरुप-विपर्यय

c. भेदाभेद-विपर्यय

3. अनध्यवसाय – यह वस्तु ऐसी भी हो सकती है या वैसी भी हो सकती है, इस प्रकार किसी भी निर्णय से रहित होकर किसी विचार में भ्रम की स्थिति होने को अनध्यवसाय कहते हैं.

हे प्रभो, आध्यात्म शास्त्रों में हर बात को बहुत ही स्पष्ट तरीके से समझाया जाता है.

अतः संसार की या धर्म की किसी भी बात को समझने के लिए आपको भी समझना चाहिए कि आप उसे संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय से रहित होकर जाने.

क्या आप अपने आगे के अनंत जन्मों को टालने के लिए शास्त्रों के किसी भी कथन को संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय से रहित होकर मानते हैं?

हे चैतन्य देव, आपने संसार के क्षणिक मिथ्याभावों का सेवन कर-करके,
संसार में भटककर, अनन्त जन्म धारण करके अनन्तकाल गँवा दिया है;
इसलिये अब आपको बहुत सावधान होकर आत्मोद्धार करना चाहिये।
अहो, आप इस संसार की और शास्त्रों की तो बहुत सी बातें याद रखते हैं और अपने ज्ञान पर अभिमान भी करते हैं, और किसी भी चर्चा में बार-बार हिस्सा लेते हैं,
लेकिन यह सब करते हुए आप भूल जाते हैं कि ऐसी जन्म-मरण की मरणान्तक पीड़ा को आपने अनंत बार सहन किया है.
अनंत केवली भगवंत आपको समझा भी रहे हैं कि इस जन्म का आपका एक मात्र कर्तव्य यह है कि जन्म-मरण से होने वाली ऐसी भयानक पीड़ा आपको आगे न हो,
बस इस बात का ही आपको ध्यान रखने योग्य है.
क्या अब आप आगे से आध्यात्म की हर बात को संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय को दूर करके ही समझने की कोशिश करेंगे?

60 खुद को भव्य-परमात्मा मानकर अपना आत्मोद्धार करें

इस संसार में सभी भव्य जीव परमात्मा ही हैं.
फर्क सिर्फ इतना ही है कि सिद्ध भगवंतों के केवलज्ञान के अनुसार भव्य परमात्माओं का मोक्ष का रिजर्वेशन अलग-अलग समय पर हुआ है,

लेकिन उन सबका मोक्ष में रहने का काल उनके संसार में रहने के काल से अनंत गुणा ज्यादा ही होता है,

इस अपेक्षा से सभी भव्य-परमात्मा हर द्रष्टि से अभी मोक्ष में रह रहे सिद्ध परमात्माओं के समान ही होते हैं.

अनाधिनिधन णमोकार मन्त्र में भी हम तीनो काल के समस्त पञ्च परमेष्ठी भगवंतों को नमस्कार करते हैं.

हमारे इस णमोकार मन्त्र के नमस्कार में त्रिकाल के सभी भव्य-परमात्मा का नमस्कार भी शामिल हो जाता है.

हे प्रभो, समयसार आदि उच्च कोटि के आध्यात्म शास्त्रों में बहुत गंभीर स्तर की चर्चा चलती है.

अतः बिना किसी भी मान्यता, राग या द्वेष के इन अमृत वचनों को अंगीकार कर,
मात्र अपने कल्याण का ही आपको निरंतर प्रयत्न करना चाहिये.
कभी भी, किसी भी व्यक्ति पर दोष लगाने की भूल कर भी कोशिश नहीं करना चाहिये.
हमेशा यह मानना चाहिये कि कोई भी जीव परमात्मा से कम होता ही नहीं है.
क्या फिर कोई भी व्यक्ति किसी भी परमात्मा के ऊपर ऊँगली उठा सकता है?
हे प्रभो, आपने मिथ्याभावों का सेवन कर-करके,
संसार में भटककर,
अनन्त जन्म धारण करके अनन्तकाल गँवा दिया है;
इसलिये अब आपको बहुत सावधान होकर सिर्फ आत्मोद्धार करने का ही प्रयत्न करना चाहिये।

61 आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करें

पुण्योदय से प्राप्त होने वाले सांसरिक सुख वस्तुतः दु:ख ही है,
क्योंकि वे पराधीन हैं,
विषयों का सेवन कराते हैं,
बाधा सहित हैं,
तथा पंचेन्द्रियों के भोगों से उत्पन्न होने के कारण पापबंध के कारण हैं।

हे चैतन्यदेव, अब आपको चाहिए कि आप आध्यात्म शास्त्रों में आये संसार के काल्पनिक सुखों को दु:ख सिद्ध करने वाले अनेकानेक वचनों को अपने ह्रदय में अंगीकार करके,

फिर संसार के सभी विषयों से अरूचि रखें,

तथा सुखस्वरूप भगवान आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करने की कोशिश करें.

क्या आप अब इस जन्म में आत्मा की सच्ची रूचि को जागृत करना चाहेंगे?

62 चैतन्यदेव के स्वरुप को जानें

सम्पूर्ण पर-पदार्थो में शरीर ही एक ऐसा पर-पदार्थ है,

जो इस चैतन्य प्रभो भगवान आत्मा से एकक्षेत्रावगाह रूप से सम्बन्धित है.

तथा चैतन्यदेव के जन्म से लेकर मरण तक इसके साथ रहता है.

इस कारण हर व्यक्ति को सरलता से इससे भिन्नता भासित नही होती है।

माता-पिता, भाई-बहन व स्त्री-पुत्रादि भी इसी के माध्यम से अपने ही लगते हैं।

हे चैतन्यदेव, अगर एक बार इस शरीर से आपका एकत्व-ममत्व टूट जाये,

तो फिर स्त्री-पुत्रादि रुपी इस संसार से भी ममत्व टूटते देर नही लगेगी।

शरीर से एकत्व-ममत्व तोडने का एक ही उपाय है कि आप खुद के अन्तरंग चैतन्य स्वरूप पर गहराई से विचार करें.

साथ ही आपको यह भी समझाना चाहिये कि आपका खुद के निज परमात्मा से किस प्रकार का सम्बन्ध है?

क्या आप उसे सच्चे अन्तरंग से स्वीकारते हैं?

इस बात पर जब भी आप सच्ची जिज्ञासा से चिन्तन करेंगे,

तब आपको खुद के निज चैतन्य प्रभो के सच्चे स्वरूप के अवश्य ही दर्शन होंगे।

यदि यह चैतन्यदेव एक बार स्वयं को सही रूप से जान ले,

स्वयं को अच्छी तरह पहिचान ले,

तो फिर उसे आत्मा के परमात्म स्वरुप में एकत्व हुए बिना नही रहेगा.
फिर उसे शरीर से भिन्नता भी भासित हुए बिना नही रहेगी।
क्या आप भी अब अपने चैतन्यदेव के स्वरुप को जानना चाहेंगे?

63 हमारे चैतन्यदेव में सर्वांग सुख ही सुख है

जैसे केले के तने को छीला जावे, तो कही से भी गूदा या सार नहीं मिलेगा,
इसी तरह इन्द्रियों के भोगें से कोई भी सार या फल नही निकलता है।
इन्द्रियों के भोगो की इच्छा से तो कषाय की ही अधिकता होती है, जिससे लोलुपता भी बढ़ती है और फिर जीव के हिंसात्मक भाव हो जाते हैं.
तब जीव धर्म भाव से भी च्युत हो जाता है;
अतएव पापकर्म का भी बंध कर लेता है।
इसलिये इन्द्रियों के भोग तो रोग के समान होते हैं और असार ही हैं।
जिस सुख के पीछे संसार के सभी लोग पागल हो रहे हैं,
वह सुख, सुख सा अवश्य भासता है, परन्तु वह सच्चा सुख नही है।
इन्द्रियों के भोग द्वारा प्राप्त सुख इच्छा रूपी रोग का क्षणिक उपाय ही है,
लेकिन यह उपाय इतना क्षणिक होता है कि उस सुख के भोगने से यह इच्छा का रोग और अधिक बढ़ता जाता है।
अहो, अनादिकाल से इस चैतन्य प्रभो भगवान आत्मा की अपनी स्वयं की भूल से, भ्रम से, अज्ञान से जो मति या बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है और

इस कारण वह क्या-क्या भूल कर रहा है, इसे समझाने के लिए निम्न सरल सांसारिक उदाहरणों का सहारा लेते हैं -

1. जैसे कोई व्यक्ति रस्सी को भ्रम से साँप मान ले,
2. जैसे पानी में चन्द्र की परछाई को देखकर कोई बालक उसे ही चन्द्रमा मान लें,
3. जैसे सिंह कुए में अपने प्रतिबिम्ब को देख उसे दूसरा सिंह मान लें,
4. जैसे पक्षी दर्पण में अपने को ही देख कर उसे दूसरा पक्षी मान ले,
5. जैसे पित्त ज्वर वाला व्यक्ति मीठी वस्तु को कड़वा मान ले,
6. जैसे मदिरा से उन्मत्त व्यक्ति पर-स्त्री को निज-स्त्री मान ले आदि.

इसी तरह इस संसार में मोहांध होकर जीव विषय-सुख को ही सच्चा सुख मान लेता है और अपनी इसी भूल के कारण वह अनादिकाल से चतुर्गति में भटक रहा है।

अहो मेरे चैतन्य सूर्य, आपका सच्चा सुख हमेशा आपके स्वाधीन रहते हुए ही प्राप्त होता है,
क्योकि वह किसी अन्य के कारण नहीं मिलता है;
इसलिए वह सहज है, निराकुल है, सम-भाव मय है,
आपका खुद का ही अपना निज-स्वभाव है।
इसलिए यह वास्तव में ऐसा ही होता है, जैसे कि -

1. इक्षु या गन्ने का स्वभाव मीठा होता है,
2. नीम का स्वभाव कड़वा होता है,
3. इमली का स्वभाव खट्टा होता है,
4. जल का स्वभाव ठण्डा होता है,

5. अग्नि का स्वभाव गर्म होता है,
6. चांदी का स्वभाव श्वेत होता है,
7. सुवर्ण का स्वभाव पीला होता है,
8. स्फटिक मणि का स्वभाव निर्मल होता है,
9. कोयले का स्वभाव काला होता है
10. खड़िया मिट्‌टी का स्वभाव श्वेत होता है,
11. सूर्य का स्वभाव तेजस्वी होता है,
12. चन्द्र का स्वभाव शीतल होता है,
13. दर्पण का स्वभाव स्वच्छ होता है,
14. अमृत का स्वभाव मिष्ठ होता है;

ऐसे अपने निज-परमात्मा का स्वभाव वास्तव में सुख, सुख और सुख ही है।

बस अब इस सहज चैतन्य स्वभाव को शीघ्र ही प्राप्त कर आप सभी अपना कल्याण कर लें.

1. जैसे नमक में सर्वांग खारपना होता है,
2. मिश्री में सर्वांग मिष्ठपना होता है,
3. जल में सर्वांग तरलपना होता है,
4. अग्नि में सर्वांग उष्णपना होती है,
5. चन्द्रमा में सर्वांग शीतलता होती है,
6. सूर्य में सर्वांग ताप होता है,
7. स्फटिक में सर्वांग निर्मलता होती है,
8. घी में सर्वांग चिकनाई होती है,
9. बालू में सर्वांग कठोरता होती है,
10. लोहे में सर्वांग भारीपन होता है,
11. रूई में सर्वांग हल्कापन होता है,

12. इत्र में सर्वांग सुगंध होती है,

13. गुलाब के फूल में सर्वांग सुवास होती है,

14. आकाश में सर्वांग निर्मलता होती है;

वैसे ही हमारे चैतन्यदेव में सर्वांग सुख ही सुख है और सुख तो हमारी आत्मा का अविनाशी गुण है।

इसलिये प्रत्येक आत्मा अपने अनंत गुणों में सर्वांग तादात्म्यरूप ही है और उसके हर अंग में समस्त गुण समाये हुए रहते हैं.

जैसे नमक का एक-एक कण जिव्हा द्वारा उपयोग करने पर लवर्णपने या खारेपने का स्वादबोध कराता है,

मिश्री का एक-एक कण उपयोग करने पर मिठासपने का स्वाद देता है;

इसी तरह आत्मा के स्वभाव का एक समय मात्र का अनुभव भी सहजसुख का ही सम्पूर्ण ज्ञान कराता है।

सभी परमात्मा सर्वत्र सहजसुख की पूर्ण प्रगटता से ही परमानन्दमय होकर अनन्त सुखी हैं; अनंत सिद्ध भगवंत भी इसी सहज सुख के स्वाद में ऐसे मगन रहते हैं, जैसे भ्रमर कमल के पुष्प की गन्ध में आसक्त हो, उसी में लीन हो जाता है।

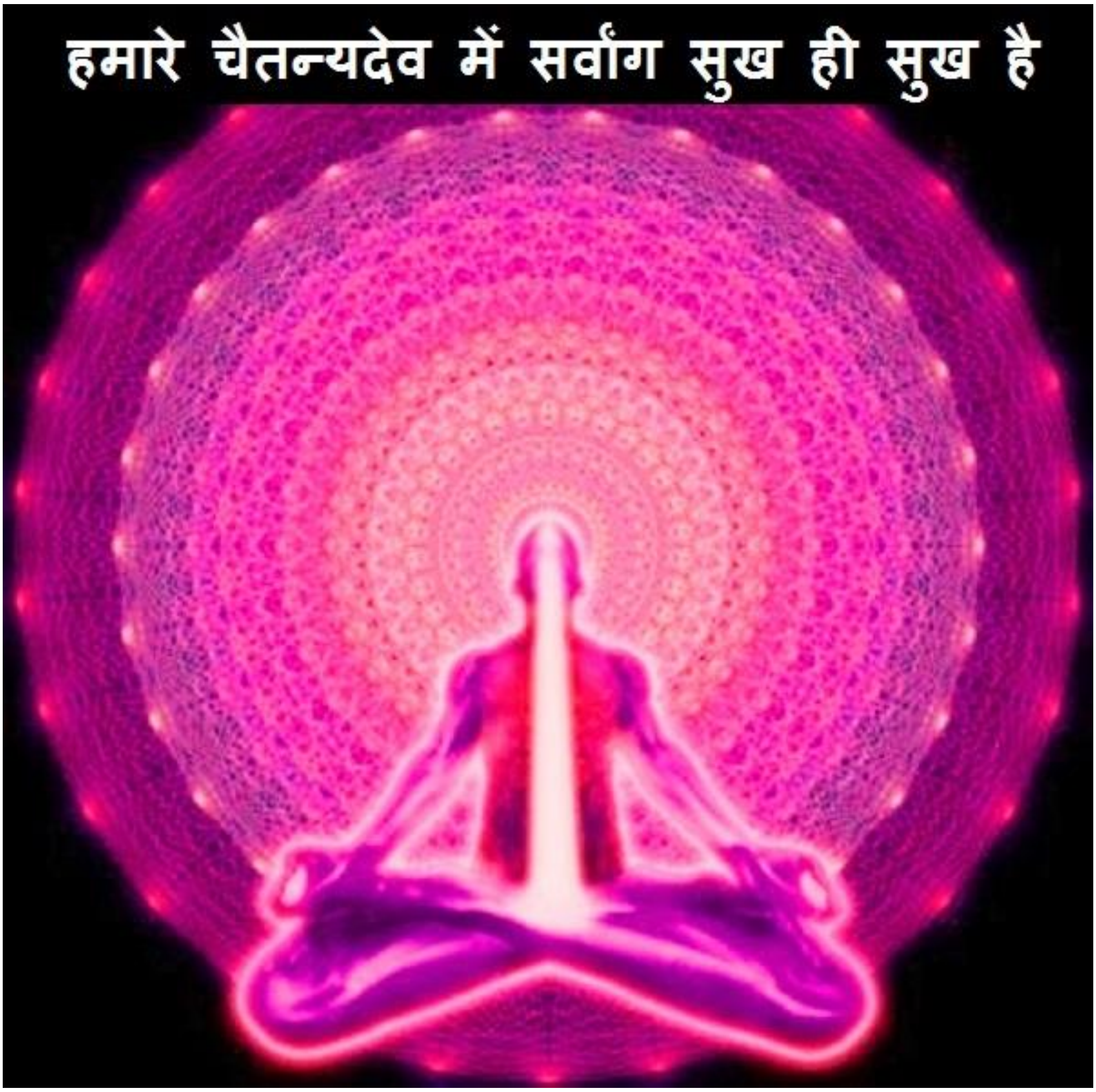

सभी अरहंत केवली इसी सहजसुख का स्वाद लेते हुए पांच इन्द्रियाँ और मन के रहते हुए भी उनकी और नही झुकते हैं और इस आनन्दमयी अमृत के रसपान को एक क्षण को भी नही त्यागते हैं।
सभी मुनिराज भी इस ही रस के रसिक हो सहजसुख के स्वाद को पाने के लिये और अपने मन को स्थिर करने के लिये अपने सभी परिग्रहों का त्याग कर प्राकृतिक एकान्त जैसे वन, उपवन, पर्वत, कंदरा, नदीतट आदि का आलंबन लेते हैं.

इससे यह सिद्ध होता है कि हमारे चैतन्यदेव में सर्वांग सुख ही सुख है. क्या आप इस सर्वांग सुख को पाना चाहेंगे?

64 सुख के असीम सागर में रमण करें

हे चैतन्यदेव, आप जानते ही हैं कि आपका यह मानव शरीर एक दिन जरूर बदल जायेगा,

लेकिन शरीर धारण करते हुए भी आपका शुद्ध द्रव्य या आत्मदेव तो सदाकाल एक समान ही चैतन्यवान बना रहता है।

अहो, यह शरीर तो जीव और पुदगल द्रव्य से ही रचित्त है और अनादिकाल से दोनो का साथ इस संसार में हो रहा है।

लेकिन फिर भी जीव और पुदगल में एक दूसरे के विपरीत वैभाविक परिणामन बना ही रहता है।

इस बात को जो भी महापुरुष अन्तरंग से जान और समझ लेता है, फिर उसका सुख के असीम सागर में रमण होना निश्चित हो जाता है.

65 णमोकार महा-मन्त्र का जयकारा लगायें

1. हम सभी जिस णमोकार मन्त्र का स्तवन करते हैं, वह अनादिनिधन महा-मन्त्र कहलाता है.

2. इस मन्त्र में हम त्रिकाल के सभी अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनियों को नमस्कार करते हैं.

3. जो भी भव्य जीव होते हैं, वे कभी न कभी मोक्ष अवश्य ही जायेंगे.

4. अतः वे भी कभी न कभी अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि बनेंगे.

5. अतः मैं तो अपने नमस्कार मन्त्र में उन सभी का पञ्च परमेष्ठी के रूप में स्तवन कर आज ही उनको नमस्कार कर रहा हूँ.

6. आप सभी लोग भी मेरी द्रष्टि में भव्यात्मा ही हैं,

7. इसलिए जब भी मैं णमोकार मन्त्र का स्तवन करता हूँ, तब उसमें अपने आप ही आप सभी भव्य-परमात्माओं को नमस्कार हो जाता है.

8. साथ ही मुझे लगता है कि इस पुरुषाकार के तीन लोक का स्वामी मैं स्वयं ही हूँ

9. इस चारों ओर फैले छः द्रव्यों की अनंतानंत पर्यायों को अपने इस त्रिलोकाकार के अंदर ही मैं देख और जान रहा हूँ.

तीन लोक के सम्राट का मानवाकार रूप

10. अतः हे प्रभो, आप भी अनंत सिद्ध भगवंतों द्वारा सदाकाल देखे जा रहे अपने खुद के भव्य-चैतन्य-परमात्मा के स्वरूप को मान कर,

11. तीन लोक, तीन काल को अपनी द्रष्टि में लेकर,

12. उसे आलोकित करने की भावना रख कर

13. इस णमोकार मन्त्र का सतत जयकारा लगायें.

66 अन्तरिक्ष की अनंतानंत निगोदिया जीव राशि में जाने से डरे

अहो, कितनी अद्भुत बात है कि साक्षात तीर्थंकर भगवान की वाणी और उसकी ॐकार ध्वनि के श्रवण से होने वाला ज्ञान भी सब ज्ञेय है और हेय है.

अज्ञानी जीव ही इस तरह के ज्ञेय और अन्य सभी सांसारिक ज्ञेयों में आसक्त होता है।

केवलज्ञानी भगवंत की ॐकार वाणी को सुनकर जीव अगर विचार भी करे, तो भी उसका कल्याण नहीं होता है.

क्योकि सिर्फ विचार करने मात्र से कोई भी जीव अंतर में नहीं जा सकता है.

उस विचार में जो जीव रुक जाता है, वह तो परज्ञेय में आसक्त हुआ कहलाता है

लेकिन पर में आसक्ति से जीव अपने निज-स्वरूप में कैसे आ सकेगा?

अतः उसे साक्षात् तीर्थंकर भगवंत की भी देशना या उपदेश का लाभ नहीं मिलता है.

क्योकि सभी भगवंतों का आदेश है कि आप आपने आत्मा में प्रवेश करें.

लेकिन आज तक आपने इस आदेश को जानते हुए भी कभी भी नहीं माना है,
इसलिये आपको आज तक अपने निज-चैतन्य तत्व की प्राप्ति नहीं हुई है.
इस तरह तो आप निज चैतन्य तत्व की विराधना ही कर रहे हो.
इस तरह से तो आप खुद की विराधना और अतत्व या संसार की आराधना कर रहे हो.
हे प्रभो, यह बात समझने में किसी तरह से भी कठिन नहीं है.
शास्त्रों में आता है कि प्रत्येक जीव ने अनंत बार ग्यारह अंग रूपी असंख्य शास्त्रों का ज्ञान पाया है.
शुक्ल लेश्या प्राप्त कर केवली भगवान के पास भी असंख्य बार गया है,
लेकिन फिर भी आपने अनंत तीर्थंकरों द्वारा बताये मार्ग के अनुसार खुद के चैतन्य परमात्मा में प्रवेश ही नहीं किया है.
इसलिए ही शास्त्रों में आपको ज्ञेयों में लिप्त और आसक्त कहा जाता है.
ज्ञेयों में लिप्तता और आसक्ति का फल अनंत निगोद है.
पूरा ब्रह्माण्ड ही ऐसे अनंत अनंत अनंत अनंत निगोदिया जीवों से ही भरा हुआ है.
ब्रह्माण्ड के हर हिस्से में ये निगोदिया जीव कूट-कूट कर भरे हुए हैं.
पहले वैज्ञानिक मानते थे कि ब्रह्माण्ड के खाली स्थान में कोई भी पदार्थ उपस्थित नहीं है.
लेकिन आज के वैज्ञानिक मानते हैं कि यह स्थान ब्लेक मेटर या ब्लेक एनर्जी से भरा हुआ है और इसके 200 क्यूबिक किलोमीटर क्षेत्र का भार मात्र एक ग्राम है.

इसे आप इस तरह से भी समझ सकते हैं कि अन्तरिक्ष के पृथ्वी जितने बड़े क्षेत्र में उपस्थित ब्लेक मेटर का वजन मात्र 3 ग्राम ही होता है.

अब आप समझ सकते हैं कि इतने विशाल क्षेत्र में रह रही अनंतानंत जीव राशी का वजन मात्र 3 ग्राम ही रहता है.

आज भले ही विज्ञान इस ब्लेक मेटर को चैतन्य प्राणी नहीं माने,

लेकिन एक दिन वे भी अन्तरिक्ष को चैतन्य प्राणियों से ही भरा हुआ मानेंगे.

क्या अब आपको ब्रह्माण्ड के इन अनंतानंत निगोदिया जीव राशि में जाने से डर लगता है?

अगर हाँ, तो तुरंत किसी सच्चे प्रत्यक्ष सद्गुरु का दामन थाम लें.

67 तेल तो पानी के ऊपर ही ऊपर तैरता रहता है

जिस प्रकार तेल और पानी को कितना भी मिलाया जावे,

लेकिन फिर भी रखने पर तेल तो पानी के प्रवाह में ऊपर ही ऊपर तैरता रहता है.

पानी के अन्तरंग में प्रवेश नहीं करता है.

इसी प्रकार यह संसार तो आपके निज-चैतन्य पभो के प्रवाह में ऊपर-ऊपर ही तैरता रहता है. कभी भी चैतन्य के दल में उस विकार रुपी तेल का प्रवेश और मिलन होता ही नही है.

क्या अब आप इस सच्चाई को जानकर अपने निज चैतन्य प्रभो को गृहण करना चाहेंगे?

68 विकराल काल या मृत्यु रुपी सिंह झपट्टे मारकर दौड़ता आ रहा है

अगर आपके पीछे कोई विकराल सिंह झपट्टे मारकर दौड़ता आ रहा हो,

तब आप जान बचाने के लिए कैसी दौड़ लगाओगे?

ऐसी भयानक और डरावनी स्थिति में क्या आप कहीं पर भी आराम करने के लिये रुक सकते हो?

काल-सिंह ने मृग चेतन को घेरा भव-वन में

इसी तरह हे प्रभो, विकराल काल या मृत्यु रुपी सिंह अब आपके ऊपर झपटने के लिये दौड़ रहा है.

लेकिन आप तो अभी भी निश्चिन्त होकर संसार के बहुत से कार्यों को कर रहे हो.

आपने अभी तक अपने चैतन्य तत्व को पाने का तो कोई भी प्रयत्न ही नहीं किया है.

क्या आपको अब भी इस विकराल काल या मृत्यु रुपी शेर का कोई भी डर नहीं लग रहा है?

हे प्रभो, एक पल के लिए अब तो अपने चैतन्य के अन्तरंग की शीतल शांति में विहार करें.

फिर आप निश्चित ही इस शेर से बच जायेंगे.

69 त्रैकालिक ध्रुव स्वभाव को मुख्य करें

1. अहो, सिर्फ बूँद बराबर पर्यायार्थिकनय से देखने पर पर्याय द्रव्य से अभिन्न है, ऐसा कथन बन सकता है,

2. लेकिन समुद्र सरीखे आपके सम्पूर्ण चैतन्य द्रव्य को केवलज्ञानी की तरफ से या उनके प्रमाणज्ञान से देखने पर हम ऐसा नहीं कह सकते हैं.

3. आगम शास्त्रों में ऐसा कहा जाता है कि पर्याय वास्तव में क्वथंचित भिन्न है और क्वथंचित अभिन्न है

4. परन्तु शुद्धनय के विषयभूत आपके अपने त्रैकालिक ध्रुव की अपेक्षा से देखने पर वास्तव में द्रव्य से पर्याय भिन्न ही होती है।

5. पर की अपेक्षा से पर्याय रहित चैतन्य-द्रव्य नहीं है,

6. वास्तव में स्व की अपेक्षा से पर्याय रहित द्रव्य रहता है।

7. पर्याय और द्रव्य दो भिन्न सत्ताएँ है।

8. वास्तव में व्यक्त को अव्यक्त स्पर्श नही कर सकता है,

9. इसलिए पर्याय को द्रव्य स्पर्श नही करता है.

10. अहो, चैतन्य भगवान को लक्ष्य में लेने वाली पर्याय भी वस्तु में होती ही नही है.

11. इसलिये पर्याय को पर या परायी मान कर उस पर से आपको अब अपना उपयोग हटा लेना चाहिये.

12. आपके निज परमात्मा को पाने के प्रयोजन की सिद्धि के लिए तो आपको पर्याय को गौण करना ही पड़ेगा,

13. अतः समस्त पर्यायों को अविद्यमान ही मानना उचित है.

14. फिर त्रैकालिक ध्रुव स्वभाव को मुख्य करके भूतार्थ का आश्रय लेने से ही आपका कल्याण निश्चित ही संभव है.

15. तभी आपको आपके निज चैतन्य-परमात्मा के दर्शन अवश्य ही होंगे.

70 हेय-उपादेय

1. किसी भी तरह के विकल्प या लक्ष्य को छोड़ देने का नाम हेय है

2. चैतन्य-वस्तु को पकड़ना, उसका नाम उपादेय है।

3. कोई भी व्यक्ति अगर सोचे कि यह हेय है, यह उपादेय है,

4. ऐसा मानता रहे, उसका नाम हेय-उपादेय नही है;

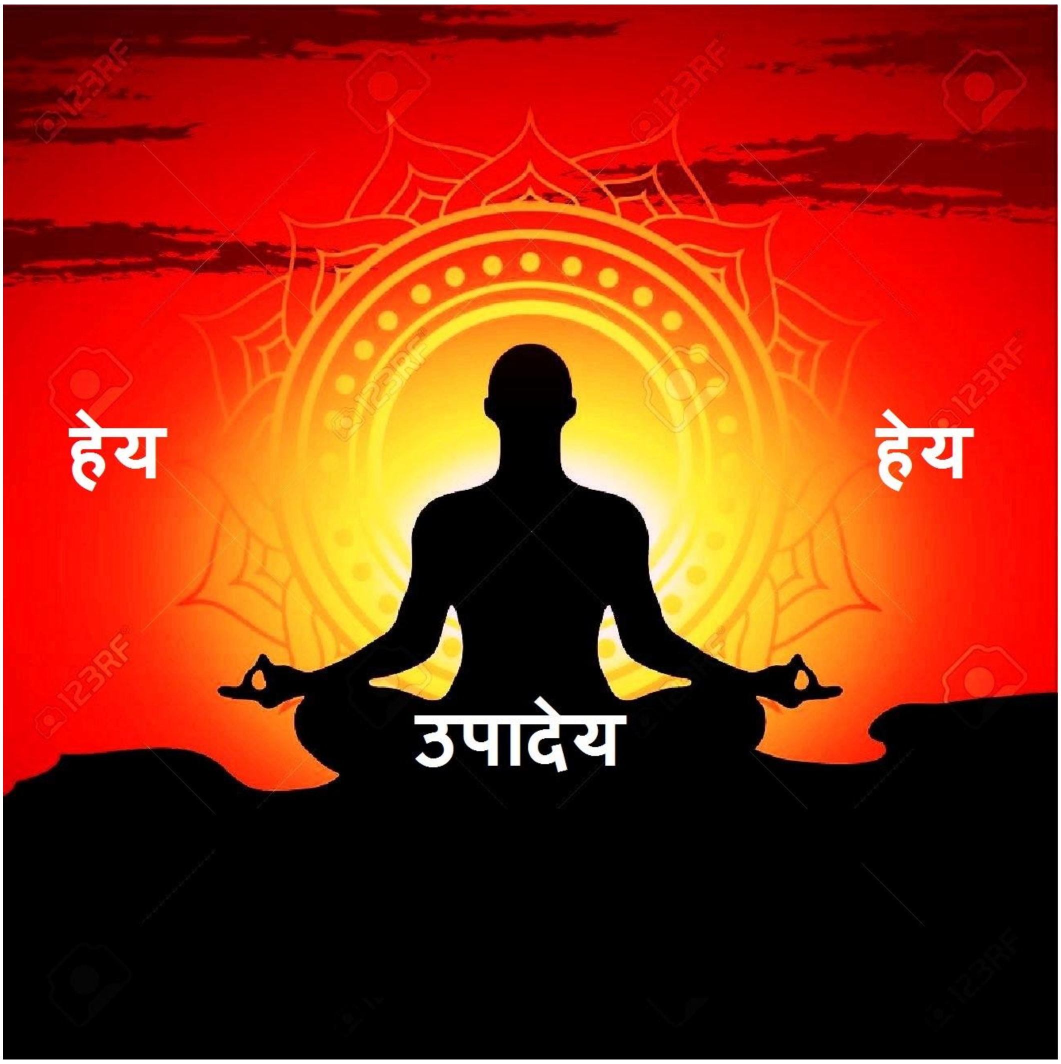

5. बल्कि जो भी सच्चा जिज्ञासु जीव चैतन्य वस्तु का अन्तरंग से चिन्तन करे, उसका नाम उपादेय है।

6. हे प्रभो, जब भी आपका चैतन्य प्रभो का आपके निज आत्मा में एकाकर होगा, तब ही आत्मा उपादेय हुआ, ऐसा कहा जा सकता है।

7. तब ही रागादि का लक्ष छूट गया है, उसे आपने हेय किया है, ऐसा कहा जा सकता है।

8. अतः अब इस सच्चे हेय-उपादेय का स्वरुप जानकर उसे अन्तरंग से गृहण करें.

71 अत्यन्त सस्ती और सरल

निज चैतन्य-वस्तु को प्राप्त करें

1. हे प्रभो, आजतक आपने अपने सहज-सुख के लिये एक क्षण भी शान्त होकर विचार नही किया है।

2. जिस निज-वस्तु को अनंत तिर्यन्चों ने भी प्राप्त किया हो,

3. उसके लिए यदि जीव विचार करे,

4. तो वह निज-वस्तु अत्यन्त सस्ती और सरल है।

5. परन्तु उसे पाने के लिए जीव के अंदर तीव्र जिज्ञासा, उत्कंठा और तत्परता चाहिए.

6. अहो, जिस महापुरुष का इस संसार से जब भी रस या मोह छूट जायेगा,

7. तो उसका आत्म-स्वरूप अवश्य ही प्रगट होगा।

8. आप चाहो, तो यह काम अभी हाल ही में तुरंत ही कर सकते हो.

9. क्या अब आप खुद की अत्यन्त सस्ती और सरल निज चैतन्य-वस्तु को पाना चाहेंगे?

डॉ. स्वतंत्र जैन के प्रति
लोगो के ह्रदयोदगार
तथा स्नेह पूरित भावाभिव्यक्ति

Kripashankar Pandey

डॉ०साहब ! एक वीतराग सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन और एक महान कर्मयोगी की तरह नरनारायण की निस्वार्थ सेवा..

आपके व्यक्तित्व के इन दो पहलुओं ने मेरी दृष्टि में आपको एक सच्चा महात्मा घोषित किया है..

आपके चरणों में मेरे प्रणाम निवेदित हैं..!

हार्दिक कृतज्ञता..! अहोभाव..!!

मेरी शुभकामना है कि आप ऐसे ही गीतोक्त कर्मयोग के मार्ग पर चलकर स्वरूपस्थ हों ...!! ॐ.....!

Mangilal Chandan
श्रीमद् जी तो दूसरे महावीर थे.
इसमें कोई संका नहीं, कोई सनदेह ही नहीं !
बहुत ही सुन्दर लेख लिख कर आपने लोगों को जागृत किया हैं
धन्य हैं आप Dr स्वतंत्र जी
आपकी विचार श्रेणि अति उत्तम हैं
आपकी विचार धारा आत्मा से परमात्मा तक पहुचाने में मार्ग दर्शक हैं
आदरणीय पंडितजी श्री फुलचन्दजी शास्त्रीजी की तरह
आप के भी उच्चविचार हैं
खूब खूब अनुमोदना

Poczta kwiatowa bydgoszcz
June 1, 2017 at 1:44 pm

**Undeniably believe that which you said.
Your favorite justification appeared to be on the net
The simplest thing to be aware of.
I say to you,
I definitely get irked
While people think about worries
That they plainly don't know about.
You managed to hit the nail upon the top
And defined out the whole thing without having side effect,
People can take a signal.
Will likely be back to get more.
Thanks**

Manu Bharradwaj
साधुवाद महोदय !
आपकी हर पोस्ट मानव उत्थान की है।
ईश्वर सदा आपके साथ रहें।

Anurag Goel

आपका कार्य बहुत प्रशंसनीय और अदभुत है और हम सभी को सामाजिक सरोकार की प्रेरणा भी देता है
आपकी लगभग सभी पोस्ट मैं share करता हूँ और

यथा सम्भव उसका print अपने institute में भी लगाता रहता हूँ
आप इसके लिये बधाई के पात्र हैं
कृपया pdf मेरे id पर भी भेजने की कृपा करें जिससे ज़रूरतमंदों को उपलब्ध कराई जा सके
धन्यवाद

Abhishek Jain
5 star*
अद्भुत है डॉ० साहब,
आपका यह एक महान कर्मयोगी की तरह नर-नारायण की निस्वार्थ सेवा
तथा एक वीतरागी सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन.

Sulochana Dagli

Dr.Sahib
Paranam
aapko hardik badhai
aap ek Adhayatam jagat ke ek Tejesvi Prakash Stambh hai
aapke nishara me hum sab prakashsit ho rahe hai
aapka yai karya hum sabko adhayatam punj se bandhe rakh raha hai
aap hamare aadarsh hai

Mangilal Chandan
बहुत ही सुन्दर लेख हैं
धन्य हैं आप
जैन धर्म के रत्नों में आप भी एक
रत्न हैं ....
डॉक्टर स्वतंत्र जैन
प्रणाम सा.

Poczta kwiatowa radom

ay 31, 2017 at 5:22 pm
If some one wishes expert view concerning running a blog afterward
I propose him/her to pay a quick visit this web site,
Keep up the nice work.

Swami Roopam
बहुत ही हृदयगामी
प्राञ्जल
शिक्षायुक्त
सर्वकल्याणी

बौध प्रदाता
और क्या क्या नही ?
वाह यही है सत्य ।
इसीलिए राजा लोग नंगें ही पाँव चल कर महात्माओं का सानिंध्य पाने जाया करते थे।

Dinesh Chandra Shah

डॉ.साहब, आप पञ्च परमेष्ठी का स्मरण करते हैं,
ज्ञायक में रमण करते हैं,
मिथ्यात्व का वमन करते हैं,
इसलिए मै आपको नमन करता हूँ ।

Poczta kwiatowa 24h

ay 31, 2017 at 4:59 pm
I enjoy the efforts you have put in this,
Appreciate it for all the
reat posts.

Rana Thakur

Sir aapki post or jankari ko Mene bhut se ese logo ko batya he Jo doctor ki fees na de pane ke Karan bacho k na dikha pate the.
imonia jesi Kai binaries sahi ho gai he sir.
Sabse pehle to Mene hi apne bête ko diya tha treatment.
Bilkul sahi ho gya aapk bhut bhut aabhar mere or mere jese logo ka.
Kal ek bujurg ko khasi ki dava lakar di
Badi Kush thi aaj mili.
Boli beta meri khasi sahi ho gi
Pese dene lagi
Me bola Amaa ji meri to bête ko laya tha, vo sahi ho gya
Ab aapke kaam aa gi
Aap sirf dua de.
Ye hamre group ki dava he.

Maa Tara —
5 star⁕

बहुत ही सुन्दर एवं अनुकरणीय विषय जिसे अपनाकर स्वस्थ शरीर रखा जा सकता है।
डॉ.साहब का अनेक धन्यवाद् जो लोगों को सही मार्ग दर्शन कर रहे हैं।
जय माँ तारा !

Kamal Kumar Johari
बार बार मन आपको प्रणाम करता है और यह आवाज आती है कि
इस युग मे आप महान पुरुष है
इसलिए पुनः प्रणाम

Onkar Singh Rana
5 star*
Bahut khoob Ji,
kaya baat hai Ji,
Sir main bhi thoda bahut Ayurveda ka gyan rakhta hoon,
aur logo ko batata rehta hoon Ji,
aapki post padh kar maza aa gaya Ji,
may Sahib Ji bless you.

Sumer Jat Muktiya –
5 star*
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

CP Gupta —
5 star*
Aap bahoot achha kary Manav Sewa ke liye kar rahey h,bahoot kam log kartey h, sarahniy kary ke liye many many thanks

Pushpendra Naik
मैंने 1973 में आयुर्वेद एवं एलौपैथी से इंटीग्रेटेड स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है, तत्कालीन वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक डा० खुशीराम शर्मा दिलकश के मार्गदर्शन में 1975 में उ०प्र० प्राकृतिक चिकित्सा परिषद से प्रशिक्षण प्राप्त किया है
अपने 40 वर्ष से भी अधिक चिकित्सा व्यवसाय के अनुभव के आधार पर मैं निःसंदेह कह सकता हूँ कि डा० स्वतंत्र जैन के कथन से पूर्ण सहमत हूँ
एंजियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी के अपने लाभ हैं परन्तु जहॉ तक मैं समझ रहा हूँ कि डा० जैन गैर जरूरत सर्जरी के प्रति जनचेतना जगाने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं

Tikendra Sahu —
5 star*
Bahut prabhawit hu aapki sewa bhawna se......sahej k rakhane yogya jankariya aapke dwara d jati hai.bahut km log aapke jaise hote hai.pranam

Vasudeo Chandwani

मेरे गूरुजी पूज्यनीय श्री तरूणसागर जी महाराज आप ही की तरह
ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते रहते है

Mamta Jaindaga
Aap Bhagwan ke avatar me is dharti pr aaye ho.....
my first God is Mahavir n second is U Sir

Sudhir K Srivastava
Priya Dr. Jain, saprem vande.
Aapne "SWASTH RAHO SWASTH KARO" post mere
e-mail par bheja, maine ise padha.
Mai aapko kin shabdo me dhanyavad dun
samajh nahi aa raha,
phir bhi aap mera hardik dhanyavad sweekar karen.
Mera aapse vinamra nivedan hai ki aap apne anubhoot prayogon ki jankari
mere mail par bhejne ki kripa karte rahe,
aapka sada abhari rahunga.

Manu Bharradwaj
धन्यवाद इंजिनियर+डॉ. जैन
उस सब के लिए जो आपने मुझे व मेरे द्वारा भेजे emails पर भेजा।
साथ ही उस सब के लिए जो आप मानवता के लिए कर रहे हैं।
ईश्वर आपको और शक्ति तथा दीर्घायु प्रदान करे।
अस्तु। पुन:धन्यवाद !

Vikas Shivhare
Respected sir aapne bahut acchi jankari di thank you sir
Adv. Sanjeev Abrol
Cell 9855200503
Thanks doctor sahib for this wonderful book.
I am very thankful to u.
I will forward this book to all of my friends.
Regards

Virendra Sharma
अत्यन्त सेवामूलक एवं गरिमामय कार्य।
इस महान कार्य की जितनी प्रशंशा की जाए, कम ही होगा।
पराशक्ति प्रेरित कार्य हेतु माँ भगवती सदैव सहयोग करें एवं आप सपरिवार पर उनकी कृपा बनी रहे।
आपका कल्याण हो।

Cp Jain
Aapka prayas bahot he sarahniya he.
Dharm ke kshetra me bhi aur swasthya ke kshetra me bhi

ahot he achha lagta he aapke articles padhkar.

Sumer Jat
Muktiya — 5 star
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है,
उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

Sanjiv Kumar Swarnkar
Muktiya — 5 star
This is a very useful and good healts information

Deepak Ladha —
5 star*
Very good service provided by you thanks for these types of service

NandKishore Darak
डॉक्टर सां आपके लेख तो स्वास्थ्य के लिए क्रान्तिकारी है

Davinder Dhillon —
5 star*
Very nice very much good tips
Very important & beneficial

Vasudeo Chandwani
भाईजी आप की कोई पोस्ट गलत हो नहीं सकती ।
हर पोस्ट से ज्ञान गंगा का अमृत मिलता है ।

Anand Singh
Dr swatantar jain saab ki jai ho
Bhart ka veer real hero

मनोरंजन पाल आर्य
डॉ. साहब प्रणाम
आपका एक पीडीएफ है मेरे पास स्वस्थ रहे स्वस्थ करे.
इस पीडीएफ के द्वारा मैंने मैंने बहुतो को उपचार बताया जिसे बहुत लाभ भी हुआ
जिसमे से ओरिसा के एक भाई का एपेंडिस ठीक किया
पीलिया ठीक किया !
क्या आपके पास और दूसरा भी कोई पीडीएफ फ़ाइल है
क्योंकि मुझे एक भी फलेरिया के बारे में पूछा था
मैंने उसे उपचार तो बता दिया
क्योंकि एक बार आपका पोस्ट आया हुआ था फेसबुक में वही बताया है

क्या कोई और पीडीएफ है
आपके पास जिसमे इस भी बीमारी के उपचार बताया हुआ हो
क्योंकि उस पीडीएफ में फलेरिया का उपचार नही है
धन्यवाद

स्नेहलता जैन —

5 star⁎

आपकी जन कल्याण और विश्व सुख, शांति और सम्रद्धि की भावना अत्यंत सराहनीय है.

Dharmendra Singh Parihar —

5 star⁎

बहुत ही सुन्दर प्रयास ! ईश्वर आपको सफलता प्रदान करे |

Dinesh Chandra Shah
Aap adhyatma jagat ke Dedipyaman nakshatra ho

Raju Raju —

5 star⁎

Guru ji aap mahan hi ni swarth aap jan sewa kurtay hi aap ko mera koti koti parnaam

Divya Jain —

5 star⁎

Dr sir, lakho logo ki duaye apke sath hai.
Bhagwan lambi umar de apko

Sumit Motwani
Sir me apke diye upchar fb pr dekhta hu.
apko naman jo aap sub ka sochte hai.

Nandan Mahalwal
Shadhey Dr Muktiya Ji.
SAMAJ. KO DI JANE WALI SEWA KE LIYE
HAM AAP KAA " SAMMAN " KARTE HAIN.
DHANYAWAD. BHAIYA JI

Rohit Singh
Dr sir parnam sir mai apki batai dwai 2 moth she kha RHA hu colistrol kam krne ke liye muje bhut fayda ho RHA h lekin sir mane blood test karwaya h avi to baki sab thik h lek in sir mera thaioraid tsh 6.16 a RHA h Jo Jada h plzz sir muje thairoid normal karne keep liye dwai btaye sir dil se dua deta hu apko ap sa□chat bhagwan ho

Pushpa Sethi Maggu

Thanks for yr great efforts towards the right diection to people in this professional world

Anand Singh
Dr swatantar jain h to hosla buland h thanks

Ashish Bhandari
अंधत्व की पीड़ा।अद्भुत अलौकिक लेख।
हम जैसे अज्ञानियों को राह दिखाने वाला।
आपका अनंत उपकार

Kamalakar Dhabulkar
Koi Magaveer bankar kis roop me janm leta hey aur Dukhiyo ki seva karta h.
Example aapka hi - Din dukhiyo ki anwarat seva hi Dharm

रूद्र नाथ निखिल
प्रिय डॉक्टर साहब नमस्कार
आपकी इस सेवा को देखकर ह्रदय प्रसन्न हो गया है,
आप जैसे डाक्टर बहुत कम मिलते हैं इस धरती पर,
आप जन कल्याण और समाज की जो सेवा कर रहे हैं उसके लिये मैं ह्रदय से आपका बहुत बहुत स्वागत और धन्यवाद करता हूँ,
मैं महादेव से प्रार्थना करता हूँ की महादेव और धन्वन्तरि आपको यश कीर्ति के साथ उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करे

Pushpa Maggu
Sir u are truly work for the people & god bless u with good health and longevity

Naresh Nayak
Thanks sirji. aap ka kam kalyug me bhagvan jaisa hai
Aapko or koi mand□r jane ki jarurat nahi.

Shantnu Sharma
dr sar lakho logo ki duaye apke sath h bhagwan lambi umar de apko

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! सादर नमन् और अहोभाव..!
समस्त धर्मों का चरम उद्देश्य अनन्त काल के लिये स्वरूपस्थिति ही है।
जब तक यह देह है इसके लिये सेवा ही परमधर्म है जो आपके आचरण में सुस्पष्ट है।
भगवान् महावीर की स्थिरचित्तता मैं भी इसी जीवन में अनुभूत कर सकूँ ;
इस हेतु आप महानुभाव का आशीर्वाद और स्नेह मुझे पुस्तकरूप में प्राप्त हो...

यह मेरे लिये परमसौभाग्य होगा...!!

मेरा पता ह.... डॉ० कृपा शंकर पाण्डेय C/O श्री लाल चन्द्र मिश्र E.W.S. 44 , नीमसराँय कालोनी मुण्डेरा चुंगी, जनपद-इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, पिनकोड- 211014

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Sk Pandey
Is jankari ke liye aapko jitna bhi very nice thanks bola jai vah kam hi hai. Thank~~~~~~~~~~~~~~~~~s

Jagjeet Jandu
Dear doctor sabh I have downloaded your books and prescribing the medicine to our known free of cost as you proclaimed that we have to make india allopathic free so I am also striving a little in this direction.regards j s jandu

Rajesh Gupta
डॉक्टर साहब आप मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं।

Mukesh Singh
Namaste sir..
Aapke dwara di gai jankari kafi upyogi hoti hai aur sabse mahawapurna hai aapki niswarth sewa
Jaha aaj ke date me log ek dusre ke dushman bane hain, jyada se jyada dhan kamane ka swarth hai wahi aapki ye nishwarth sewa prashansniye hai aur is kary me shayad aapke dharm ka bhi mahatwapurna yogdan hai
Aapki post mai gahanta se padhta hu.

Yogesh Arya
डा. सहाब नमस्कार मेरे लिऐ बेहद गर्व की बात है कि आप जैसे महान व्यक्तित्व मेरी मित्र सूची की शोभा बढाऐ हुऐ हैं हर रोज आपकी पोस्ट स्वास्थय की दृष्टि से बेहद महत्व पूर्ण जानकारी से परिपूर्ण होती है मैं आपकी सभी पोस्ट अक्सर पढता हूँ आपसे निवेदन है अपनी अब तक की सभी पोस्ट कृपया मेरे ईमेल पर भेंजने की कृपया करें

Anil Mathur
सराहनीये कदम है आपका... ईश्वर आपको लम्बी आयु दे

Nitin Singhal
I am doing it every day after learning it from you and its very helpful... highly recommended... thanks for all the wonderful info

Mahesh Jaiswal
डां0 साहब सुप्रभात आप को समाज के लिए इन सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद

Gopal Narayan

अति महत्वपूर्ण जनहित कार्य कर रहे हैं ..दिर्घायु

Anand Singh
Jain saab you are real hero of India

Vishal Satija
Dr sir It's nice and a great work for humanity ki ap Bahaut sare facts Bina kisi personal benefit k share karte h. Thanks alot for that.

Cherry McGill
ap manavta ki sew ka bot acha kam kar rhe h

Rohit Singh
Hath jodkar parnam karta hu Dr sir apko logo ka bhala kar rhe h ap lakho duaye milegi apko

Pushpendra Naik
I think that due to essence of my good karmas I have to know about you yesterday by your post on cardiac treatment. I am also an ayurvedic professional, retd. as distt. ayurvedic officer, Lalitpur, U.P. in 2011. Individually I am studying and working about Spiritual Treatment and now interested to work under your guidance.

Hansa Rohit —

5 star⁎

apka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge......
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best

Vinay Vishwas
Thank you Sir....Thank you very much....I am filled with gratitude for what you are doing for humanity.....thanks a lot..

नरेंदर कुमार भादू

बहुत ही सुंदर विचार हैं चिरंजीवी भव सदा सुखी रहो शुभ प्रभात

Sudhir Rathi
आपके लेखो को पढ़कर सुख मिलता है

Rohit Singh

dr sar ap m□han ho bhagwan apka bhla kre garibo ki lakho duaye apke sath h

Kamal Kumar Johari

sir, i arrang satsang on every sunday and convey ur message to each participants. They are also being benifited. I shall feel obliged if u send me ur book to me

B.k. Chatter
Wah kya khub ati sunder salah rog ko jad se samapt karne ka aachuk nuskha, bahut Bahut aanumodna

Prabhat R. Sharma
Great source of life you provide to all. Well done Sir

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Dev Khandelwal
koti koti dhanyvad aapka

Kripashankar Pandey
इस कलियुग में आप स्वरूपस्थिति की बात करते हैं, यह तो अद्भुत है.
निश्चित ही आपका कल्याण शीघ्र ही होगा.

Ankush Sharma
Aapka amulya samay dekar jankari dene ke liye bahut -bahut aabhar

B.k. Chatter
Wah kya khub ati sunder hamesha swath rahne ka ati uttam upay

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! आप द्वारा प्रेषित मुक्तियाँ (पुस्तक) मुझे प्राप्त हो गयी है ! विभिन्न युक्तियों तथा उदाहरणों के माध्यम से आत्म तत्त्व को उपदेशित करने वाली यह पुस्तक स्वरूपस्थिति हेतु साधक के लिये पाथेय है..!
आप की इस अकारण करुणा का पात्र हो कर मैं आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञतापूर्वक अहोभाव से भर गया हूँ ।
आपके लिये बस यही शुभकामना है कि आप इस देहपर्यन्त नरनारायण की सेवा हेतु पूर्ण समर्थ रहें तथा देहोपरान्त अनन्त काल के लिये स्वस्वरूपस्थ हों ...नतशीश नमन्.

Kamal Singh Shekhawat
Thanks sir ji bhagwan aspko lambi umar de

Navneet Jagatramka
Nice job, great to see a man like u working for social cause

Sudhir Rathi
आपके इस सेवाभाव को नमन

Visu Parmar
पहले तो आपको बहुत बहुत धन्यवाद सर जी
और आप जो ये कार्य कर रहे है वो बहुत ही सराहनीय है

Meenu Jain
Sir jai jinendra
Aapka mere or meri family pe anant upkar hai,
Kyuki maine jeene ki aas hi chhod di thi
Aapke disha nirdesh ne jeevan badal diya

Ramesh Kumar
बहुत अच्छा कार्य कर रहे है आप

Pushpa Maggu
U are doing great job for awareness of people may god bless u sir

Suresh Goswami Anupam
अतिसुन्दर मानवतावादी अनुकरणीय मिशन।बहुत बहुत साधुवाद।

Anshul Vashishtha
Thank you sir ji.... Hats off to ur sense of charity

Rohit Singh
Sar ap mahan h ap logo ka dukh dur kar the h bhagwan apko sada khus rakhe m dil se dua de RHA hu Sar apko

Vineet Krgoel
Dr Saab Namaskar ..sir your posts are really helpful towards humankind. Thanks a lot sir

Amarsingh Rajpurohit
Sir aapka Yeh nek kary desh k liye bahut kam ayega

Seema Seema
Bahut bahut dhanyavad .ap ne bahut achi salah de

Ashok Kumar Gangwal
Dr. Sab
बहुत बहुत धन्यवाद इससे बहुत लोगों को फायदा होगा

Tushar Dutt
सर आप नि:स्वार्थ एक बहुत अच्छा काम करते है वो भी बिना किसी फीस के

Sushil Dubey
आप की पोस्ट पढ़ कर प्रसन्नता मिलती है। साधुवाद ।

Arun Pathak

Sir koti - kot Parnam

Mayank Jain
Sir apko koti koti naman

Manorama Rani
I am very thankful for your help and hope it will help my daughter. Thanks once again and hope u will show your guidance to the needy

Amar Nayak
अतिसुन्दर। अद्भूत

Devendra Nath
Heartiest thank from deep of soul for posting valuable informations . Salute .....Salute.... Dr

Anil Mathur
Great thought sir ji..........We will try to give our best for this thing....Thanks..........

Anil Mathur
Amazing effort by you Dr. sahab ji...Thanku so much

Rohit Singh
Dr Sar namste Sar apnea Jo dwai btai thi colistrol kam Karen keep liye muje bhut fayda ho RHA h

Kailash Bohra
शानदार साधुवाद

Anil Mathur
शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार

Ram Kumar Ballan
डॉक्टर साहब नमस्कार
बहुत ही सुन्दर कार्य
परमपिता परमात्मा आपको दीर्घायु करे

Mayank Jain
जय जिनेन्द्र
For supporting nd guiding me
I m grateful to u sir

Anshul Vashishtha
Dr satyanarayan thanx for sharing such a valuable information
After reading ur articles I am profoundly impressed

Anshul Vashishtha
U r doing an amazing job si

Gulshan Jain
डॉक्टर साहब, आप बहुत नेक कम कर रहे है। बधाई। कृपा करके अपनी उपयोगी किताबे Gulshan.jain@gmail.com पर भेज दे। धन्यवाद।

Rana Thakur
sir aapki is post ki hum bhut absykta thi bina mange hi hi moti mile aapka hardik dhanyabaad

Ranjeet Singh Yadav
आज के वक्त में यदि कोई इतनी लाभकारी जानकारी
समाज की भलाई के लिये समय निकाल कर
निस्वार्थ बाँटता है,
यह सोच काबिले तारीफ है,
इतनी सुंदर सोच को हम दिल से सम्मान सहित सलाम करते हैं।

Vikas Shivhare
Sar mene aapki side par jaakar aapko msg karna chaha lekin nahi ho raha.
sar me ye kahna chahta hoo ki aap bahut hi shandar docter hai au minded bhi.
aap free me logo ko rog ki teatment batate hai aur bade pyar se,namrta se baat bhi karte hai
aap best ho sar.
me apne mobile ka net ka recharg kewal aapke teatmet ko padne ke liye.hi karta hoo.
sar me iss samay bahut pareshan hoo.
Lekin me aapase milne indor jaroor aaonge kewal aapse milne aur aapko paas se dekhne ke liye aap bes ho sar Charan sparsh sar

Yasmeen Budhwani
डॉक्टर सांब आप जो ये सेवा कर रहे है बहोत बडी मिसाल है
बहोत बडी सेवा कर रहे है
आपके लीये जोबी दुवा माँगे कम ही है
भगवान आपको ख़ुश ओर सुखी रखे,
ये मेरी प्रार्थना है भगवान से.

Harish Chandra Joshi
Thank you for this useful information.
It is really positive way of thinking and good cause for the humanity.
hank you onc agai

Subodh Kumar Mishra

डॉ साहब प्रणाम
मै आप का बहुत आभार मानता हूँ
जिस तरह से आप निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे है
वैसा प्रमाण मिलना कठिन है।

Rana Thakur

□ti utaam yogdaan he sir aapka samaj ke prati.

Varun Mishra

हे महामानव, आपका मार्गदर्शन शारीरिक व अध्यात्मिक रुप से सबलता प्रदान करती है।

Durga Joshi

Dr. Shab ko t□anks kahuga or sa□□i dosto □□ y□ □□i batauga ki mai □□i dr. shab se Skin ka tre□tment le raha hu or mujhe 80% thik ho gaya h□□.
□ap sa□□i pathako ko batana chahuga ki 3 year'□ □□ maine English medicine liya tha, magar bimar□ kam ke jagah badh raha tha.

Kavi Anand Jain Akela

आपका परामर्श मानव मूल्यों की धरोहर है.

Meenu Jain

Jab kisi ko aapki dawa batati hu n,
usko aaram mil jata h
to bhut achha lagta h

Varun Mishra

आपका हर दवाई और विचार मानवीय जीवन के लिए अमूल्य है। इसे आत्मसात कर मानव का शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक रुप से स्वस्थ व सबल जीवन जी सकता है।
हे महामानव ! आपको शत शत नमन व वंदन।

DrKishan Swaroop Sharma

एक अति सुंदर, कामयाब तथा जीवनोपयोगी पोस्ट के लिये आपको हमारी ओर से कौटी-कौटी धन्यवाद- जय श्री राधै. ..राधै जी की

Neeku Gupta

Aap se Accha Paropkari Insan is Puri Darti par no Milega Sir
Ni SWarth Sava Bhav Sir Aap Bhagwan h Ap Sir Pujniy hai.

Tikam Jain

Jai jinendra sa prnaam sa.
Aapki hr post sadhak ke liye praan vaayu ka kaam krti he.

Aatm pipasu ke liye to amrit hi he.
Chintan Krte Krte Rom Rom Pulkit Ho Jata He Aur Avrnniy Anubhav Hota He.

Anil Garg
पता नहीं कितने लोगों के जीवन में स्वास्थ्य का उजियारा किया होगा आपने डाक्टर साहब और वो भी निस्वार्थ।

Manju Singh
Good Morning Sir. I have reading all your health posts which I have found extremely helpful.
You are doing a very noble service.
Kindly give some advice and treatment of Thyroid .
Can it be cured permanently through homoeopathic treatment and medication.

Anil Garg
सौभाग्यशाली हैं वो जिनके दिल में दूसरों के लिए दर्द है।
आपको हृदय से प्रणाम डाक्टर साहब।

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मै ठीक हूँ. आपके द्वारा बताई दवाओ से अब मै दूसरो को भी लाभान्वित करा रहा हूँ.

Aadityaa Sharma
आपको प्रणाम।
समाज के लिए आपके विचार, अपने अनुभव, समाधान, ललक
आपकी कितनी भी सराहना करे तो भी कम है।
कहने के शब्द नही मिल रहे।
मै अपनी भावना व्यक्त नही कर पा रहा हूँ।
कोटि कोटि नमन।

Neeku Gupta
Sir ji Ap to Bagwan h
Sir ji Ap Ro New Acchi Daba Aur Gyan Ki Jankari Post Kar Rahe h.

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब बहुत बहुत आभार
मै आपके ही सहारे हूँ
आपके ऊपर बहुत विश्वास है ।

Deepak Dewnani
डॉ. साहब ,सादर नमस्कार,

मैं नियमित रूप से आपकी सभी पोस्ट को पढ़ता हूँ।
इनसे काफी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं।
आपके द्वारा किया गया यह कार्य प्रशंसनीय है
एवं लोक कल्याण हेतु सराहनीय है।

Nishit Sharma
बहुत ही अच्छी जानकारी दी गई है
डाक्टर साहब बहुत आभार व्यक्त करते हैं
आगे भी इस तरह हमारा जीवन में मार्ग सुझाये.

Surender Kaushik
Nice Dr sahib. □reat service to mankind.

Chandrakant Singh
Very very useful lines.
thank you so much.

Ramkumar Sharma
Sir ko naman
aap bahut hi punnaya ka Karya kar ra□e hai

Manju Singh
Good Evening Sir.
Your prescribed medicines are very effective.
I am really thankful to you.
You are so genuine.

Shivam Saxena
Sir mai swath raho swath karo koi bhi bimari ho
Uski dava puri tarahe se fayda kar rahi hai
Thanks sir

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मेरा शुगर लेवल बिना दवा के ठीक रहता है.
आपके द्वारा बताये गये इलाज को मैने अपने घर परिवार और गाँव मे बहुत लोगो को दिया है.
सभी को बहुत जल्दी आराम मिलता है.
आपके द्वारा बताया गया बुखार का इलाज बहुत ही प्रभावशाली है.
जिसको भी दिया है शत-प्रतिशत सकारात्मक परिणाम मिले हैं.

Narayan Lal Choudhary
Aapka every treatment 100% useful rhata hai.

Aap sir world ke best doctor ho.

Aapke btayi gyi medicine se mere ko aur mere dost ko bhoot benifit hua hai. Ek request hai maine upper likha hai body vibration aur stage phobia ke baare mai advice digeye plzz.

Rana Thakur
Dhanyawad sir
Aaj hi le lunga mene aapki bataya anusaar kai treatment liye he or
Dusro ko bi bataya he
Jinse bhut hi fayda ho raha he.
Logo ki duaye aapko mil rahi he sir.

Kailash Chandra Khandelwal
उत्तम स्वास्थ्य हेतु अत्यन्त उपयोगी,हितकारी,जानकारियों के लिए अनंत आत्मीय साधुवाद। बधाई।

Harry Suyal
muktiya — 5 star
This is excellent to help us every time
this is excellent to help us every time

Rana Thakur
आपका बहुत बहुत आभार जो इन्गलिश दवाओ से होने बाली परेशानी ओर लुटने से बचने मै सहायता की हम आपके इस प्रयास को ओरो को भी बताता हूं जिससे गरीब जन मानस फायदा ले सके ओर सुख से रहे. आपका कोटि कोटि आभार.

Atul Singh
muktiya — 5 star
जीवन में स्वस्थ्य शरीर के लिये अति उपयुक्त पेज है,
पाये निरोग व साफ सुथरी जिन्दगी !

Kadar Khan
muktiya — 5 star
Salute dr swatantra jain...
Sacchi manav sewa koi aap se seekhe

Girish Vyas
reviewed muktiya — 5 star
Aapke jese sahi doctor sahab nahi dekha .
Great work.
Aapke pas har bimari ka ilaj he

Hansa Rohit
muktiya — 5 star

Bhagvan ne aapko bahot achhi socha di he.
Aur aajke dorme logo ko
Aapke jese ki sahi me jarurat he sir.
Bhagvan aapko bahot sakti de
Aapka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge......
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best.

Vipin Garg
muktiya — 5 star
बहुत अच्छा कार्य है
अगर जनता का इस पर विश्वास बनाए रखे
तब जिन्दगी मे किसी को एलोपेथिक दवाईयां खाने के कारण अलसर का भी सामना नही करना पड़ेगा

Jitendra Bhadauriya
Apka koi jod nahi hai sir
Aap logo ke liye od ho.
Jo itna app sochte ho.
Apki sari poste vardaan hai
Thanks

Chetna Kanchan Bhagat
आप दोनों ही मेरे लिए प्रेरणा रूप हो
आपके प्रेम, लोक कल्याण की भावना व सामाजिक उत्तर दायित्व की अमिट छाप मेरे मन हृदय में सदा से है।

Kadar Khan
Muktiya — *5 star*
Salute Dr Swatantra Jain...
Sacchi Manav sewa koi aap se seekhe.

Jeetendra Singh
Muktiya — *5 star*
Really very helpful humanity...
Dr swt....is goodman

Arvind Singh
Muktiya — *5 star*
He is great man who serving humanity unconditionally.

Jagannath Tanty

Aap ki saari baatein mere lie Amrit baan hai aor yaha bahot achhi baat hai ki main bhi kisi ke kaam aunga Dhanyabaad sir, my Gmail is

Deepak Rajput
Rajiv Dixit ji ke bad drswatantra jain ji ko maine dekha h jo is desh ke liye dil se kaam krte h warna sab lootne ka hi sochte h.

Arvind Singh
He is great man who serving humanity unconditionally

Sneh Jain
Aapki posts bindas hoti hai aur bilkul real.sach
bahut dukh hota hai
chand rupees ke liye marijo se khilwad karte hai doctors

Rana Thakur
धन्यवाद सर, कल दवाई लाता हूं
सर आपके सहयोग से हम अब काफी टाईम से किसी के द्वारा नही लुटे है
नही तो हमारी तनख्वाह का ज्यादा भाग डाक्टर साहब की फीस मे खर्च हो जाता था.

Lalit Sharma
Swasthya aur Sresth-jeevan kaise haasil ho....is disha me aapka marg-darshan bahot anmol h....
kripaya apna aashirwaad baye rakhiyega....
dhanyawaaaad

Pawan Sharma
आपकी सेवा को नमन है डॉक्टर साहब

Rohit Singh
logo ke dukh ka niwaran karne wale dr sar m apko parnam karta hu

Piyush Jain
So Graceful. God Bless u.

Jitendra Jain Bhavya Atmn
Dr Swatantra jain ji kya Face pr Saralta h,
सबका दुख दूर करने वाले डॉक्टर, आपको सादर जयजिनेन्द्र

Devendra Pandey
Apke bare m bhut suna h
Garv hota h Hume apke sath jud k
thank you sir

Ashok Patil
Very good.
Feeling pleasure n proud of you after reading your post.
I read you for the first time.

Pc Bargot
सर में दो साल से आयुर्वेदि और एलोपेथी दवाई खाई और फिर बाद में होम्योपैथी लेकिन किसी भी दवाई से लाभ नही हुआ सिर्फ आपके द्वारा बताई गई दवाई से लाभ हुआ

Prakash Maan
You are really so great
Perhaps God have chosen you sir ji carry on please.

Tripurari Sharma
आपकी सेवा व सेवा भावना की जितनी तारीफ की जावे वो कम है

OM Singh
A Great person on a great mission.
He always helps people

Pawan Sharma
नमनः है आपकी सेवा को डॉक्टर साहब

Jeenu Bhansali Jain
Bahut hi badiya...
Anmol Jaankaari share karne ke liye.
aapko tahedil se Dhanyawaad aur naman karta hu,

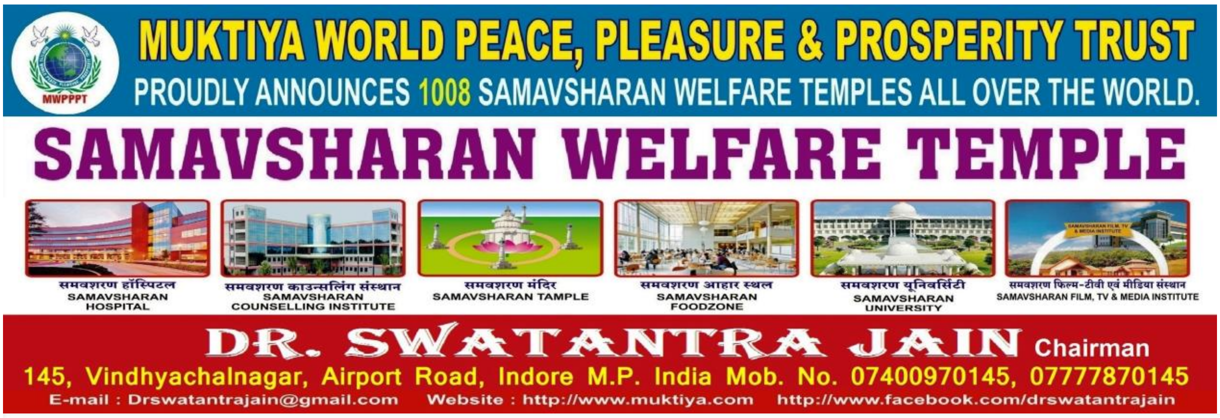

-: डॉ. स्वतंत्र जैन एक परिचय :-

डॉ. स्वतंत्र जैन सा. एक प्रख्यात निःस्वार्थ डॉक्टर, लोक कल्याणकारी और मानवाधिकार के क्षेत्र के मनीषी, जनहित, प्रेरणादायी और आध्यात्मिक लेखक हैं.

देश और विदेश के लाखों लोगो तक डॉ. सा. के मुक्तियाँ ट्रस्ट द्वारा निशुल्क पहुंचाया जा रहा □□□□□□ रोगी के परिवार □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□.

आपकी बताई नेचरल होम्योपैथी की दवाई रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर लोगो को स्वस्थ बनाती है और रोग से पूर्ण लाभ देती है.

आज तक लाखों लोगों ने उनके □□ □□□□□□ को लिया है □□ □□ □□□□ □□□□ हुआ □□.

साथ ही डॉ. सा. की भावना है कि उनकी इस नेचरल होम्योपैथी की पद्धति का विदेश में भी प्रचार-प्रसार कर सम्पूर्ण विश्व के लोगो को इसका लाभ पहुंचाना चाहते हैं.

साथ ही डॉ. सा. के मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख सम्रद्धि ट्रस्ट द्वारा हर देश में समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स की स्थापना का अति विशाल कार्य भी शुरू किया जाना है.

ये सभी एक हजार आठ समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स दीन-दुखी, बेबस, लाचार तथा बीमार व्यक्ति को भोजन, औषधि, शिक्षा तथा सुरक्षा देंगे तथा फिर उनको सर्वांग सुखी कर सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी चैतन्य भगवान के ज्ञान का दिव्य-प्रकाश प्रदान कर पामर से परमात्मा बनने की प्रेरणा देते रहेंगे.

इन सभी समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स में सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण लिए चार प्रकार के दान या सेवा की व्यवस्था रहेगी –

a. औषधि दान या सेवा
b. शास्त्र दान या ज्ञान सेवा
c. अभय दान या सुरक्षा प्रदान करना
d. आहार दान या पौष्टिक भोजन प्रदान करना

पूरे विश्व में ऐसे 1008 समवशरण सेवा मंदिर बनाना है.

आप अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के इन्दौर शहर के अध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश राज्य के उपाध्यक्ष भी हैं.

आप मानवाधिकार के क्षेत्र में अतुलनीय जनहितकारी कार्य कर रहे हैं.

प्राणी मात्र के चैतन्य-सम्राट की बात करने वाले आपके आध्यात्मिक लेख भी आपकी खुद की आत्मानुभूति, आत्मज्ञान, आत्मवैभव,
निजी अनुभव और नय, न्याय एवं वैज्ञानिक प्रमाणों के आधारों पर ही लिखे गये होते हैं.

अतः आप चाहे तो उनकी लिखी सभी आध्यात्मिक पुस्तको को भी उनकी वेब साईट से डाउन लोड कर सकते हैं.

डॉ. सा. का जन्म एक जनवरी 1949 को भोपाल में हुआ था और आपने इंजीनियरिंग की डिग्री मौलाना आजाद कालेज आफ टेक्नोलाजी, भोपाल से प्राप्त की।

फिर आपने म.प्र. विधुत मंडल में विभिन्न पदों पर रहते हुए अत्यंत कुशलता एवं कर्मठता के साथ अपना कार्य निष्पादित किया एवं अधीक्षण यंत्री पद से समय पूर्व सेवानिवृत्ति ले ली।

आपने डॉक्टर आफ मेडीसिन (वैकल्पिक चिकित्सा) की उपाधि भी प्राप्त की। आपके पास आने वाले सभी पीड़ित और परेशान लोगों की दुख, बीमारी और समस्याओं का उपचार, परामर्श, सलाह एवं इलाज आप निस्वार्थ भाव से करते हैं।

आपने विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं सचिव पद पर रहते हुए बहुत ही निपुणता के साथ उन संस्थाओं के कार्य को आगे बढ़ाया है।

आपके लेख सन्मति संदेश दिल्ली एवं अन्य पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में छपते रहे हैं।

आपके द्वारा लिखी गई पुस्तके निम्नानुसार हैं -

1. मुक्तियाँ
2. मुक्तिशिखर
3. MUKTIYA THE ULTIMATE FREEDOM (अंग्रेजी)
4. MUKTIYA RAYS (अंग्रेजी)
5. छहढाला
6. मुक्ति-धारा
7. मुक्ति किरण
8. मुक्ति-पथ
9. मुक्ति-कुंज
10. मुक्ति महल
11. मुक्ति दीप
12. मुक्ति मार्ग
13. मुक्ति सुख
14. मुक्ति तरंग
15. मुक्ति दर्पण

आपकी वेबसाइट www.muktiya.com पर आपके सभी लेख और पुस्तके उपलब्ध हैं।

आपकी शैली अत्यंत सरल, सुबोध, शास्त्रोक्त, वैज्ञानिक एवं तर्क संगत है।

आत्मा जैसे गंभीर एवं दुरूह विषय को भी आप अपने तर्क एवं उदाहरण द्वारा इतने सहज रूप में समझाते हैं कि आत्मा की सत्ता को ही नकारने वाला श्रोता भी उस पर विचार करने को मजबूर हो उठता है।

आपकी स्पष्ट उदघोषणा है कि जिस तरह हर नागरिक को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनने की स्वाधीनता है,

उसी तरह आत्मा के क्षेत्र में भी प्रजातंत्र की ही प्रतिष्ठा है। यहाँ पर भी प्रत्येक प्राणी अपनी आत्मा को गृहण कर अपना कल्याण कर परमात्मा बन सकता है।

वर्तमान में आपके द्वारा निम्न कार्य और केंद्र संचालित किये जा रहे हैं -

1. □□□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ के अध्यक्ष के रूप में आपके □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ केंद्र और राज्य सरकारों के समक्ष रख कर उन्हें □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□

2. लोक हित, प्राणिमात्र के कल्याण के लिये आपके प्रवचन छः माह तक भास्कर टी.वी. पर आते रहे हैं।

3. फेसबुक और □□□□□□□□ समाधान ग्रुप पर भी आपके लेख और बीमारियों के उपचार से सम्बंधित लेख आते रहते हैं.

4. देश-विदेश के हजारो लोग उनकी बीमारियों और परेशानियों के निवारण के लिए आपसे सम्पर्क करते रहते हैं.

आपके द्वारा संचालित निशुल्क संस्थायें और कार्य इस तरह हैं -

1. मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख, समृद्धि ट्रस्ट –

संसार में हर ओर आज लड़ाई, झगड़ा, मार-पीट, हिंसा आतंकवाद आदि दिखते हैं, उससे मुक्ति पाने की दिशा में प्रत्येक मनुष्य अगर अपने सर्वजनहितकारी स्वरूप को स्वीकार कर हरेक दीन-हीन, दुखी, बीमार, निम्न जाति एवं वर्ण के मनुष्यों को अपने अंतरमन से मुक्त-हस्त से तन, मन एवं धन से मदद करे तो विश्व शांति की कल्पना की कल्पना साकर हो उठेगी; सुख और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित होगा। यह कल्पना साकार करने का प्रयत्न करना ही आपका उद्देश्य है।

2. मुक्तियाँ नेचुरल होम्योपथिक हॉस्पिटल –

किसी भी तरह की तकलीफ, परेशानी है, बीमारी अगर आपको है, तो उसकी पीड़ा से आपको मुक्त करने और आपके शरीर की समस्त क्रियाओं को अत्यंत सुचारू रूप से कार्य करने योग्य बनाने और आपकी सभी तरह की शारीरिक पीड़ा से आप मुक्ति पा सकें, यही आपका प्रयत्न है और उद्देश्य है।

3. आप अपने पास आने वाले हर बीमार को दवाई के अतिरिक्त यह सलाह अवश्य देते हैं कि वे रात्रि को खाना और जमीकंद खाना बंद करें.

4. सिर्फ सूर्य तप्त शाकाहारी सादा भोजन ही लें.

5. अपने आसपास की झोपड़पट्टी में रहने वाले किसी गरीब व्यक्ति की हर हफ्ते मदद करें.

6. अध्यात्मिक कैप्सूल के रूप में आपकी पुस्तक मुक्तियाँ की एक-एक मुक्ति तीन माह तक रोज पढ़ें. इससे उनकी नेगेटिव एनर्जी कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आपके द्वारा सभी को खुद को स्वस्थ रखने और अन्य दूसरे हजारो-लाखों लोगो को भी स्वस्थ करने की प्रेरणा दी जा रही है.

फेसबुक के कई दोस्तों ने बताया है कि उन्होंने अपने गाँव या शहर में डॉ. सा. द्वारा बताई चिकित्सा पद्धति से मरीजों को हर तरह से निशुल्क सलाह देना और उनका उपचार करना भी शुरू कर दिया है. इस तरह इन सेवाभावी लोगो ने न केवल अपने परिवार को स्वस्थ रखा, अपितु अन्य लोगो को भी स्वस्थ बनाये रखने को कोशिश की. साथ ही गरीबों का निशुल्क उपचार भी शुरू कर दिया है और लोगों को इससे बहुत लाभ भी हुआ है.

इस तरह सभी लोग स्वस्थ रहे और अपने आसपास के लोगो को भी स्वस्थ रहने में मदद करे.

तथा विश्व-बंधुत्व की ज्योत को जलाये रखने में हमे सहयोग करें.

यदि आप चाहे तो डॉ. सा. के हजारों आध्यात्मिक लेखों को पढ़ने के लिए उनकी लिखी मुक्तियाँ, मुक्ति शिखर, मुक्ति धारा, मुक्ति पथ और मुक्ति कुञ्ज आदि पंद्रह आध्यात्मिक पुस्तको को ▯▯▯▯▯▯▯.▯▯▯ से आप निशुल्क डाउन लोड कर सकते हैं –

इन को रोज पढने से आपकी नेगेटिव एनर्जी निश्चित ही कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आप सभी को यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के प्रवचनों और साक्षात्कारों की 15 डीवीडी के सेट सभी जिज्ञासुओं को भेजे जा रहे हैं.

इन सभी 15 डीवीडी के सेट को आपके बताये पते पर कोरियर द्वारा निशुल्क प्राप्त करने के लिए कृपया आप अपना पता और मोबाइल नं. डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के मेसेज बाक्स में भेजे.

डॉ. सा. के पचासों विडियो प्रवचन, इंटरव्यूज को यू-ट्यूब पर भी डाल दिया गया है जिनको देखने का लिंक इस तरह से है –

https://www.youtube.com/channel/UCuVslg6F2zYNLxUNbBqalkg

डॉ. सा. के ▯सुख की ओर▯ के पचासों प्रवचनों को ▯▯-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ –

https://we.tl/RoT5BnIbiy

डॉ. सा. के ▯WAY TO HAPPINES▯ के इंटरव्यूज को ▯▯-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ –

https://we.tl/1Il2BRAp94

भक्त से भगवान बनें
सूक्तियाँ
डॉ. स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com
अगर आप नीरोगी काया, स्वस्थ शरीर, सुंदर छवि चाहते हैं
तो ब्यूटी पॉर्लर, हेल्थ क्लब जाना, घूमना, कसरत करना आदि क्रियाओं में घंटो समय बिताना
और हजारो रूपये खर्च करने के बदले अगर आप उससे आधे समय भी दीन–हीन, दुखी,
बेबस, लाचार, बीमार मनुष्यों की सेवा करोगे तो इससे आपकी अन्तर्चेतना शक्ति जागृत
होगी जिससे न सिर्फ आपका वर्तमान शरीर स्वस्थ एवं सुन्दर होगा आपितु आपके आगे
आने वाले हजारों भवों में भी आप स्वस्थ, सुंदर एवं समृद्ध रहेंगे एवं शीघ्र ही पामर से परमात्मा बन जावेंगे।

भक्त से भगवान बनें
सूक्तियाँ
डॉ. स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com
प्रजातंत्र में जिस तरह हर नागरिक को राष्ट्रपति
प्रधानमंत्री बनने की संवैधानिक योग्यता है,
उसी तरह प्राकृतिक संविधान से प्रत्येक मानव अपनी आत्मा को ग्रहण कर स्वयं
पामर से परमात्मा बन सकता है
खुद से खुदा बन सकता है
भक्त से भगवान बन सकता है

भक्त से भगवान बनें
सूक्तियाँ
डॉ. स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com
सिद्ध भगवन्त बाहें फैलाये तुझे पुकारे रे
घर आजा परदेशी तेरा मोक्ष बुलाये रे।

भक्त से भगवान बनें
सूक्तियाँ
Website : www.muktiya.com
यह संसार एक सपना है
मोक्ष महल ही अपना है

भक्त से भगवान बनें

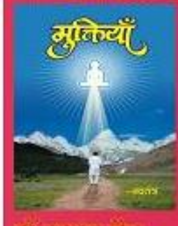

धर्म का कार्य सदाकाल सुख देना है
अपनी आत्मा को पहिचानकार मानकर एवं गृहणकर
आप भी अन्य परमात्माओं के समान अपने सम्पूर्ण
सुख को प्राप्तकर अमर हो कर भगवान बन सकते हो।

Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें

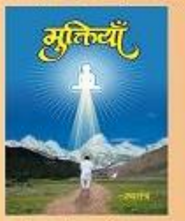

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

अगर आपको अपनी दीन-हीन अवस्था, दुख, बीमारी, गरीबी, लाचारी, बेबसी परेशान कर रही हैं तो अपने भगवान आत्मा को मानने से आप इन तकलीफो से शीघ्र ही मुक्त होकर सदाकाल रहने वाले सुख को पाकर अमर हो जावेंगे।

भक्त से भगवान बनें

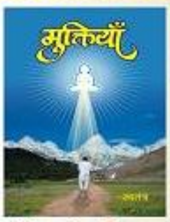

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

इस संसार में एक परमाणु भी नष्ट नही होता हैं। हर बार वह दूसरे परमाणु से क्रिया कर नया यौगिक (शरीर) बनाता हैं और पुराना यौगिक नष्ट हो जाता है। आप भी एक शरीर (यौगिक) से दूसरे शरीर में भ्रमण करते रहते हो। नये शरीर के धारण करते ही पुराना शरीर नष्ट हो जाता है। इस तरह जब एक सुक्ष्म परमाणु भी इस जन्म-मरण की क्रिया में नष्ट नहीं होता है तो फिर यह मान लें कि आप भी सदाकाल अविनाशक ही हैं अमर ही हैं। पुनः जैसे परमाणु में अपार शक्ति भरी है वैसे ही आप में भी अनन्त शक्ति एवं गुण भरे हुए हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने से आप भी भक्त से भगवान बन जाओंगे।

भक्त से भगवान बनें

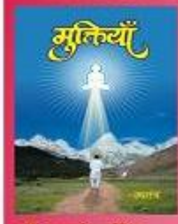

डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

आप अनन्त सुख, अनन्त शक्ति, अनन्त ज्ञान,
अनन्त शान्ति के भंडार हो
एवं वर्तमान में ही त्रिलोकीनाथ भगवान हो।

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
तुम स्वयं ही हो तीन लोक के नाथ
डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई
सब ही हैं परमात्मा भाई
डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
तुम स्वयं सिद्ध-बुद्ध-शुद्ध हो,
एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हो
डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
सभी मनुष्य समान रुप से भगवान हैं
चाहे राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष
बालक हो या जवान हो या वृद्ध, उच्च वर्ग हो या निम्न वर्ग
डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
विश्व बंधुत्व
इस संसार में प्रत्येक प्राणों नें चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक योनी में 'अनन्त बार
जन्म–मरण किया हैं। 'आपको दिखने वाला प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी जन्म में
'आपका ही पारिवारिक सदस्य, दोस्त 'आदि रहा हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि सभी
मानव कभी न कभी 'आपके ही माँ, बाप, भाई, बहिन, सम्बन्धी या दोस्त रहे होंगे।
'अत: 'अब प्रत्येक दीन–हीन, दुखी, बीमार, लाचार, बेबस भाई–बहिन के 'अांसू पोंछना
उनकी मदद करना ही विश्वबंधुत्व की भावना को साकार करना है 'और इस मार्ग पर चलकर
आप शीघ्र ही भक्त से भगवान बन जाओंगे ''
मुक्तियाँ
डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416